विक्रम संवत् 2082 ▪ चैत्र/वैशाख मास (02) ▪ 01 अप्रैल 2025 ▪ मूल्य : 23 रु.

आर.एन.आई. पंजीयन क्र.017261/69, डाक पंजीयन क्र. म.प्र./भोपाल/297/2024-26, पृष्ठ संख्या-44, प्रकाशन दिनांक प्रत्येक माह की 10 तारीख, पोस्टिंग प्रत्येक माह की 15 एवं 20 तारीख

चरैवेति

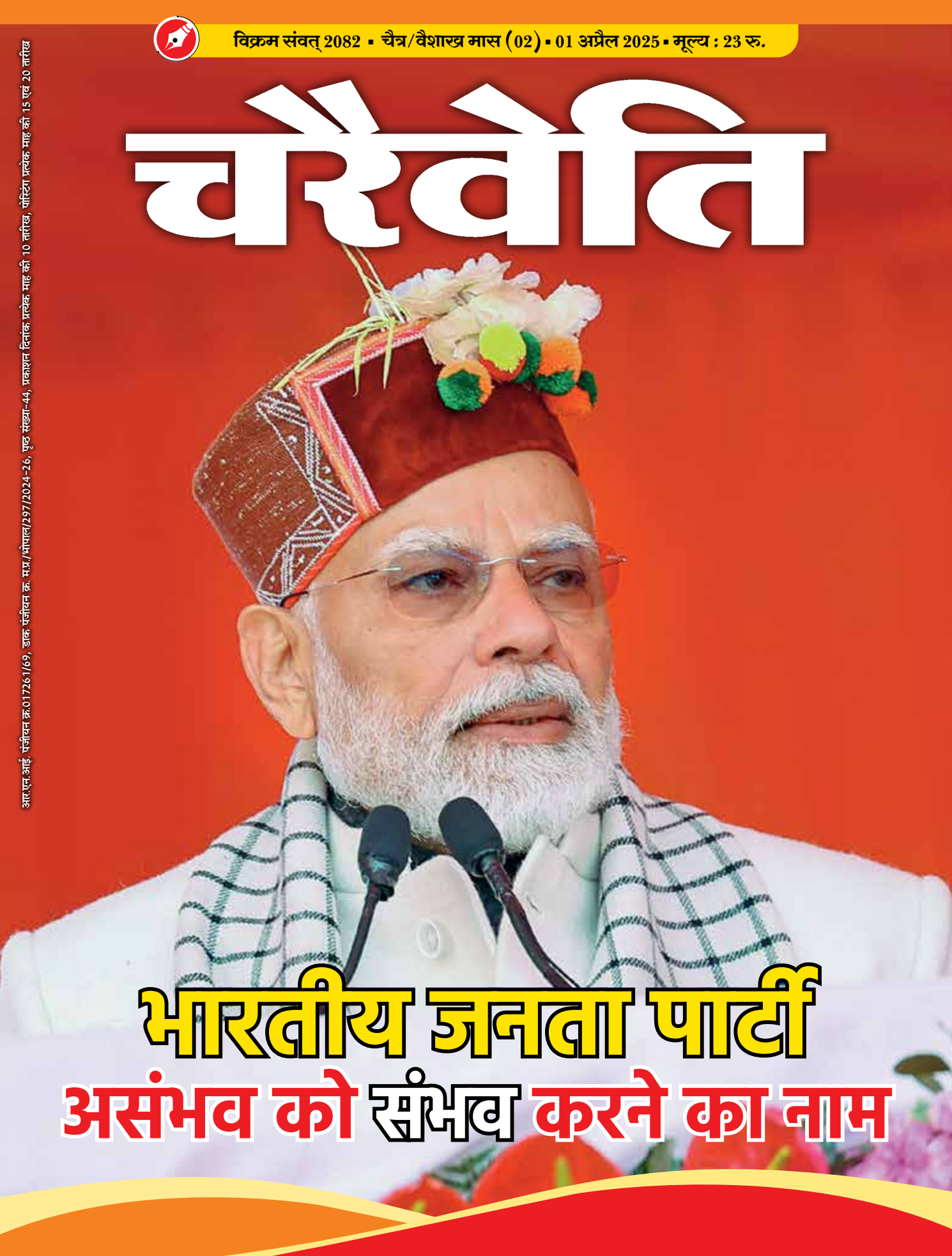

भारतीय जनता पार्टी

असंभव को संभव करने का नाम

▪ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी और न्यूजीलैंड के प्रधानमंत्री श्री क्रिस्टोफर लक्सन ने नई दिल्ली में गुरुद्वारा रकाब गंज साहिब के दर्शन किए।

▪ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने नागपुर में स्मृति मंदिर में आरएसएस के संस्थापक केशव बलिराम हेडगेवार जी को पुष्पांजलि अर्पित की।

▪ भाजपा अध्यक्ष श्री जगत प्रकाश नड्डा जी ने न्यूजीलैंड के प्रधानमंत्री क्रिस्टोफर लक्सन से मुलाकात की।

▪ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने मॉरीशस में पोर्ट लुइस में गंगा तालाब में गंगा जल अर्पित किया।

▪ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने नागपुर में दीक्षाभूमि का दौरा किया।

▪ केन्द्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह जी ने पूर्वोत्तर छात्र एवं युवा संसद कार्यक्रम को संबोधित किया।

▪ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने मुखवा में मां गंगा के शीतकालीन निवास स्थान पर पूजन व दर्शन किये।

▪ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने मॉरीशस में स्टेट हाउस स्थित आयुर्वेदिक उद्यान का दौरा किया।

अनुक्रमणिका

» **संपादकीय** • संजय गोविन्द खोचे 04

▪ भाजपा सेवा का माध्यम

» **कवर स्टोरी** 05

▪ भारतीय जनता पार्टी असंभव को संभव करने का नाम

▪ **कवर स्टोरी** 07

» भाजपा ने स्थापना की सार्थकता को सिद्ध किया

▪ **कविता : अटल बिहारी वाजपेयी** 08

» मनाली मत जइयो

▪ **भाजपा के स्थापना दिवस पर विशेष** 09

» भाजपा की पहचान : जनता की सेवा और राष्ट्र...

▪ **आरएसएस आधुनिक अक्षयवट** 11

» संघ की तपस्या विकसित भारत का अध्याय लिख रही...

▪ **मध्य प्रदेश बजट 2025-26** 14

» बजट सर्व-व्यापक, सर्व-स्पर्शी, सर्व-समावेशी - मुख्यमंत्री...

» सशक्त और सक्षम मध्य प्रदेश बनाने वाला बजट...

▪ **आईएम बीजेपी फ्यूचर फोर्स** 19

» प्रधानमंत्री जी विक्रमादित्य की तरह जनता की सेवा...

» हम बस एक राष्ट्र धर्म जानते हैं- हितानंद

▪ **अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस** 21

» बहनों के लिए हर संभव प्रयास - डॉ. मोहन यादव

» हर क्षेत्र में आगे बढ़ रही महिलाएं - विष्णुदत्त शर्मा

▪ **किसान आभार सम्मेलन** 24

» प्रदेश सरकार सदैव किसानों के साथ है - डॉ. मोहन यादव

▪ **बजट आवंटन-अन्नदाता की समृद्धि** 26

» किसानों की बेहतरी के लिए भाजपा सरकारें- विष्णुदत्त शर्मा

▪ **बिहार दिवस** 27

» जहाँ पूर्वांचल चल पड़ता है, वहां देश आगे बढ़ता है

» भोजपुरी समाज के लोगों के रग-रग में विश्वास...

▪ **नव संकल्प** 30

» नव वर्ष - नव संकल्प

▪ **मन की बात** 32

» अपनी जड़ों से जुड़े रहें

▪ **इतिहास के पन्नों से** 36

» ब्रिटिश शासन के खात्मे की शुरूआत हुई जलियाँवाला बाग...

▪ **जयंती** 37

» सामाजिक नवोत्थान के पुरोधा महात्मा ज्योतिबा फुले

» शिवाजी ने कहा मेरा नहीं धर्म का राज्याभिषेक है

» कट्टर देशभक्त - डॉ. भीमराव अम्बेडकर

▪ **विचार प्रवाह** 41

» समाज और विचारधारा

• मुख्य व्रत-त्यौहार

1. सौभाग्य सुंदरी, गणगौर तीज, अं. विनायकी चतुर्थी व्रत 5. दुर्गाष्टमी,महाष्टमी व्रत 6. श्रीराम नवमी व्रत 7. जवारे विर्सजन 8. कामदा एकादशी व्रत 9. मदन द्वादशी 10. प्रदोष व्रत 11. रेणुका चतुर्दशी 12. स्नानदान व्रत पूर्णिमा, भ. हनुमान प्राकट्योत्सव 15. आसों दोज 16. गणेश चतुर्थी व्रत 24. वरूथिनी एकादशी व्रत 25. प्रदोष व्रत 26. शिव चतुर्दशी व्रत 27. सतुवाई अमावस्या,स्नानदान श्राद्ध अमावस्या 29. चन्द्रदर्शन 30. अक्षय तृतीया

• मुख्य जयंती-दिवस

2. गुरू अंगद देव, गुरू हरगोविंद पु. ति. 6. संत सुंदरदास जयंती 10. डॉ. हैनीमेन जयंती 11. गुरू हरकिशन पुण्यतिथि 12. धरती पूजा 13. संत कंवरराम जन्मोत्सव, वीरेन्द्रपुरी महाराज जयंती 14. भुंजिया दिवस, अग्नि निरोधक दिवस 28. बाजीराव पेशवा पुण्यतिथि 30. ग्राम जयंती

वर्ष-57, अंक : 02, भोपाल, अप्रैल 2025

हमारे प्रेरणास्रोत

पं. दीनदयाल उपाध्याय

ध्येय बोध

हमें एक ऐसा भारत बनाना है जो हमारे पूर्वजों के भारत से भी अधिक गौरवशाली हो।

- पं. दीनदयाल उपाध्याय

• सचिव, मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक
संजय गोविंद खोचे*

• सहायक सम्पादक
पं. सलिल मालवीय

• व्यवस्थापक
योगेन्द्रनाथ बरतरिया
मोबा. नं. 09425303801

• पं. दीनदयाल विचार प्रकाशन म.प्र. के लिये मुद्रक एवं प्रकाशक संजय गोविंद खोचे द्वारा पं. दीनदयाल परिसर, ई-2, अरेरा कालोनी, भोपाल-462016 से प्रकाशित

एवं एम. पी. प्रिंटर्स, बी-220, फेस-II, गौतमबुद्ध नगर, नोएडा - 201 305 से मुद्रित.

• संपादकीय पता
पं. दीनदयाल परिसर,
ई-2, अरेरा कालोनी, भोपाल- 462016
e-mail:charevetibpl@gmail.com
web site:www.charaiveti.org

मूल्य- तेईस रुपये

*समाचार चयन के लिए पी.आर.बी.एक्ट के तहत जिम्मेदार

भाजपा सेवा का माध्यम

विकसित भारत@2047 के लक्ष्य को पाने के लिए रात-दिन एक करके, बिना रुके-बिना विश्राम के भारत माता के महान सपूतों, पूर्वजों के विकसित भारत के स्वप्न को साकार करने वाले राजनैतिक दल को विश्व के सबसे बड़े राजनैतिक दल का दर्जा उसकी विशेषताओं की पहचान है।

1951 से प्रारंभ यात्रा अपने लक्ष्यों के प्रति समर्पण भाव से चलते हुए, धैर्य के साथ, सिद्धांतों को सर्वोपरि रखते हुए, सनातन संस्कृति, लोकतंत्र, संविधान की भावना, मर्यादा, अंत्योदय, सबका साथ-सबका विकास-सबका विश्वास-सबका प्रयास, एक भारत-श्रेष्ठ भारत के भावनात्मक बंधन के साथ, नवाचारों को शामिल करके, कथनी- करनी के अंतरों को समाप्त करके, लोकतंत्र के अक्षय वट को परिवारवाद, तुष्टीकरण के घुनों से मुक्त करवाते हुए, विकसित भारत@2047 के लक्ष्य को पाने के लिए रात-दिन एक करके, बिना रुके-बिना विश्राम के भारत माता के महान सपूतों, पूर्वजों के विकसित भारत के स्वप्न को साकार करने वाले राजनैतिक दल को विश्व के सबसे बड़े राजनैतिक दल का दर्जा उसकी विशेषताओं की पहचान है।

जनमानस के लिए राजनीति और राजनैतिक दल, नेताओं, अधिकारियों और व्यापारियों के लुटेरे गठजोड़ से अधिक कुछ नहीं था। राजनीति व राजनैतिक दल कुछ विशिष्ट महानुभावों के लिए सत्ता व राजकोष को लूटने का लाइसेंस बन गया था। स्वार्थ सिद्धि के लिए जनता को भिड़ाओ और लूटो, संविधान देखने, दिखाने के लिए, जब चाहो-जितना चाहो उतना संविधान को तोड़ो, मरोड़ो। एक छत्र राज्य, जिसने मुंह खोला, वह आऊट, जन मानस की भावनाओं का जितना चाहो, उतना अनादर करो, रोकने-टोकने के प्रयास का परिणाम रहस्यमय मृत्यु या जेल यात्रा, दुहाई लोकतंत्र की और सत्ता का केंद्र परिवार, क्या-क्या भोगा है इस देश की भोली-भाली जनता ने। अत्याचारों का, अत्याचारी शासन का अंत होना तो तय था। जनता विकल्प की तलाश में थी। भरोसे की तलाश में थी। जनता दर्द सह-सह कर परेशान हो चुकी थी। अत्याचारी शासन की पराकाष्ठा तो तब हो गई, जब सत्ता बचाने के लिए परिवार ने देश पर आपातकाल थोप कर देश को जेल खाना बना दिया। लोकतंत्र का गला घोंटा, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता समाप्त कर दी गई। विपक्ष के नेताओं को खोज-खोज कर जेलों में ठूँस दिया गया। विपक्ष के बिना लोकतंत्र की कल्पना भी संभव नहीं है, पर भारत को विपक्ष विहीन बनाना भी इस स्वार्थ पूर्ण,सत्ता लोलुप राजनीति में हो चुका है। अत्याचारों की पराकाष्ठा के परिणाम स्वरुप ऊपजे आक्रोश का परिणाम 1977 में जनता ने विदाई दे दी। जनता पार्टी का गठन हुआ, अटल जी विदेश मंत्री बनाए गए, पर 1980 में जनता पार्टी के विघटन के बाद अटल जी, लालकृष्ण आडवाणी जी, मुरली मनोहर जोशी जी, राजमाता जी, कुशाभाऊ ठाकरे जी, भैरोंसिंह शेखावत जी, राम जेठमलानी जी जैसे नेताओं ने 6 अप्रैल 1980 को मुंबई अधिवेशन में झंडा फहराकर भाजपा के गठन की घोषणा की। भाजपा के संगठन के उद्देश्यों, नीतियों, निष्ठाओं से जनता को परिचय करवाया। संगठन की पहचान उसके नेताओं से होती है। जनता का भरोसा भाजपा के नेताओं पर बेदाग राजनीतिक जीवन, देश भक्ति व सेवा भाव के कारण पहले से ही था। जैसे ही जनता को भाजपा के रूप में विकल्प मिला, जिसकी तलाश जनता बेसब्री से कर रही थी, जनता ने अपना आशीर्वाद देकर अत्याचारी शासन का अंत कर दिया। कई राज्यों में बीजेपी सरकारें बनीं। लोकसभा, राज्यसभा, विधानसभा में भाजपा की भूमिका महत्वपूर्ण होती चली गई। नेतृत्व ने सत्ता के लिए सिद्धांतों से कभी समझौता नहीं किया। जहां सेवा का मौका मिला, समर्पण भाव से दायित्व को निभाया। और धीरे-धीरे भाजपा का प्रसार होने लगा, संगठन का विस्तार हुआ। परिवारवाद से मुक्त व संविधान के प्रति निष्ठा के कारण जनता ने अपना आर्शीवाद व प्यार दोनों हाथों से भाजपा को दिया। जिसके परिणाम स्वरुप 2014 के आम चुनाव में भाजपा स्पष्ट बहुमत प्राप्त करने में सफल हो गई। राज्यों से भी कांग्रेस की विदाई प्रारंभ हो गई। सत्ता को सेवा का माध्यम बनाने के कारण 2019 के आम चुनाव में भाजपा को और अधिक आशीर्वाद मतदाताओं का मिला। बढ़े हुए आशीर्वाद को बड़ी जिम्मेदारी मानकर फिर सेवा में जुट गई भाजपा। प्रयास परिणामों में तब्दील होने लगे। जनता का भरोसा पहले से मजबूत हुआ। विश्वास बढ़ा, साथ ही साथ जनता की भाजपा से अपेक्षाएं भी बढ़ीं। प्रधानमंत्री ने विश्व की तीसरी अर्थव्यवस्था बनाने, मजबूत भारत बनाने, आत्मनिर्भर भारत बनाने, समृद्ध-सुरक्षित भारत बनाने, खोए हुए गौरव को पुनः स्थापित करने, निर्णयों में मातृशक्ति की भागीदारी सुनिश्चित करने, एक देश- एक कर, 370 का खात्मा, तीन तलाक का खात्मा, सुरक्षित- समृद्ध भारत, 2047 विकसित भारत@2047 के लक्ष्य को रखकर समर्पण भाव से गंभीर प्रयास प्रारंभ कर दिया, जनता को प्रगति, उन्नत भविष्य, सुरक्षित, समृद्ध भारत, विश्व की तीसरी अर्थव्यवस्था, भ्रष्टाचार, परिवारवाद से मुक्त भारत, विकसित भारत@2047 नजर आने लगा। इसी भरोसे का चमत्कार था कि 2024 में भाजपा गठबंधन को जनता ने दोनों हाथों से अपना प्यार व आशीर्वाद दिया। भाजपा का गठन देश व देश की जनता के हितों की रक्षा के लिए हुआ है। भाजपा ने इसे करके दिखाया। एक भारत-श्रेष्ठ भारत को बल मिला। 45 वर्षों की अल्पावधि में भाजपा विश्व का सबसे बड़ा राजनैतिक दल बन गया। भाजपा ने अपनी स्थापना की सार्थकता को सिद्ध किया।

मध्य प्रदेश में भाजपा संगठन ने प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में 163 विधानसभा सीटें जीतकर नया इतिहास रचा। 29 में से 29 लोकसभा सीट जीत कर कांग्रेस का तंबू ही उखाड़ फेंका। प्रदेश संगठन ने बड़ी जिम्मेदारी मानकर संगठन का और विस्तार किया। सदस्यता अभियान को चलाकर नए कीर्तिमान स्थापित किये। महिलाओं की संगठन में भागीदारी बढ़ाई। महिला जिला अध्यक्ष संगठन में स्थापित हुई। प्रोफेशनल्स को संगठन से जोड़ा गया। मेहनत की पराकाष्ठा की गई। तभी बीजेपी मध्य प्रदेश के संगठन की देश में अलग पहचान है।

विकसित भारत@2047 में मध्य प्रदेश की भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए इन्वेस्टर मीट का आयोजन किया। ग्लोबल इन्वेस्टर मीट का मध्य प्रदेश को सुखद परिणाम मिला। शीघ्र ही धरातल पर परिणाम दिखाई देने लगेंगे। बेरोजगारी, पलायन पर लगाम लगेगी। राज्य की आर्थिक हालात उन्नत होंगे। 2025-26 का राज्य का बजट विकसित भारत@2047 को सामने रखकर बनाया गया। पिछले वर्ष से बजट की साइज में अप्रत्याशित वृद्धि हुई। प्रति व्यक्ति आय को बढ़ाने का प्रयास किया गया। सनातन संस्कृति की रक्षा के लिए राजकोष के दरवाजे खोले गए। किसानों को अधिकतम समर्थन मूल्य प्रदान किया गया। निश्चित ही सेवा का भाव भाजपा की स्थापना की सार्थकता को सिद्ध करता है। ▪

(संजय गोविन्द खोचे)
सम्पादक

भारतीय जनता पार्टी
असंभव को संभव करने का नाम

अटल जी ने कहा था- अंधेरा छटेगा, सूरज निकलेगा, कमल खिलेगा। आज भाजपा सारी चुनौतियों को ध्वस्त करके भारतीय राजनीति की धुरी बन चुकी है, केंद्र सहित डेढ़ दर्जन राज्यों में सरकार है...

...और सबसे पुरानी पार्टी का दावा करने वाले पारिवारिक गिरोह न केवल सत्ता को तरस रहे हैं बल्कि अपनी तथाकथित पारंपरिक सीटें भी गँवा बैठे हैं।

विष्णुदत्त शर्मा

- **भाजपा: लोकमंगल के संकल्प की एक अनुपम यात्रा**
- **45 साल-बेमिसाल**

स्वाधीनता के बाद 1951 में जब पं. श्यामा प्रसाद मुखर्जी, श्री बलराज मधोक और पं. दीनदयाल उपाध्याय ने जनसंघ बनाया था तब विरोधी उनकी हँसी उड़ाते थे कि ये क्या राजनीति करेंगे और जब 1980 में भाजपा की स्थापना हुई तो उनके ताने बढ़ते गये। उस दौर में अटल जी ने कहा था- अंधेरा छटेगा, सूरज निकलेगा, कमल खिलेगा। आज भाजपा सारी चुनौतियों को ध्वस्त करके भारतीय राजनीति की धुरी बन चुकी है, केंद्र सहित डेढ़ दर्जन राज्यों में सरकार है और सबसे पुरानी पार्टी का दावा करने वाले पारिवारिक गिरोह न केवल सत्ता को तरस रहे हैं बल्कि अपनी तथाकथित पारंपरिक सीटें भी गँवा बैठे हैं। अपनी 45 वीं वर्षगांठ मना रही भाजपा ने भारत की राजनीति में जो रास्ता चुना था, उस पर चलकर इसने सारी दुनिया को चकित किया है। पार्टी ने आज देश को भ्रष्टाचार, परिवारवाद, अपराधीकरण, जातिवाद, तुष्टिकरण, आतंकवाद जैसे घावों से मुक्ति दिलाई है। साथ ही उन सभी मुद्दों को हल करके राजनीति में नया अध्याय लिख चुकी है, जिनका पार्टी ने अपनी स्थापना के समय संकल्प लिया था। कश्मीर में धारा 370 की विदाई या श्रीराम जन्मभूमि मंदिर निर्माण से लेकर वक्फ बोर्ड कानून में बदलाव तक के सभी संकल्प

भाजपा ने पूरे किये हैं। अपनी कथनी और करनी से आज यह सर्वाधिक विश्वसनीय पार्टी बनी है तथा जिसको करोड़ों लोगों ने अपना कर विश्व का सर्वोच्च दल बनाया है।

आज की पीढ़ी को यह जानना चाहिए कि 1980 के दशक का कालखंड भारतीय राजनीति का टर्निंग प्वाइंट था, जब भारतीय जनता पार्टी की स्थापना हुई। देश के राष्ट्रवादी समूहों ने एक सपना देखा था, जिसमें भारतीय गौरव की पुर्नस्थापना, भारत के आध्यात्मिक उत्कर्ष, सामाजिक न्याय और राष्ट्रीय एकता के विचार-बीज थे। आज वे बीज फलदार वृक्ष हो

चुके हैं। 45 साल में वे सारे सपने साकार हो चुके हैं। राजनीतिक क्षेत्र में यह आश्चर्य का विषय हो गया है कि कैसे एक पार्टी 2 सीटों से अपनी यात्रा शुरू करते हुए सबसे बड़े लोकतंत्र की सबसे बड़ी पार्टी बनकर आज राजनीति के प्रतिमान बदल रही है। पार्टी विद डिफरेंस के नारे को मूर्त रूप देकर कार्यकर्ताओं ने सारी दुनिया को सियासत का अनूठा स्वरूप दिखाया है।

हालांकि भाजपा का गठन 6 अप्रैल, 1980 को हुआ, परन्तु इसका अतीत भारतीय जनसंघ से जुड़ा है। स्वतंत्रता प्राप्ति तथा देश विभाजन के बाद बढ़ते अल्पसंख्यक तुष्टिकरण, लाइसेंस-परमिट-कोटा राज, राष्ट्रीय असुरक्षा, राष्ट्रीय मसलों जैसे कश्मीर आदि पर घुटना टेक नीति, अंतर्राष्ट्रीय मामलों में भारतीय हितों की अनदेखी आदि अनेक मुद्दों के गर्भ से जनसंघ का जन्म हुआ था। आपातकाल के बाद भाजपा की स्थापना सुदृढ़, सशक्त, समृद्ध एवं स्वावलम्बी भारत के निर्माण हेतु की गई थी, जिसमें पार्टी ने एक ऐसे राष्ट्र की कल्पना की जो आधुनिक दृष्टिकोण से युक्त एक प्रगतिशील एवं प्रबुद्ध समाज का प्रतिनिधित्व करता हो तथा भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति के मूल्यों से प्रेरणा लेकर विश्व गुरू के रूप में विश्व पटल पर स्थापित हो। साथ ही संविधान सम्मत सभी नागरिकों को राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक न्याय, समान अवसर सुनिश्चित हो। पं. दीनदयाल उपाध्याय द्वारा प्रतिपादित एकात्म-मानवदर्शन को अपना वैचारिक दर्शन मानते हुए भाजपा ने अंत्योदय, सुशासन, सांस्कृतिक राष्ट्रवाद, विकास एवं सुरक्षा के संकल्प पर चलते हुए 45 साल की अनुपम यात्रा पूरी की है। इस यात्रा में दीनदयाल जी के अंत्योदय से लेकर मोदी जी के सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास और सबका प्रयास जैसा अद्वितीय संकल्प पूर्ण हुए हैं।

भाजपा के सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के अन्तर्गत गरीबी मिटाना केवल नारा नहीं, उसका संकल्प था। श्रीराम जन्मभूमि मंदिर निर्माण कोई भाषण नहीं, प्रतिबद्धता थी। कश्मीर में 370 की समाप्ति चुनावी जुमला नहीं, राष्ट्रीय एकात्मता का साक्षात संकल्प था। अन्त्योदय स्लोगन नहीं, यह गरीबों का जीवन स्तर उठाने का प्रण था, जिसे पार्टी का हर कार्यकर्ता 1980 से लेकर अब तक पूर्ण करने में सक्रिय हैं। अटल जी की सरकार द्वारा विपरीत परिस्थितियों में परमाणु परीक्षण हो, कारगिल विजय हो या नरेंद्र मोदी जी द्वारा कश्मीर में 370 की समाप्ति हो, श्रीराम मंदिर निर्माण हो या वक्फ बोर्ड कानून में बदलाव हो, ये भाजपा की राजनीति में वे मील के पत्थर हैं, जो संकल्प से सिद्धि का मंत्र बनकर पीढ़ियों को प्रेरित करते रहेंगे।

स्थापना दिवस के प्रसंग में भाजपा के उत्कर्ष में अमूल्य योगदान देने वाले नेतृत्व की चर्चा जरूरी है। अटल बिहारी वाजपेयी से लेकर नरेंद्र मोदी तक पार्टी नेताओं ने संकल्प और साहस का नया इतिहास रचा है। भारत को परमाणु शक्ति बनाने से लेकर चंद्रयान-मंगलयान की यात्रा तक की उपलब्धि चुनावी राजनीति से अलग एक अदम्य साहस और देशभक्त नेतृत्व का प्रमाण है। 2014 से लेकर 2025 तक गरीबों के मसीहा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में देश ने अपने सभी संकल्पों को एक-एक करके पूर्ण करते हुए भारत को सशक्त बनाया है। आज भारत के लगभग सभी तीर्थ केंद्र विकास का नया प्रतिमान गढ़ रहे हैं। निरंतर उपेक्षा का दंश झेल रहे हमारे प्राचीन आध्यात्मिक केंद्रों का गौरव भी पुर्नस्थापित हुआ है।

यही नहीं, भाजपा ने अपने वैचारिक आचरण से देश की राजनीतिक संस्कृति को भी बदला है। एक ओर जहां परिवारवादी, तुष्टिकरण और जातिवादी राजनीति का दौर समाप्त हो गया, वहीं अब धर्म-संस्कृति की बात करना सांप्रदायिक होना नहीं है। राष्ट्रवाद की चर्चा अब संकुचित मानसिकता का परिचायक नहीं है। सरकार की ओर से देवालयों का विकास करना, अब ध्रुवीकरण नहीं है। भारतीयता की बात करना और मातृभाषा में काम करना अब पिछड़ापन नहीं है। हिन्दुत्व का विचार अब सर्वग्राही बन गया है। अपनी प्रखर व प्रतिबद्ध कार्यशैली से भाजपा ने देश के राजनीतिक विमर्श को परिवर्तित करने में ऐतिहासिक सफलता पायी है। इस पड़ाव पर भाजपा अपनी पंचनिष्ठाओं की नींव पर न केवल गर्व से स्वयं खड़ी है बल्कि उसके सहयोगी दल भी उसके साथ कंधा मिलाकर खड़े हैं। अभी-अभी वक्फ बोर्ड कानून संशोधन मामले में सारी दुनिया ने देखा है।

राज्य भाजपा इकाई का अध्यक्ष होने के नाते अपने अनुभव से कह सकता हूं कि विजन, संगठन, नेतृत्व और कार्यकर्ता- इन चारों अंगों के कारण भाजपा कैडर आधारित पार्टी बनी है। अटल जी, लालकृष्ण आडवानी जी, नरेंद्र मोदी जी, अमित शाह जी और जय प्रकाश नड्डा तक पार्टी का नेतृत्व करने वाले अनेक लोग इसी कैडर की गंगोत्री से निकले हैं। आज नरेंद्र मोदी के चमत्कारिक नेतृत्व ने भाजपा के विजन और संगठन का अतुल्य विस्तार किया है तो पार्टी की विकास- यात्रा में गृह मंत्री अमित शाह का योगदान भी स्वर्ण अक्षरों में दर्ज हो चुका है। राष्ट्रीय अध्यक्ष के तौर पर उनके कुशल नेतृत्व में पार्टी ने असंभव को संभव किया है और आज पूर्वोत्तर भारत में भी भाजपा की सरकारें हैं, तो उसके पीछे अमित शाह जी का परिश्रम और संकल्प ही है। उनके नेतृत्व में पार्टी को विश्व का सबसे बड़ा दल बनने का गौरव भी मिला है।

इस प्रसंग में यह भी कहना चाहिए कि गृह मंत्री अमित शाह ने न केवल पार्टी को शिखर पर पहुंचाया है, अपितु कश्मीर को 370 से मुक्त कराकर, नागरिकता कानून व वक्फ कानून में संशोधन कराकर देश की राष्ट्रीय अखंडता का आदर्श प्रतिमान गढ़ा है।

लगातार सत्ता में रहने के बावजूद विगत मध्यप्रदेश विधानसभा चुनाव में कार्यकर्ताओं ने नरेंद्र मोदी और अमित शाह के चमत्कारिक नेतृत्व में पार्टी को प्रचंड बहुमत दिलाया। हम यहां लोकसभा की सभी सीटें जीते हैं और राज्य का हर बूथ मजबूत बनकर सारा संगठन नयी ऊर्जा से ओत प्रोत है। इसलिए 45 वें स्थापना दिवस पर हर बूथ पर कार्यकर्ता सम्मेलन और गांव चलो बस्ती चलो अभियान चलाया जा रहा है। हमारे दोनों नेताओं ने यह सिद्ध किया है कि यदि राजनीति की ऊर्जा को ऊर्ध्वगामी बनाया जाए और मूल्यों एवं आदर्श के साथ लोक मंगल की भावना से कार्य किया जाए तो एक समर्थ समाज और सशक्त देश बनाया जा सकता है। ▪

(लेखक-भाजपा मध्यप्रदेश के अध्यक्ष एवं खजुराहो लोकसभा क्षेत्र से सांसद हैं।)

भाजपा का 46 वाँ स्थापना दिवस 6 अप्रैल 2025

भाजपा ने स्थापना की सार्थकता को सिद्ध किया

असंख्य कार्यकर्ताओं के तप, त्याग वा तपस्या के परिणाम स्वरुप भाजपा आज विशाल संगठन में परिवर्तित हुई।

इनके त्याग, तपस्या व बलिदान का मर्म शब्दों में बयान करना सम्भव नहीं है, इस तपस्या का तप वही जान सकता है जिसने संघर्ष पूर्ण वो जीवन जिया है या नजदीक से देखा है, अनुभव किया है।

6 अप्रैल 1980 को एकता नगर, मुंबई में भाजपा की स्थापना विपरीत परिस्थितियों में, और परिस्थितियाँ भी इतनी विपरीत, कि सबेरा कब होगा, कोई इसका सही जबाब भी नहीं दे सकता। कार्यकर्ताओं के पास राष्ट्रभक्ति का जोश और धैर्य पूर्वक लम्बे संघर्ष का ही रास्ता बाकी था । इन्हीं असंख्य कार्यकर्ताओं के तप, त्याग वा तपस्या के परिणाम स्वरुप भाजपा आज विशाल संगठन में परिवर्तित हुई। इनके त्याग, तपस्या व बलिदान का मर्म शब्दों में बयान करना सम्भव नहीं है, इस तपस्या का तप वही जान सकता है जिसने संघर्ष पूर्ण वो जीवन जिया है या नजदीक से देखा है, अनुभव किया है। संघर्ष के दौर की वो पीढ़ी केवल राष्ट्रभक्ति की धधकती ज्वाला से ऊर्जा पाकर भावी पीढ़ी को उन्नत, समर्थ व सुरक्षित भारत सौंपने के स्वप्न को संजोए संघर्ष का मार्ग चलती चली गई। इसी त्याग, तपस्या, बलिदान का परिणाम है की धारा 370 का उन्मूलन हुआ, देश में एक प्रधान, एक विधान व एक निशान, आजादी के बाद, लम्बे इंतजार के बाद लागू हुआ। तीन तलाक का खात्मा हुआ। नारी शक्ति वंदन अधिनियम 2023 पारित हुआ। पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर में आतंकवादी लांच पैड्स पर सर्जिकल स्ट्राइक हुआ। पुलवामा हमला, जिसमें देश के 40 सपूत शहीद हो गए थे, हमले के ठीक 12 दिन बाद भारत ने बालाकोट एयर स्ट्राइक कर जवाबी कार्रवाई की। दिल्ली से चलने वाले 100 पैसे, हितग्राहियों के खाते में 100 पैसे, न कट, न कमीशन, न पैसे पाने के लिए हाथ-पैर जोड़ना, एक देश एक कर, 25 करोड़ लोग गरीबी रेखा से बाहर, श्री राम जन्मभूमि जिसका भारतीय इतिहास और संस्कृति में महत्वपूर्ण स्थान है 500 वर्षों से अधिक चले संघर्षों व 134 साल चली कानूनी लड़ाई के बाद भगवान राम की नगरी अयोध्या में 22 जनवरी 2024 को श्री राम मंदिर में रामलला की प्राण प्रतिष्ठा। 10 वीं अर्थ व्यवस्था से विश्व की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थ व्यवस्था, विकसित भारत@2047 का लक्ष्य जैसे तमाम सुधार संभव हुए। नए व भव्य भारत के आधार में नींव के पत्थर ये त्यागी, तपस्वी व बलिदानी पीढ़ी है, जिनके त्याग तपस्या व बलिदान के बिना नए व भव्य भारत का निर्माण सम्भव नहीं था।

एकात्म मानववाद, अंत्योदय के साथ-साथ सबका साथ-सबका विकास-सबका विश्वास-सबका प्रयास ही भाजपा का मूल सिद्धांत बन गया है। भारतीय राजनीति में भाजपा ही एकमात्र संगठन है जहां लोकतंत्र कायम है। छोटे से छोटा

मनाली मत जइयो

अटल बिहारी वाजपेयी

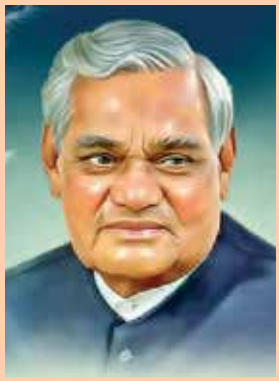

मनाली मत जइयो, गोरी
राजा के राज में।

जइयो तो जइयो,
उड़िके मत जइयो,
अधर में लटकिहौ,
वायुदूत के जहाज में।

जइयो तो जइयो,
संदेसा न पइयो,
टेलीफोन बिगरे हैं,
मिर्धा महाराज में।

जइयो तो जइयो,
मसाल ले के जइयो,
बिजुरी भई बैरिन
अँधेरिया रात में।

जइयो तो जइयो,
त्रिसूल बाँध जइयो,
मिलेंगे खालिसतानी,
राजीव के राज में।

मनाली तो जइहों।
सुरग सुख पइहों।
दुख नीको लागे, मोहे
राजा के राज में।

कार्यकर्ता भी पार्षद, महापौर, विधायक, सांसद, मंत्री, मुख्यमंत्री, पार्टी अध्यक्ष या प्रधानमंत्री बन सकता है। इस संगठन में कोई भी पद किसी व्यक्ति विशेष, परिवार विशेष, राज्य विशेष, भाषा विशेष, धर्म विशेष, लिंग विशेष इत्यादि किसी भी सीमा के बंधन से पूर्णतः मुक्त है। बूथ स्तर का छोटा सा कार्यकर्ता भी किसी भी पद पर पहुंच सकता है। भाजपा का विराट स्वरूप जो आज दिखाई देता है जिसमें लगातार तीसरी बार केंद्र में भाजपा सरकार, देश के 21 राज्यों में या तो भाजपा का मुख्यमंत्री या भाजपा गठबंधन का मुख्यमंत्री, आज उत्तर प्रदेश से असम तक, मध्य प्रदेश से मेघालय तक भाजपा सरकार है। लोकसभा में 240 सदस्य। यह कई पीढ़ियों के कार्यकर्ताओं के तप, सर्वस्व न्योछावर, सर्वस्व बलिदान के बीज, खाद, पानी व मिट्टी का परिणाम है। भाजपा की विचारधारा के लिए कई पीढ़ियों के खून पसीना एक करने का ही परिणाम है कि भाजपा आज विश्व का सबसे बड़ा राजनीतिक दल है।

पंडित दीनदयाल जी का अंत्योदय का सिद्धांत, सुशासन व गरीब कल्याण का ध्येय भारत की राजनीति में विराट परिवर्तन का वाहक बना है। जिसे जनता ने अपना भरपूर सहयोग व समर्थन प्रदान किया है। ''अंधेरा छटेगा, सूरज निकलेगा, कमल खिलेगा'' इसी भरोसे को मंत्र मानकर करोड़ों कार्यकर्ताओं ने खून पसीने से संगठन को सींचा।

बीजेपी एक मात्र ऐसा राजनीतिक दल है जिसने पूरे विश्व को दिखा दिया कि राजनीतिक दल की स्थापना का उद्देश्य जनता की सेवा करना होता है। अंत्योदय, सेवा संकल्प, सुशासन के रास्ते पर चलकर एक भारत- श्रेष्ठ भारत के लिए प्रतिबद्धता, राजनीतिक दलों के लिए चुनौतियों के मार्ग को चुनने जैसा है। जिसे भाजपा ने करके दिखाया है।

जिस राजनीतिक दल का गठन या बुनियाद ही देश की एकता व अखंडता है जिसके लिए डॉक्टर श्यामा प्रसाद मुखर्जी का बलिदान हुआ, एकात्म मानववाद व अंत्योदय का सूत्र देने वाले पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी जिनकी रहस्यमय परिस्थितियों में मृत्यु हुई, कितनी विपरीत परिस्थितियों से प्रारंभ यात्रा पर सिद्धांतों से समझौता न करने के कारण जन-जन का भरोसा जीतने में सफल हुई। आज देश भर के लगभग 11 लाख मतदाता केंद्रों में से 75 प्रतिशत केंद्रों में भाजपा की बूथ समितियां बन चुकी हैं। आज भाजपा कच्छ से पूर्वोत्तर तक, कश्मीर से केरल तक सेवा कार्य कर रही है। अंतिम पायदान पर खड़े अंतिम व्यक्ति तक पहुंचने का जोश केवल भाजपा संगठन के कार्यकर्ताओं के पास है। मातृभूमि की भक्ति तथा लोकतंत्र की शक्ति ही भाजपा की ताकत है। भाजपा का गठन लोकतंत्र की रक्षा के लिए हुआ है। लोकतंत्र ने ही संगठन को पुष्पित, पल्लवित किया है। लोकतंत्र तथा संविधान की रक्षा व संविधान की भावना का गौरव ऊंचा करना भाजपा के लिए मूल कार्य हैं। कार्यशैली सर्व समावेशी, सर्वस्पर्शीय, सर्वजन का हित करने वाली है। भाजपा एक विचारधारा है, ध्येय राष्ट्र निर्माण, जनकल्याण है। भाजपा ही वह राजनीतिक दल है जिसके लिए सामाजिक न्याय सिर्फ नारा नहीं, भाजपा बिना किसी भेदभाव के सामाजिक न्याय की भावना का पूर्णता पालन व सम्मान करती है। बिना भेदभाव, बिना तुष्टीकरण के सामाजिक न्याय को सही अर्थों में धरातल पर लागू करने का साहस एकमात्र भाजपा में है। राष्ट्रभक्ति, समर्पण व राष्ट्र प्रथम का मंत्र भाजपा का प्रेरणा स्रोत है। परिवारवाद, वंशवाद, जातिवाद व क्षेत्रवाद के बंधन से मुक्त होना, भाजपा को जन-जन के दिल में जगह बनाने में, सफल करने में सिद्ध हुआ।

भाजपा ने पुनर्जागरण की नई यात्रा का शंखनाद किया है, भाजपा के साथ देश गुलामी की मानसिकता को पीछे छोड़कर खोये हुए गौरव को पुनः पाने के लिए एकजुट होकर फिर उठ खड़ा हुआ है। जिसके कारण गुलाम मानसिकता की वर्षों से जकड़ी बुराइयां अब धीरे-धीरे कमजोर पड़ रही है। दशकों से हिंसा, आगजनी, हत्या को झेल रहा कश्मीर व नॉर्थ ईस्ट जैसे शांति व नव सूर्योदय के लिए बेचैन था। भाजपा गरीब, युवा, माता, बहनें, दलित, शोषित, वंचित, आदिवासियों की आवाज बनकर उभरी। आज का नया भारत विश्व पटल पर दृढ़ता से अपनी बात रखता है, ना डरता है, ना दबाव महसूस करता है। राष्ट्रभक्ति, भाजपा की राजनीति की पहचान बन गई है। परिवारवाद, वंशवाद की चुनौती का भाजपा ने डटकर मुकाबला किया है।

परिवारवाद, वंशवाद के जहर से देश को सजग व सतर्क किया है। आज देश के पास नीतियां भी है, नियत भी है, निर्णायक क्षमता भी है, निश्चय शक्ति भी है। संपूर्ण संतुष्टीकरण के साथ भेदभाव को समूल नष्ट कर दिया गया है। तय लक्ष्य समय सीमा से पूर्व प्राप्त हो रहे हैं। भाजपा वास्तव में देश के संकल्पों का प्रतिनिधित्व कर रही है। बार-बार सरकार बनाने का मिलता जनादेश भाजपा कार्यकर्ताओं की जिम्मेदारियों को बढ़ा रहा है। भाजपा का कार्यकर्ता देश के सपनों का प्रतिनिधि है। देश के संकल्पों का प्रतिनिधि है। 45 वर्षों की यात्रा भाजपा की स्थापना की सार्थकता को सिद्ध कर रही है। ▪

भाजपा की पहचान : जनता की सेवा और राष्ट्र के लिए समर्पण

राष्ट्रवाद की राह और अंत्योदय का है मूलमंत्र

तरुण चुग

अपने 45 वर्षों की राजनीतिक यात्रा में भारतीय जनता पार्टी भारत को विश्वगुरु बनाने के लक्ष्य को लेकर क्रियाशील रही है।

देश के लिए समर्पण भाव, दृढ़ इच्छाशक्ति और कुशल रणनीति ही भाजपा की पहचान रही है।

भारतीय राजनीति और देश को एक नई दिशा देने के लिए 6 अप्रैल 1980 को भारतीय जनता पार्टी की स्थापना हुई। पार्टी के संस्थापक अध्यक्ष भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयी ने जो संकल्प लिया था, वह आज साकार हो रहा है। श्रद्धेय अटल बिहारी वाजपेयी और लालकृष्ण आडवाणी की जोड़ी द्वारा बनाई गई राष्ट्रवाद की राह पर सेवा का संकल्प लिए चली भाजपा को श्री नरेंद्र मोदी और श्री अमित शाह की जोड़ी ने शिखर तक पहुंचाया है।

अपने 45 वर्षों की राजनीतिक यात्रा में भारतीय जनता पार्टी भारत को विश्वगुरु बनाने के लक्ष्य को लेकर क्रियाशील रही है। देश के लिए समर्पण भाव, दृढ़ इच्छाशक्ति और कुशल रणनीति ही भाजपा की पहचान रही है। भारतीय संस्कृति और आस्था के प्रतीक मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम के जन्मस्थान पर मंदिर निर्माण का सपना साकार हुआ। राष्ट्रीय एकता और अखंडता के लिए ''एक देश-एक निशान-एक विधान-एक प्रधान'' का सपना जम्मू-कश्मीर से धारा 370 हटाकर साकार किया जा चुका है।

''सबका साथ, सबका विकास'' के मूल मंत्र को साकार करने के लिए तीन तलाक को अलविदा कहा गया और वंचित मुस्लिम भाईयों को मुख्यधारा में लाने के लिए वक्फ संशोधन संसद से पारित कराया गया।

भारतीय जनता पार्टी भले ही 1980 में बनी हो, लेकिन इसकी विचारधारा 1951 से ही चल रही है। जब देश में कांग्रेस के सिवा कोई राजनीतिक विकल्प नहीं था, उस समय राष्ट्रवादी राह पर मजबूत संकल्प लिए भाजपा निरंतर बढ़ती रही। अपने सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की स्थापना के उद्देश्य से भारतीय जनता पार्टी की स्थापना हुई और अटल बिहारी वाजपेयी पार्टी के प्रथम अध्यक्ष बने। 1984 के चुनाव में मात्र दो सीटें मिलने के बावजूद पार्टी ने सांस्कृतिक राष्ट्रवाद और एकात्म मानववाद के साथ भारतीय राजनीति में अपनी स्वीकार्यता बनाए रखी।

हम न तो हार से विचलित हुए और न ही कभी बड़ी जीत पर इतराए। हम अपने लक्ष्य पथ पर बढ़ते रहे, जनता के दुःख-दर्द में साथ रहे और उसके हर फैसले को स्वीकार करते गए। भारतीय जनता पार्टी के लिए देश सर्वोच्च है, राष्ट्रवाद अहम है।

भाजपा की विचारधारा ''एकात्म मानववाद'' सर्वप्रथम 1965 में पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने प्रस्तुत की थी। इसलिए यह बात कही जाती रही है कि भाजपा एक विशेष विचारधारा वाली पार्टी है- और यह केवल कहने की बात नहीं है। वास्तव में भाजपा केवल एक राजनीतिक दल नहीं, बल्कि एक सतत् चिंतन वाली विचारधारा, विशेष कार्यशैली, समर्पित कैडर और जन-कल्याणकारी नीतियों पर आधारित संगठन है।

यदि हम भाजपा की तुलना अन्य दलों से करें तो पाएंगे कि वास्तव में भाजपा ही एकमात्र ऐसी राजनीतिक पार्टी है, जो मर्यादित राजनीतिक आचरण की कसौटी पर खरी उतरती है। देशभर में फैले समर्पित कार्यकर्ता इसके लिए सबसे बड़ी पूंजी हैं। पार्टी का चाल-चरित्र-चेहरा अन्य दलों से बिल्कुल भिन्न है। भारतीय सांस्कृतिक राष्ट्रवाद इसका मूलमंत्र है। हमारा देश सुरक्षा की दृष्टि से आत्मनिर्भर और पूर्ण रूप से शक्तिशाली राष्ट्र बने-परमाणु नीति और कार्यक्रम इसी सोच का हिस्सा हैं।

हमारा राष्ट्र विश्व में आध्यात्मिक गुरु रहा है। वही स्थान और प्रतिष्ठा भारत की पुनः स्थापित हो, यही भाजपा का चिंतन है। भाजपा परम वैभवशाली राष्ट्र का सपना संजोए हुए है। पार्टी चाहती है कि भारत एक सुख-समृद्धिशाली राष्ट्र बने। समाज के सभी वर्गों का हित हो- किसी भी एक वर्ग का तुष्टिकरण या वोट बैंक की राजनीति पार्टी को कतई स्वीकार नहीं है।

आयुष्मान भारत, उज्ज्वला, उजाला, सौभाग्य, किसान सम्मान निधि जैसी योजनाओं के माध्यम से भाजपा सरकार समाज के अंतिम व्यक्ति को मुख्यधारा में लाने के लिए निरंतर कार्य कर रही है।

भाजपा को जब भी सरकार चलाने का अवसर मिला, तब गरीब और अंतिम व्यक्ति

ही सभी योजनाओं का केंद्र रहा। 1996, 1998 और 1999 में अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व में सरकार बनी। वर्तमान में हम दुनिया के सर्वाधिक लोकप्रिय नेता श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में तीसरी बार सरकार बनाकर देश की सेवा कर रहे हैं। अपने 18 करोड़ सदस्यों के साथ भाजपा आज विश्व की सबसे बड़ी पार्टी बन चुकी है।

पार्टी की इस विकास यात्रा में करोड़ों कार्यकर्ताओं का त्याग और बलिदान रहा है। स्थापना दिवस पर जनसंघ के सभी अध्यक्षों को, जो हमारे प्रेरणा पुरूष रहे हैं, श्रद्धापूर्वक नमन करते हैं। श्यामा प्रसाद मुखर्जी, मौलिचंद्र शर्मा, प्रेमनाथ डोगरा, आचार्य देवप्रसाद घोष, पीतांबर दास, अवसरला राम राव, रघुवीर, बच्छराज व्यास, बलराज मधोक, दीनदयाल उपाध्याय, अटल बिहारी वाजपेयी, लालकृष्ण आडवाणी के संघर्ष और योगदान को याद कर गौरवान्वित होते हैं।

साथ ही, हमारी विभूतियों-नानाजी देशमुख, सुंदर सिंह भंडारी, भैरोसिंह शेखावत, कैलाशपति मिश्र, भाई महावीर, विजयाराजे सिंधिया-ने जनसंघ को मजबूती देते हुए भाजपा को अपने अनुभव एवं श्रम से सींचा। इसी तरह भाजपा के अध्यक्षों के तप और श्रम के बल पर ही पार्टी ने आज शिखर को स्पर्श किया है। अटल बिहारी वाजपेयी, लालकृष्ण आडवाणी, मुरली मनोहर जोशी, कुशाभाऊ ठाकरे, बंगारू लक्ष्मण, जन. कृष्णमूर्ति, वेंकैया नायडू, राजनाथ सिंह, नितिन गडकरी और अमित शाह ने पार्टी को ऊँचाइयों तक पहुंचाने में कोई कसर नहीं छोड़ी।

वर्तमान अध्यक्ष श्री जगत प्रकाश नड्डा जी के नेतृत्व में पार्टी निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयी की कविताओं की चंद पंक्तियों के साथ स्थापना दिवस पर सभी भाजपा कार्यकर्ताओं एवं समर्थकों को शुभकामनाएं-

यह नागपुर से लगी आग
ज्योतित भारत मां का सुहाग
उत्तर, दक्षिण, पूरब, पश्चिम
दिश-दिश गूंजा संगठन राग।
केशव के जीवन का पराग
अंतस्थल की अवरुद्ध आग
भगवा ध्वज का संदेश: त्याग।
वन, विजनकान्त, नगरीय शान्त
पंजाब, सिंधु, संयुक्त प्रांत
केरल, कर्नाटक और बिहार
कर पार चला संगठन राग।
हिन्दू-हिन्दू मिलते जाते
बढ़ते जाते, देखो, हम बढ़ते ही जाते। ▪

(लेखक भाजपा के राष्ट्रीय महामंत्री हैं)

नीति निर्माण प्रक्रिया में शामिल हों यंग प्रोफेशनल्स- विष्णुदत्त शर्मा

- **देश और राजनीति की दिशा बदल सकते हैं युवा।**
- **जातिवाद, परिवारवाद समाप्त होगा तभी विकसित भारत बनेगा।**

शिकागो की धर्मसभा में स्वामी विवेकानंद जी ने कहा था कि आप मुझे मेरे जैसे 100 युवा दें, मैं सारी दुनिया को बदल दूंगा। पूर्व राष्ट्रपति डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम से जब युवाओं ने पूछा कि राजनीति गुंडाइज्म, धनबल, बाहुबल की पर्याय बन गई है, इस स्थिति को कैसे बदला जा सकता है? तब डॉ. कलाम ने जवाब दिया था कि जब तक आपके जैसे युवा राजनीति में नहीं आएंगे, तब तक वही पुराने लोग राजनीति चलाते रहेंगे और यही सब चलता रहेगा। इन्हीं महापुरुषों की बात को आगे बढ़ाते हुए प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने भी कहा था कि मैं अलग-अलग क्षेत्रों के ऐसे एक लाख युवा प्रोफेशनल्स, इंटेलेक्चुअल्स को जनप्रतिनिधि के तौर पर देखना चाहता हूं, जिनके परिवार की कोई राजनीतिक पृष्ठभूमि न रही हो। युवा प्रोफशनल्स को शासन और नीति निर्माण की प्रक्रिया में शामिल करने के प्रयास के रूप में ही बूट कैंप का आयोजन किया गया है।

2014 में प्रधानमंत्री पद की शपथ लेने के बाद मोदी जी ने देश की राजनीति का परिदृश्य बदल दिया। उन्होंने भारत के बारे में दुनिया की सोच बदल दी। भारत को लोग एक गंदगी वाले देश के रूप में जानते थे। लेकिन प्रधानमंत्री जी ने स्वच्छता अभियान शुरू किया। लोगों ने इसका उपहास किया, लेकिन प्रधानमंत्री जी ने इस अभियान के साथ जिस तरह देश के जन-जन को जोड़ा, उससे आज ये पूरे देश का अभियान बन चुका है और अब लोग कहीं भी गंदगी करने से पहले सोचते हैं। पहले की सरकारें गरीबी हटाओ के नारे लगाती थीं, लेकिन इसके लिए करती कुछ नहीं थीं। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी की सरकार ने इस दिशा में ठोस कदम उठाए, जिनकी बदौलत आज देश के 25 करोड़ लोग गरीबी रेखा से बाहर आ चुके हैं। श्री नरेन्द्र मोदी जी जातिवाद और परिवारवाद को देश की राजनीति में सबसे बड़ी चुनौती के रूप में देखते हैं। उनका कहना है कि 2047 में विकसित भारत तभी बन सकता है, जब राजनीति से ये दोनों चीजें समाप्त हो जाएंगी। प्रतिभाएं कहीं भी हों, प्रधानमंत्री जी उन्हें खोज निकालते हैं। इसकी झलक उनके 'मन की बात' कार्यक्रम में भी दिखाई देती है। प्रधानमंत्री जी युवाओं, इटेलेक्चुअल्स और प्रोफेशनल्स को राजनीति, शासन और नीति निर्माण की प्रक्रिया में शामिल करना चाहते हैं और कई प्रोफेशनल्स ने अपने आपको साबित भी किया है। इंदौर महापौर पुष्यमित्र भार्गव एक एडव्होकेट हैं, लेकिन आज वो इंदौर के सफल महापौर हैं। देश के टॉप ब्यूरोक्रेट श्री अश्विनी वैष्णव आज रेल मंत्री हैं और उनके नेतृत्व में भारतीय रेलवे जबरदस्त तरक्की कर रही है। एक और ब्यूरोक्रेट एस. जयशंकर हैं, जिनके नेतृत्व में भारत की विदेश नीति सारी दुनिया में अपना लोहा मनवा रही है। मैं सभी प्रतिभागियों से आह्वान करता हूं कि वो भी कदम बढ़ाएं और अपनी योग्यता, प्रतिभा और अनुभव से देश, समाज तथा पार्टी की भलाई में योगदान दें। ▪

संघ की तपस्या विकसित भारत का अध्याय लिख रही है - मोदी

- देश के सभी नागरिकों को बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं मिलें, ये हमारी प्राथमिकता है
- कठिन से कठिन समय में भी भारत में चेतना जागृत रखने के लिए नए-नए सामाजिक आंदोलन चलते रहे
- राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ भारत की अमर संस्कृति का आधुनिक अक्षय वट है, यह अक्षय वट भारतीय संस्कृति और हमारे राष्ट्र की चेतना को निरंतर ऊर्जा प्रदान कर रहा है
- प्रयासों में मैं नहीं बल्कि हम पर ध्यान केंद्रित किया जाता है, जब राष्ट्र प्रथम की भावना सर्वोपरि होती है, जब नीतियों और निर्णयों में देश के लोगों का हित सबसे महत्वपूर्ण होता है, तभी उसका प्रभाव सर्वत्र दिखाई देता है
- विश्व में जहां भी कोई प्राकृतिक आपदा आती है, भारत पूरे मनोयोग से सेवा के लिए खड़ा होता है

राष्ट्रीय चेतना के संरक्षण और संवर्धन के लिए जो विचारबीज 100 साल पहले बोया गया, वो महान वटवृक्ष के रूप में आज दुनिया के सामने है।

सिद्धान्त और आदर्श इस वटवृक्ष को ऊंचाई देते हैं, लाखों-करोड़ों स्वयंसेवक इसकी टहनी, ये कोई साधारण वटवृक्ष नहीं, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ भारत की अमर संस्कृति का आधुनिक अक्षय वट है। ये अक्षय वट आज भारतीय संस्कृति को, हमारे राष्ट्र की चेतना को, निरंतर ऊर्जावान बना रहा है।

- राष्ट्र निर्माण की भावना से ओतप्रोत हमारे युवा 2047 तक विकसित भारत के लक्ष्य की ओर आगे बढ़ रहे हैं

गुडी पाड़-व्याच्या आणि नवीन वर्षाच्या आपल्या सर्वांना अतिशय मनःपूर्वक शुभेच्छा!, राष्ट्र यज्ञ के इस पावन अनुष्ठान में मुझे यहां आने का सौभाग्य मिला है। चैत्र शुक्ल प्रतिपदा का ये दिन बहुत विशेष है। नवरात्रि का पवित्र पर्व शुरू हो रहा है। देश के अलग-अलग कोनों में गुड़ी-पड़वा, उगादि और नवरेह का त्योहार भी मनाया जा रहा है। भगवान झूलेलाल जी और गुरू अंगद देव जी का अवतरण दिवस भी है। ये हमारे प्रेरणापुंज, परम पूजनीय डाक्टर साहब की जयंती का भी अवसर है। और इसी साल, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की गौरवशाली यात्रा के 100 वर्ष भी पूरे हो रहे हैं। इसी कालखंड में हमने हमारे संविधान के 75 वर्ष का उत्सव भी मनाया है। अगले ही महीने संविधान निर्माता बाबा साहेब अंबेडकर जी की जयंती भी है। मैंने

दीक्षाभूमि पर बाबा साहब को नमन किया है, उनका आशीर्वाद लिया है।

संघ सेवा के इस पवित्र तीर्थ नागपुर में हम एक पुण्य संकल्प के विस्तार के साक्षी बन रहे हैं। अभी हमने माधव नेत्रालय के कुलगीत में सुना, अध्यात्म, ज्ञान, गौरव, गुरुता का ये अद्भुत विद्यालय, मानवता रत यह सेवा मंदिर कण-कण में देवालय। माधव नेत्रालय एक ऐसा संस्थान है, जो अनेक दशकों से पूज्य गुरुजी के आदर्शों पर लाखों लोगों की सेवा कर रहा है। लोगों के जीवन में रोशनी लौटी है, आज उसके नए परिसर का शिलान्यास हुआ है। अब इस नए परिसर के बाद इन सेवाकार्यों को और ज्यादा गति मिलेगी। इससे हजारों नए लोगों के जीवन में प्रकाश फैलेगा, उनके जीवन का अंधकार भी दूर होगा।

किसी भी राष्ट्र का अस्तित्व, पीढ़ी दर पीढ़ी, उसकी संस्कृति के विस्तार, उस राष्ट्र की चेतना के विस्तार पर निर्भर करता है। हम अपने देश का इतिहास देखें, तो सैकड़ों वर्षों की गुलामी, इतने आक्रमण, भारत की सामाजिक संरचना को मिटाने की इतनी क्रूर कोशिशें, लेकिन भारत की चेतना कभी समाप्त नहीं हुई, उसकी लौ जलती रही। ये कैसे हुआ? क्योंकि कठिन से कठिन दौर में भी भारत में इस चेतना को जागृत रखने वाले नए-नए सामाजिक आंदोलन होते रहे। भक्ति आंदोलन, उसका ये उदाहरण, जिससे हम सभी भलिभांति परिचित हैं। मध्यकाल के उस कठिन कालखंड में हमारे संतों ने भक्ति के विचारों से हमारी राष्ट्रीय चेतना को नई ऊर्जा दी। गुरु नानकदेव, कबीरदास, तुलसीदास, सूरदास, हमारे यहाँ महाराष्ट्र में संत तुकाराम, संत एकनाथ, संत नामदेव, संत ज्ञानेश्वर, ऐसे कितने ही संतों ने हमारी इस राष्ट्रीय चेतना में अपने मौलिक विचारों से प्राण फूंके। इन आंदोलनों ने भेदभाव के फंदों को तोड़कर समाज को एकता के सूत्र में जोड़ा।

इसी तरह, स्वामी विवेकानंद जैसे महान संत भी हुए। उन्होंने निराशा में डूब रहे समाज को झकझोरा, उसे उसके स्वरूप की याद दिलाई, उसमें आत्मविश्वास का संचार किया और हमारी राष्ट्रीय चेतना को बुझने नहीं दिया। गुलामी के आखिरी दशकों में डॉक्टर साहेब और गुरू जी जैसे महान व्यक्तित्वों ने इसे नई ऊर्जा देने का काम किया।

राष्ट्रीय चेतना के संरक्षण और संवर्धन के लिए जो विचारबीज 100 साल पहले बोया गया, वो महान वटवृक्ष के रूप में आज दुनिया के सामने है। सिद्धान्त और आदर्श इस वटवृक्ष को ऊंचाई देते हैं, लाखों-करोड़ों स्वयंसेवक इसकी टहनी, ये कोई साधारण वटवृक्ष नहीं, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ भारत की अमर संस्कृति का आधुनिक अक्षय वट है। ये अक्षय वट आज भारतीय संस्कृति को, हमारे राष्ट्र की चेतना को, निरंतर ऊर्जावान बना रहा है।

जब हम माधव नेत्रालय के नए परिसर का काम शुरू कर रहे हैं, तो दृष्टि की बात स्वभाविक है। हमारे जीवन में दृष्टि ही हमें दिशा देती है। इसीलिए, वेदों में भी कामना की गई है- पश्येम शरदः शतम्! अर्थात्, हम सौ वर्षों तक देखें। ये दृष्टि आँखों की, यानी बाह्यदृष्टि भी होनी चाहिए, और अन्तः दृष्टि भी होनी चाहिए। जब अन्तःदृष्टि की बात करते हैं, तो विदर्भ के महान संत श्री गुलाबराव महाराज जी का स्मरण होना भी स्वाभाविक है। उन्हें प्रज्ञाचक्षु कहा जाता था। बहुत कम आयु में ही उनको आंखों से दिखाई देना बंद हो गया था, लेकिन फिर भी उन्होंने अनेकों पुस्तकें लिखीं थीं। और अब कोई भी पूछ सकता है कि जब आंखों से दिखाई नहीं देता है, तो उसके बावजूद भी कोई इतने ग्रंथ कैसे लिख सकता है? इसका उत्तर ये है कि उनके पास भले ही नेत्र नहीं थे, लेकिन दृष्टि थी। ये दृष्टि बोध से आती है, विवेक से प्रकट होती है। ये दृष्टि व्यक्ति के साथ ही समाज को भी बहुत शक्ति देती है। हमारा राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ भी एक ऐसा संस्कार यज्ञ है, जो अन्तः दृष्टि और बाह्य दृष्टि, दोनों के लिए काम कर रहा है। बाह्य दृष्टि के रूप में हम माधव नेत्रालय को देखते हैं और अंतः दृष्टि ने संघ को सेवा का पर्याय बना दिया है।

हमारे यहां कहा गया है- परोपकाराय फलन्ति वृक्षाः, परोपकाराय वहन्ति नद्यः। परोपकाराय दुहन्ति गावः, परोपकारार्थ-मिदं शरीरम्।। हमारा शरीर परोपकार के लिए ही है, सेवा के लिए ही है। और जब ये सेवा संस्कारों में आ जाती है, तो सेवा ही साधना बन जाती है। यही साधना तो हर एक स्वयंसेवक के जीवन की प्राण वायु होती है। ये सेवा संस्कार, ये साधना, ये प्राण वायु, पीढ़ी दर पीढ़ी हर स्वयंसेवक को तप-तपस्या के लिए प्रेरित कर रही है। ये सेवा साधना हर स्वयंसेवक को निरंतर गतिमान रखती है, उसे कभी थकने नहीं देती, कभी रुकने नहीं देती। पूज्य गुरू जी अक्सर कहा करते थे, जीवन की अवधि का नहीं, उसकी उपयोगिता का महत्व होता है। हम देव से देश और राम से राष्ट्र के जीवन मंत्र लेकर के चले हैं, अपना कर्तव्य निभाते चलते हैं। और इसलिए हम देखते हैं, बड़ा-छोटा कैसा भी काम हो, कोई भी कार्यक्षेत्र हो, सीमावर्ती गाँव हों, पहाड़ी क्षेत्र हों, वनक्षेत्र हो, संघ के स्वयंसेवक निःस्वार्थ भाव से कार्य करते रहते हैं। कहीं कोई वनवासी कल्याण आश्रम के कामों को उसको अपना ध्येय बनाकर के जुटा हुआ है, कहीं कोई एकल विद्यालय के माध्यम से आदिवासी बच्चों को पढ़ा रहा है, कहीं कोई संस्कृति जागरण के मिशन में लगा हुआ है। कहीं कोई सेवा भारती से जुड़कर गरीबों-वंचितों की सेवा कर रहा है।

अभी हमने प्रयाग में महाकुंभ में देखा, वहां नेत्रकुंभ में कैसे स्वयंसेवकों ने लाखों लोगों की मदद की, यानी जहां सेवा कार्य, वहां स्वयंसेवक। कहीं कोई आपदा आ जाए, बाढ़ की तबाही हो या भूकंप की विभीषिका हो, स्वयंसेवक एक अनुशासित सिपाही की तरह तुरंत मौके पर पहुँचते हैं। कोई अपनी परेशानी नहीं देखता, अपनी पीड़ा नहीं देखता, बस सेवा भावना से हम काम में जुट जाते हैं। हमारे तो हृदय में बसा है, सेवा है यज्ञकुन्ड, समिधा सम हम जलें, ध्येय महासागर में सरित रूप हम मिलें।

एक बार एक इंटरव्यू में परम पूजनीय गुरू जी से पूछा गया, कि वो संघ को सर्व-व्यापी क्यों कहते हैं? गुरूजी का उत्तर बहुत ही प्रेरणादायी था। उन्होंने संघ की तुलना प्रकाश से की थी, उजाले से की थी। उन्होंने कहा कि प्रकाश सर्वव्यापी होता है, वो खुद ही अकेले सारे कार्य भले ना करे, लेकिन अंधेरे को दूर करके वो दूसरे को कार्य करने का रास्ता दिखा देता है। गुरू जी की ये सीख, हमारे लिए जीवन मंत्र है। हमें प्रकाश बनकर अंधेरा दूर करना है, बाधाएं मिटानी हैं, रास्ता बनाना है। उस भाव को हम जीवन भर सुनते रहें, हर कोई कम अधिक मात्रा में जीने का प्रयास करता रहा। मैं नहीं तुम, अहं नहीं वयं।

जब प्रयासों के दौरान में, जब मैं नहीं, हम का ध्यान होता है, जब राष्ट्र प्रथम की भावना सर्वोपरि होती है, जब नीतियों में, निर्णयों में देश के लोगों का हित ही सबसे बड़ा होता है, तो सर्वत्र उसका प्रभाव भी और प्रकाश भी नजर आता है। विकसित भारत के लिए सबसे जरूरी है कि हम उन बेड़ियों को तोड़ें, जिनमें देश उलझा हुआ था। आज हम देख रहे हैं, भारत कैसे गुलामी की मानसिकता को छोड़कर आगे बढ़ रहा है। गुलामी की निशानियों को जिस हीनभावना में 70 वर्षों से ढोया जा रहा था, उनकी जगह अब राष्ट्रीय गौरव के नए अध्याय लिखे जा रहे हैं। वो अंग्रेजी कानून, जिन्हें भारत के लोगों को नीचा दिखाने के लिए बनाया गया था, देश ने उन्हें बदल दिया है। गुलामी की सोच से बनी दंड संहिता की जगह अब भारतीय न्याय संहिता लागू हुई है। हमारे लोकतन्त्र के प्रांगण में अब राजपथ नहीं, कर्तव्यपथ है। हमारी नौसेना के ध्वज में भी गुलामी का चिन्ह छपा हुआ था, उसकी जगह अब नौसेना के ध्वज पर छत्रपति शिवाजी महाराज का प्रतीक लहरा रहा है। अंडमान के

द्वीप, जहां वीर सावरकर ने राष्ट्र के लिए यातनाएँ सहीं, जहां नेताजी सुभाष बाबू ने आजादी का बिगुल फूंका, उन द्वीपों के नाम भी अब आजादी के नायकों की याद में रखे गए हैं।

वसुधैव कुटुंबकम का हमारा मंत्र, आज विश्व के कोने-कोने में पहुँच रहा है। और दुनिया इसे हमारे कार्यों में भी देख रही है, महसूस कर रही है। जब कोविड जैसी महामारी आती है, तो भारत विश्व को परिवार मानकर वैक्सीन उपलब्ध करवाता है। दुनिया में कहीं भी प्राकृतिक आपदा हो, भारत पूरे मनोयोग से सेवा के लिए खड़ा होता है। अभी आपने कल ही देखा है, म्यांमार में इतना बड़ा भूकंप आया है, भारत ऑपरेशन ब्रह्मा के तहत, वहां के लोगों की मदद के लिए सबसे पहले पहुंच गया है। जब तुर्किए में भूकंप आया, जब नेपाल में भूकंप आया, जब मॉलदीव्स में पानी का संकट आया, भारत ने मदद करने में घड़ी भर की भी देर नहीं की। युद्ध जैसे हालातों में हम दूसरे देशों से नागरिकों को भी सुरक्षित निकालकर के लाते हैं। दुनिया देख रही है, भारत आज जब प्रगति कर रहा है, तो पूरे ग्लोबल साउथ की आवाज़ भी बन रहा है। विश्व-बंधु की ये भावना, हमारे ही संस्कारों का विस्तार है।

आज भारत की सबसे बड़ी पूंजी हमारा युवा है। और हम देखते हैं, आज भारत का युवा कितने कॉन्फिडेंस से भरा हुआ है। उसकी Risk Taking Capacity पहले के मुकाबले कई गुना बढ़ गई है। वो नए-नए इनोवेशन कर रहा है, स्टार्ट अप्स की दुनिया में अपना परचम लहरा रहा है और सबसे बड़ी बात, आज के भारत का युवा अपनी विरासत पर गर्व करते हुए, अपनी संस्कृति पर गर्व करते हुए चल रहा है। अभी हमने प्रयागराज महाकुंभ में देखा, आज की युवा पीढ़ी लाखों-करोड़ों की संख्या में महाकुंभ में पहुंची और इस सनातन परंपरा से जुड़कर गौरव से भर उठी।

आज भारत का युवा, देश की जरूरतों को ध्यान में रखते हुए काम कर रहा है। भारत के युवाओं ने मेक इन इंडिया को सफल बनाया है, भारत का युवा लोकल के लिए वोकल हुआ है। एक जज्बा बना है, हमें देश के लिए जीना है, देश के लिए कुछ करना है, खेल के मैदान से लेकर अंतरिक्ष की ऊंचाई तक राष्ट्र निर्माण की भावना से ओतप्रोत हमारे युवा आगे बढ़ रहे हैं, आगे चलते ही जा रहे हैं। यही युवा 2047 के, जब आजादी के 100 साल होंगे, विकसित भारत के लक्ष्य की ध्वजा थामे हुए हैं और मुझे विश्वास है, संगठन, समर्पण और सेवा की ये त्रिवेणी विकसित भारत की यात्रा को निरंतर ऊर्जा देती रहेगी, दिशा देती रहेगी। संघ का इतने वर्षों का परिश्रम फलीभूत हो रहा है, संघ की इतने वर्षों की तपस्या विकसित भारत का एक नया अध्याय लिख रही है।

जब संघ की स्थापना हुई, तब भारत की हालत भी अलग थी, और हालात भी अलग थे। 1925 से लेकर 1947 तक, वो समय संघर्ष का समय था। आजादी का बड़ा लक्ष्य देश के सामने था। आज संघ की 100 वर्षों की यात्रा के बाद देश फिर एक अहम पड़ाव पर है। 2025 से 2047 तक के महत्वपूर्ण कालखंड, इस कालखंड में एक बार फिर बड़े लक्ष्य हमारे सामने हैं। कभी पूज्य गुरू जी ने एक पत्र में लिखा था, मैं अपने भव्य राष्ट्र प्रसाद की नींव में एक छोटा सा पत्थर बनकर रहना चाहता हूं, हमें सेवा के अपने संकल्प को हमेशा प्रज्ज्वलित रखना है।

हमें अपने परिश्रम को बनाए रखना है। हमें विकसित भारत के स्वप्न को साकार करना है और जैसा मैंने अयोध्या में प्रभु श्रीराम के मंदिर के नव निर्माण पर कहा था, हमें अगले एक हजार वर्षों के सशक्त भारत की नींव भी रखनी है। मुझे विश्वास है, पूज्य डॉक्टर साहेब, पूज्य गुरु जी जैसी विभूतियों का मार्गदर्शन हमें निरंतर सामर्थ्य देगा। हम विकसित भारत के संकल्प को पूरा करेंगे। हम अपनी पीढ़ियों के बलिदान को सार्थक करके रहेंगे। ▪

मॉरीशस के सर्वोच्च राष्ट्रीय सम्मान से सम्मानित होने पर पीएम मोदी

1.4 अरब भारतीयों का सम्मान है

मैं मॉरीशस के सर्वोच्च राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित होने पर हृदय से आभार व्यक्त करता हूं। यह सिर्फ मेरा सम्मान नहीं है। यह 1.4 अरब भारतीयों का सम्मान है। यह भारत और मॉरीशस के बीच सदियों पुराने सांस्कृतिक और ऐतिहासिक रिश्तों के प्रति श्रद्धांजलि है। यह क्षेत्रीय शांति, प्रगति, सुरक्षा और सतत् विकास के लिए हमारी साझा प्रतिबद्धता की स्वीकृति है। और, यह ग्लोबल साउथ की साझा आशाओं और आकांक्षाओं का प्रतीक है।

मैं इस पुरस्कार को पूरी विनम्रता और कृतज्ञता के साथ स्वीकार करता हूं। मैं इसे सदियों पूर्व भारत से मॉरीशस आए आपके उन पूर्वजों के साथ-साथ उनकी सभी पीढ़ियों को समर्पित करता हूं। अपने कठिन परिश्रम से उन्होंने मॉरीशस के विकास में एक सुनहरा अध्याय लिखा और इसकी जीवंत विविधता में योगदान दिया। मैं इस सम्मान को एक जिम्मेदारी के रूप में भी स्वीकार करता हूं। मैं अपनी प्रतिबद्धता की पुनः पुष्टि करता हूं कि हम भारत-मॉरीशस रणनीतिक साझेदारी को और अधिक ऊंचाईयों तक ले जाने के लिए हर संभव प्रयास करते रहेंगे।

बजट सर्व-व्यापक, सर्व-स्पर्शी, सर्व-समावेशी - मुख्यमंत्री डॉ. यादव

- प्रधानमंत्री श्री मोदी के विकसित भारत के संकल्प को पूरा करना हमारा मुख्य लक्ष्य।
- राज्य सरकार ने प्रस्तुत किया 4 लाख 21 हजार 32 करोड़ रुपए का बजट।
- वर्ष 2003-04 की तुलना में 21 गुना बड़ा है वर्ष 2025-26 का बजट।
- बजट में कोई नया टैक्स नहीं और न ही कोई कटौती।
- वर्ष-2029 तक बजट के आकार एवं प्रदेश की जीएसडीपी को दो गुना करने का लक्ष्य।
- जेण्डर बजट, बाल बजट और कृषि संबंद्ध क्षेत्र में, विगत 6 वर्षों में हुई दोगुना से अधिक की वृद्धि।
- सिंहस्थ-2028 के लिए 2 हजार 5 करोड़, गीता भवन और वृंदावन ग्राम योजना के लिये 100-100 करोड़ रूपये और श्रीकृष्ण पाथेय के लिए 10 करोड़ रूपये का प्रावधान।
- प्रदेश में बेहतर आवागमन के लिए मजरा-टोला सड़क योजना के अंतर्गत 100 करोड़ और सुगम परिवहन सेवा के लिए 80 करोड़ रुपए का प्रावधान।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के विकसित भारत@2047 के संकल्प को पूरा करने के लिए राज्य सरकार विकसित मध्यप्रदेश के लक्ष्य के साथ कार्य कर रही है।

राज्य का बजट 2025-26 इसी संकल्प की प्राप्ति की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है। प्रदेश निरंतर विकास के पथ पर अग्रसर है। राज्य सरकार ने पहली बार 4 लाख 21 हजार 32 करोड़ रुपए का बजट प्रस्तुत किया।

गांव, गरीब सहित सभी वर्गों के लिए व्यवस्थित योजना से मध्यप्रदेश विकास और जनकल्याण की दिशा में तेजी से आगे बढ़ रहा है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के विकसित भारत@2047 के संकल्प को पूरा करने के लिए राज्य सरकार विकसित मध्यप्रदेश के लक्ष्य के साथ कार्य कर रही है। राज्य का बजट 2025-26 इसी संकल्प की प्राप्ति की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है। प्रदेश निरंतर विकास के पथ पर अग्रसर है। राज्य सरकार ने पहली बार 4 लाख 21 हजार 32 करोड़ रुपए का बजट प्रस्तुत किया। यह बजट प्रावधान विगत वर्ष 2024-25 की अपेक्षा 15 प्रतिशत अधिक है। इतने बड़े बजट के बाद भी कोई टैक्स नहीं लगाया गया है और न ही कोई कटौती की गई है।

सरकार बनते ही अगले 5 साल में बजट को दोगुना करने का लक्ष्य तय कर लिया गया था। वर्ष 2025-26 का बजट इसी दिशा में अनुकरणीय प्रयास है। इस बजट में राज्य के गरीब, युवा, अन्नदाता किसान और नारी (GYAN) सहित सभी वर्गों की बेहतरी के संकल्प को पूरा किया गया है। सभी क्षेत्रों में विकास के लिए पर्याप्त धनराशि आवंटित की जा रही है। वर्ष- 1956 में मध्यप्रदेश का गठन हुआ, लेकिन वर्ष 2003-04 तक मात्र 20 हजार करोड़ रूपये का बजट था, अब हम इसे 21 गुना बढ़ाते हुए 4 लाख 21 हजार 32 करोड़

रुपए तक पहुंचे हैं। यह दर्शाता है कि मध्यप्रदेश को अग्रिम पंक्ति में खड़ा करने के लिए सरकार हर संभव प्रयास कर रही है। मध्यप्रदेश, भारत के सभी राज्यों में सबसे तेज गति से बढ़ने वाला प्रदेश है।

वर्ष 2025 का बजट मध्यप्रदेश की आशाओं, आकांक्षाओं का बजट है। राज्य सरकार अपने सभी संकल्पों को पूरा करने की ओर निरंतर आगे बढ़ रही है। प्रदेश की अर्थव्यवस्था को वर्ष@2047 तक 2 ट्रिलियन डॉलर (लगभग 250 लाख करोड़) बनाना है। यह केवल संख्यात्मक दस्तावेज नहीं, अपितु प्रदेश की जनता की जिंदगी बदलने वाला बजट है। प्रधानमंत्री श्री मोदी के संकल्पों के आधार पर राज्य सरकार का यह दूरदर्शी बजट सशक्त-समृद्ध-शक्तिशाली और खुशहाल मध्यप्रदेश बनाने की दिशा में मील का पत्थर साबित होगा। यह बजट जनकल्याण और सुशासन के साथ प्रदेश के विकास को गति प्रदान करेगा। गरीबों को सशक्त बनाएगा और प्रदेश के युवाओं के लिए बेहतर भविष्य का सृजन करेगा। बजट में महिलाओं, गरीब, किसान, अनुसूचित जाति और वंचित वर्गों को सशक्त बनाने के लिए विशेष कदम उठाए गये हैं।

- यह बजट अनुमानित राजकोषीय घाटा जीएसडीपी का 4 प्रतिशत अनुमानित रखते हुए वर्ष 2029-30 तक बजट के आकार एव प्रदेश की जीएसडीपी को दो गुना करने के लक्ष्य पर केन्द्रित है।
- कुल विनियोग की राशि 4,21,032 करोड़ रुपए है, जो विगत वर्ष की तुलना में 15 प्रतिशत अधिक है।
- अनुमानित राजस्व प्राप्तियां 2,90,879 करोड़ रुपए है, जिसमें राज्य के स्वयं के कर की राशि 1,09,157 करोड़ रुपए, केन्द्रीय करों में प्रदेश का हिस्सा 1,11,662 करोड़, करेत्तर राजस्व 21,399 करोड़ रुपए और केन्द्र से प्राप्त सहायता अनुदान 48,661 करोड़ रुपए शामिल हैं ।
- वर्ष 2025-26 में वर्ष 2024-25 के बजट अनुमान की तुलना में राज्य के कर राजस्व में 7 प्रतिशत की वृद्धि अनुमानित है।
- वर्ष 2025-26 में वर्ष 2024-25 के बजट अनुमान की तुलना में पूंजीगत परिव्यय में लगभग 31 प्रतिशत की वृद्धि अनुमानित है।

राज्य की उपलब्धियां

नीति आयोग द्वारा जारी राजकोषीय स्वास्थ्य सूचकांक प्रतिवेदन में राज्य को व्यय की गुणवत्ता में प्रथम स्थान दिया है। रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया ने भी अपनी रिपोर्ट में राज्य की इस उपलब्धि का उल्लेख किया है।

- वर्ष 2025-26 के बजट में विभिन्न क्षेत्रों में होने वाले व्यय के प्रतिशत में सर्वाधिक 17 प्रतिशत अधोसंरचना क्षेत्र के लिए प्रावधान है। अधोसंरचना क्षेत्र में वर्ष 2025-26 में विगत वर्ष 2024-25 की तुलना में 31 प्रतिशत की वृद्धि अनुमानित है।

राज्य की क्षेत्रवार उपलब्धियां

- राज्य शासन महिलाओं के सशक्तिकरण के लिये प्रतिबद्ध है, 6 वर्षों में जेण्डर बजट का आकार दोगुना हुआ है।
- कृषि और संबद्ध क्षेत्र में, विगत 6 वर्षों में दोगुना से अधिक की वृद्धि हुई है।
- विगत 6 वर्षों में बाल-बजट का प्रावधान दोगुना से अधिक हुआ।

नारी सशक्तिकरण

- मुख्यमंत्री लाड़ली बहना योजना में 18,669 करोड़ रुपए का प्रावधान है।
- लाड़ली लक्ष्मी योजना के अंतर्गत 1,183 करोड़ रुपए का प्रावधान है।
- मुख्यमंत्री श्रमिक सेवा प्रसूति सहायता के अंतर्गत 720 करोड़ रुपए का प्रावधान है।
- जल जीवन मिशन नेशनल रूरल ड्रिंकिंग वॉटर मिशन में 17,136 करोड़ रुपए का प्रावधान है।

अन्नदाता (किसान) के लिए

- अटल कृषि ज्योति योजना में 13,909 करोड़ रुपए का प्रावधान है।
- प्रधानमंत्री कृषक मित्र सूर्य योजना के अंतर्गत 447 करोड़ रुपए का प्रावधान है।
- मुख्यमंत्री किसान कल्याण योजना के अंतर्गत 5,220 करोड़ रुपए का प्रावधान है।
- प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के अंतर्गत 2,001 करोड़ रुपए का प्रावधान है।
- मुख्यमंत्री कृषक फसल उपार्जन सहायता योजना के अंतर्गत 1,000 करोड़ रुपए का प्रावधान है।
- समर्थन मूल्य पर किसानों से फसल उपार्जन पर बोनस भुगतान के अंतर्गत 1,000 करोड़ रुपए का प्रावधान है।
- मुख्यमंत्री कृषक उन्नति योजना के अंतर्गत 850 करोड़ रुपए का प्रावधान है।
- गौ-संर्वधन एवं पशुओं का संवर्धन के अंतर्गत 505 करोड़ रुपए का प्रावधान है।

गरीब कल्याण

- अटल गृह ज्योति योजना में 7132 करोड़ रुपए का प्रावधान है।
- मध्यप्रदेश विद्युत मंडल द्वारा 5 एच.पी. के कृषि पम्पों तथा एक बत्ती कनेक्शन को निःशुल्क विद्युत प्रदाय के लिए प्रतिपूर्ति के अंतर्गत 5299 करोड़ रुपए का प्रावधान शामिल हैं ।
- मुख्यमंत्री जनकल्याण (संबल) योजना में 700 करोड़ रुपए का प्रावधान है।
- प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना (आयुष्मान भारत) के अंतर्गत 1,277 करोड़ रुपए का प्रावधान किया है।
- पीएम जनमन योजना (आवास) के अंतर्गत 1,100 करोड़ रुपए का प्रावधान किया है।

युवा कल्याण

- निवेश प्रोत्साहन योजना में 2,000 करोड़ रुपए का प्रावधान है।
- एम.एस.एम.ई. प्रोत्साहन व्यवसाय निवेश संवर्धन/ सुविधा प्रदाय योजना के अंतर्गत 1,250 करोड़ रुपए का प्रावधान है।
- व्यावसायिक प्रशिक्षण का सुदृढ़ीकरण एवं विस्तार के अंतर्गत 902 करोड़ रुपए का प्रावधान है।
- मुख्यमंत्री मेधावी विद्यार्थी योजना के अंतर्गत 500 करोड़ रुपए का प्रावधान है।

बजट में हर वर्ग का कल्याण समाहित है

- बजट में अनुसूचित जनजाति (उप योजना) के लिए 47,296 करोड़ रुपए (23.5 प्रतिशत) है।
- अनुसूचित जाति (उप योजना) के लिए 32,633 करोड़ रुपए (16.2 प्रतिशत) है।
- स्वशासी तकनीकी संस्थाओं को सहायता के अंतर्गत 247 करोड़ रुपए का प्रावधान है।
- पॉलीटेक्निक संस्थाओं के अंतर्गत 232 करोड़ रुपए का प्रावधान है।
- मुख्यमंत्री कौशल अप्रेंटिसशिप योजना के अंतर्गत 150 करोड़ रुपए का प्रावधान है।
- खेलों इंडिया एम.पी. के अंतर्गत 180 करोड़ रुपए का प्रावधान है।
- खेल अकादमियों की स्थापना के अंतर्गत 170 करोड़ रुपए का प्रावधान है।
- स्टेडियम एवं खेल अधोसंरचना निर्माण के अंतर्गत 159 करोड़ रुपए का प्रावधान है।
- प्रदेश में आई.टी. पार्क की स्थापना के अंतर्गत 129 करोड़ रुपए का प्रावधान है।

अन्य मुख्य प्रावधान

- सिंहस्थ-2028 के अंतर्गत 2,005 करोड़ रुपए का प्रावधान है।
- वेदान्त पीठ की स्थापना के अंतर्गत 500

करोड़ रुपए का प्रावधान है।
- सी.एम. राइज के अंतर्गत 4,686 करोड़ रुपए का प्रावधान है।
- मेट्रो रेल के अंतर्गत 850 करोड़ रुपए का प्रावधान है।

कर्मचारियों का हितलाभ

राज्य सरकार ने निर्णय लिया है कि शासकीय सेवकों को वर्तमान में देय भत्तों का पुनरीक्षण, 1 अप्रैल, 2025 से 7 वें वेतनमान के सुसंगत स्तरों के अनुसार किया जाएगा।

इस वर्ष से लोक कल्याणकारी योजनाओं को प्रारंभ करने का निर्णय लिया गया है।
- श्रीकृष्ण पाथेय के लिए 10 करोड़ का प्रावधान है।
- मुख्यमंत्री कृषक उन्नति योजना के लिए 850 करोड़ रुपए का प्रावधान है।
- मुख्यमंत्री डेयरी विकास योजना के लिए 50 करोड़ रुपए का प्रावधान है।
- अविरल निर्मल नर्मदा के लिए 25 करोड़ रुपए का प्रावधान है।
- गीता भवन के लिए 100 करोड़ रुपए का प्रावधान है।
- मुख्यमंत्री वृंदावन ग्राम योजना के अंतर्गत 100 करोड़ रुपए का प्रावधान है।
- सी.एम. युवा शक्ति योजना में 25 करोड़ रुपए का प्रावधान है।
- देवी अहिल्याबाई कौशल विकास कार्यक्रम में 25 करोड़ रुपए का प्रावधान है।
- कामकाजी महिलाओं के लिये छात्रावास निर्माण के लिए 100 करोड़ रुपए का प्रावधान है।
- मुख्यमंत्री सुगम परिवहन सेवा के लिए 80 करोड़ रुपए का प्रावधान है।
- मुख्यमंत्री समग्र परिवार समृद्ध योजना के अंतर्गत 125 करोड़ रुपए का प्रावधान है।
- निजी निवेश से संपत्ति के निर्माण के लिए 100 करोड़ रुपए का प्रावधान है।
- मुख्यमंत्री मजरा-टोला सड़क योजना के लिए 100 करोड़ रुपए का प्रावधान किया गया है।

राज्य सरकार सभी क्षेत्रों में समान रूप से आगे बढ़ रही है। कृषकों की आय बढ़ाने के लिए गोपालन और दुग्ध उत्पादन को प्रोत्साहित किया जा रहा है। गावों और शहरों में सुगम परिवहन सेवा उपलब्ध कराने के लिए बजट में विशेष व्यवस्था की गई है।

प्रधानमंत्री श्री मोदी द्वारा नदी जोड़ो अभियान के अंतर्गत दी गई सौगातों से प्रदेश एक लाख हेक्टेयर में सिंचाई के लक्ष्य को प्राप्त करेगा। ▪

बिहार के लोगों का अमूल्य योगदान - विष्णुदत्त शर्मा

- **बिहार सनातन काल से दुनिया को लोकतंत्र की शिक्षा देने का कार्य कर रहा है।**
- **आपातकाल के बाद लोकतंत्र को पुनर्जीवित करने की शुरूआत भी बिहार से हुई।**
- **बिहार के छात्र आंदोलन से निकली सोच ही आज देश की सेवा कर रही है।**

भारत वसुधैव कुटुंबकम के साथ आगे बढ़ रहा है, लेकिन आजादी के बाद के सालों में राज्यों की संस्कृति और उत्सवों को दूसरे राज्यों में मनाना कुछ कम हो गया था। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने इस परंपरा को पुनर्जीवित करने का कार्य किया है। इसके लिए भाजपा ''एक भारत श्रेष्ठ भारत'' नाम का अभियान चला रही है। इसी अभियान के तहत वाराणसी में तमिल संगम का आयोजन किया गया और अब मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल, इंदौर सहित अन्य शहरों में बिहार राज्य के स्थापना दिवस को बिहार दिवस के रूप में मनाया जा रहा है। भाजपा बिहार स्थापना दिवस के मौके पर मध्यप्रदेश सहित देश के 25 राज्यों में 75 स्थानों पर पूर्वांचल और बिहार के लोगों के साथ बिहार का स्थापना दिवस मना रही है। प्रधानमंत्री जी संपूर्ण भारत को एक सूत्र में बांधने का कार्य कर रहे हैं। राज्यों की संस्कृति और परंपराओं को जीवित रखने का कार्य भारतीय जनता पार्टी कर रही है।

बिहार के लोग जहां हैं उस राज्य को अपने कर्मठता व कर्मशीलता से आगे ले जा रहे हैं

बिहार के लोग अपनी कर्मठता और कर्मशीलता से देश-विदेश में जहां भी हैं, उस राज्य व देश को आगे ले जाने का कार्य कर रहे हैं। जब मैंने छात्र राजनीति में कदम रखा तो मुझे किसी पर सबसे अधिक भरोसा था तो वह बिहार का रहने वाला एक भाई पर था। यह भरोसा बिहार के लोग अपनी मेहनत और ईमानदारी से जहां रहते हैं, वहां बना लेते हैं। बिहार के लोग कठिन परिस्थितियों में भी रहकर खुद को वहां की परिस्थिति में ढालकर उस शहर व राज्य के विकास के लिए दिन रात-प्रयासरत रहते हैं। मध्यप्रदेश के विकास में भी बिहार के लोगों का अमूल्य योगदान है। मध्यप्रदेश के विकास में योगदान देने के साथ बिहार राज्य को भी और आगे ले जाने के लिए अपनी-अपनी भूमिका निभाएं। मध्यप्रदेश में बिहार के लोगों को हमेशा आदर और सम्मान के भाव से देखा जाता है। बिहार ने मध्यप्रदेश में भाजपा को कई नेता दिए हैं। ▪

सशक्त और सक्षम मध्य प्रदेश बनाने वाला बजट - विष्णुदत्त शर्मा

- **सशक्त व समावेशी अर्थव्यवस्था का ब्लू प्रिंट है मध्यप्रदेश सरकार का आम बजट।**
- **बजट विकसित मध्यप्रदेश @2047 का विजन डाक्यूमेंट है।**
- **15 प्रतिशत वृद्धि के साथ बजट में कोई नया कर अधिरोपित नहीं और न किसी लोक कल्याणकारी योजनाओं में कटौती की गई।**
- **कर्ज के आंकड़ों की बजट के आकार से तुलना अप्रासंगिक, कांग्रेस का रवैया विकास विरोधी और जनविरोधी।**

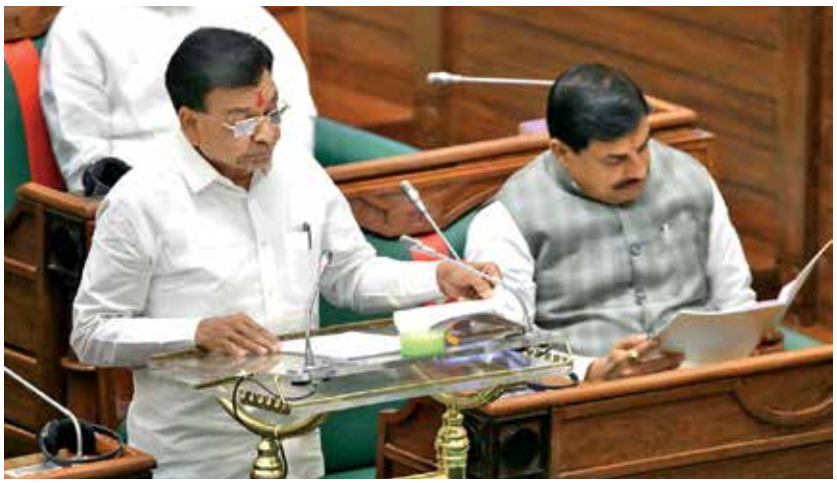

बजट पर विपक्ष का रवैया जन और विकास विरोधी है। कांग्रेस नेताओं को चाहिए कि इस बजट को लेकर वह मध्यप्रदेश की भाजपा सरकार की प्रशंसा करें, लेकिन पूर्वाग्रह से प्रेरित कांग्रेस और उसके नेता लगातार झूठ बोलकर जनता में भ्रम फैलाने की कोशिश कर रहे हैं।

4 लाख, 21 हजार 32 करोड़ रुपये का बजट पिछले वर्ष की तुलना में 15 प्रतिशत अधिक है तथा अब तक का सबसे बड़ा बजट है। मध्यप्रदेश सरकार का बजट सशक्त व समावेशी अर्थव्यवस्था का ब्लू प्रिंट है एवं विकसित मध्यप्रदेश@2047 का विजन डाक्यूमेंट भी है। बजट में न तो कोई नया कर लगाया गया है और किसी लोक कल्याणकारी योजनाओं में कटौती भी नहीं की गयी है। कर्ज के आंकड़ों की बजट के आकार से तुलना करना अप्रासंगिक है, कांग्रेस झूठ बोलकर भ्रम फैलाने का कुत्सित प्रयास कर रही है। बजट मध्यप्रदेश के विकास को सुनिश्चित करने के साथ-साथ प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी की 2047 तक भारत को विकसित राष्ट्र बनाने की भावना के अनुरूप विकसित और आत्मनिर्भर मध्यप्रदेश बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायेगा।

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी जिन चार जातियों गरीब, युवा, अन्नदाता और महिलाओं की बात करते हैं, मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की सरकार ने उन सभी जातियों को सशक्त और सक्षम बनाने के प्रावधान इस बजट में किए हैं। हर गरीब के जीवन को बदलने के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के संकल्प के अनुरूप मध्यप्रदेश सरकार के प्रयासों की झलक भी इस बजट में दिखाई देती है। प्रदेश सरकार ने शिक्षा और स्वास्थ्य के क्षेत्र में तो अनेक कदम उठाए ही हैं, प्रदेश के औद्योगिक विकास के प्रयासों को गति देने का काम भी इस बजट के माध्यम से किया गया है। मध्यप्रदेश के सर्वांगीण और समन्वित विकास की रूपरेखा इस बजट के माध्यम से प्रस्तुत की है। यह बजट 2047 तक भारत को विकसित राष्ट्र बनाने के संकल्प का विजन डाक्युमेंट है।

बजट पर विपक्ष का रवैया जन और विकास विरोधी है। कांग्रेस नेताओं को चाहिए कि इस बजट को लेकर वह मध्यप्रदेश की भाजपा सरकार की प्रशंसा करें, लेकिन पूर्वाग्रह से प्रेरित कांग्रेस और उसके नेता लगातार झूठ बोलकर जनता में भ्रम फैलाने की कोशिश कर रहे हैं। कांग्रेस के नेता भी अंदर से यह मानते होंगे कि यह बजट मध्यप्रदेश के सर्वांगीण विकास की परिकल्पना को साकार करेगा, लेकिन दिल्ली में बैठे अपने नेताओं को खुश करने के लिए बजट को लेकर झूठ बोल रहे हैं। वित्त वर्ष 2025-26 हेतु राजकोषीय घाटा की गणना एफआरबीएम (FRBM) के प्रावधान और भारत सरकार के दिशा निर्देशों के अनुसार ही है। यह केवल वर्ष 2025-26 में राजकोषीय घाटा एफआरबीएम (FRBM) की सीमा जीएसडीपी (GSDP) का 3 प्रतिशत ही अनुमानित है। राजकोषीय मापदण्डों की सीमा में राज्य कर प्राप्त करता है। कर्ज के सूचकांकों को जीएसडीपी के प्रतिशत तथा ब्याज भुगतान का राजस्व प्राप्तियों के प्रतिशत से देखा जाता है। इन दो मानकों का पालन प्रदेश सरकार कर रही है। कर्ज के आंकड़ों की बजट के आकार से तुलना अप्रासंगिक है। मध्यप्रदेश एफआरबीएम अधिनियम के अंतर्गत ऋण सीमा जीएसडीपी का 3 प्रतिशत है। केंद्र सरकार के स्पष्ट निर्देश हैं कि 15 वें वित्त आयोग की अवधि में पूर्व वर्षों की अनुपयोगित ऋण सीमा का उपयोग किया जा सकता है, इसको लेकर कांग्रेस जनता में भ्रम फैलाने का कुत्सित प्रयास कर रही है। वित्त वर्ष 2025-26 हेतु सकल राज्य घरेलू उत्पाद से राजकोषीय घाटा का 4.66 प्रतिशत अनुमानित है जिसमें सामान्य ऋण सीमा 3 प्रतिशत तथा पूंजी

निवेश के लिए राज्यों को विशेष सहायता योजना अतंर्गत अनुमानित 11,000 करोड़ (जीएसडीपी का 0.65 प्रतिशत) एवं भारत सरकार के दिशा निर्देशों के अनुसार वर्ष 2021-22 से 2023-24 में अनुपयोगित ऋण सीमा (जीएसडीपी का 1.01 प्रतिशत) है।

भाजपा की सरकार मध्यप्रदेश को सशक्त, संपन्न, समृद्ध तथा देश का नंबर एक राज्य बनाना चाहती है। सरकार की इस सोच की झलक बजट में भी दिखाई देती है। प्रदेश सरकार ने 2047 तक राज्य की जीडीपी 2 ट्रिलियन डॉलर यानी 250 लाख करोड़ रुपए तक पहुंचाने का लक्ष्य तय किया है। प्रदेश की प्रति व्यक्ति आय 1.42 लाख से 22.35 लाख पर पहुंचाने का लक्ष्य तय किया है। इस दिशा में भारतीय जनता पार्टी की सरकार ने जो बजट प्रस्तुत किया है, उसकी महत्वपूर्ण भूमिका होगी। प्रदेश के विकास को सुनिश्चित करने की जो भावना बजट में दिखाई देती है, हम भाजपा के सभी कार्यकर्ता उसके लिए मिलकर प्रयास करेंगे।

मध्यप्रदेश सरकार का बजट गरीबी और अशिक्षा जैसी समस्याओं से मुक्ति दिलाने में दूरगामी परिणाम देगा। ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट (जीआईएस) में आए निवेश प्रस्तावों के फलीभूत होने पर लाखों की संख्या में नवीन रोजगार सृजित होंगे। लोगों को गरीबी से मुक्ति दिलाने के लिए जिला विकास सलाहकार समिति का गठन किया जा रहा है। मुख्यमंत्री समृद्ध परिवार योजना में गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन कर रहे परिवारों को एक-दो योजनाओं की जगह योजनाओं का पैकेज प्रदान किया जाएगा। प्रधानमंत्री गरीब कल्याण योजना के अंतर्गत 1 करोड़ 33 लाख लोगों को निःशुल्क राशन दिया जा रहा है और राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन के जरिए लोगों के स्वास्थ्य की भी चिंता सरकार कर रही है। स्थानीय निकायों को अनुदान के लिए 4 हजार 366 करोड़ का प्रावधान किया गया है, जिससे ग्रामीण क्षेत्र के विकास के साथ लोगों की गरीबी दूर करने का कार्य किया जाएगा। इस बजट में अनुसूचित, अनुसूचित जनजातियों के सर्वांगीण विकास के लिए बड़ी धनराशि का प्रावधान किया गया है।

सक्षम युवा शक्ति ही विकास का आधार होती है। यही सोच प्रदेश सरकार के बजट में दिखाई देती है। इस दृष्टि से बजट में आईआईटी इंदौर के सहयोग से उज्जैन में डीप टेक रिसर्च एंड डिस्कवरी कैंपस की स्थापना तथा अगले पांच सालों में प्रदेश के हर संभाग में आईआईटी स्तर के मध्य प्रदेश इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी खोले जाने का प्रावधान किया गया है। पीएम ऊषा परियोजना के अंतर्गत 8 यूनिवर्सिटी और 27 कॉलेजों में इन्फ्रास्ट्राक्चर डेवलपमेंट के लिए 565 करोड़ के कार्य हो रहे हैं। प्रदेश में डिजिटल यूनिवर्सिटी और राष्ट्रीय रक्षा विश्वविद्यालय की स्थापना की बात कही गई है। युवाओं में कौशल विकास के लिए लोकमाता अहिल्याबाई कौशल विकास कार्यक्रम लागू किया जाएगा। खेलों के प्रोत्साहन के लिए 9 अंतरराष्ट्रीय हॉकी टर्फ, 5 सिंथेटिक एथलेटिक्स ट्रैक और 56 खेल स्टेडियम शुरू होंगे। साथ ही सीएम युवा शक्ति योजना में सभी विधानसभा क्षेत्रों में एक सर्व सुविधायुक्त स्टेडियम बनाया जाएगा जिसके लिए 25 करोड़ का प्रावधान किया गया है।

कृषि और किसानों की बेहतरी के लिए समर्पित मध्यप्रदेश सरकार की सोच बजट में भी दिखाई देती है। इसमें धान की प्रोत्साहन राशि के लिए 850 करोड़ का तथा फसल बीमा योजना के लिए 2 हजार करोड़ का प्रावधान किया गया है। मुख्यमंत्री किसान कल्याण योजना में 5 हजार 220 करोड़ की राशि दी जाएगी। किसानों को सौर ऊर्जा पंप देने के लिए पीएम कृषक मित्र सूर्य योजना में 447 करोड़ का प्रावधान किया गया है। मुख्यमंत्री कृषक उन्नति योजना में विशेष प्रोत्साहन राशि का प्रावधान किया गया है। राष्ट्रीय उद्यानिकी मिशन में 100 करोड़ का प्रावधान है तथा खेती में अनुसंधान को बढ़ावा देने के लिए कृषि विश्वविद्यालय जबलपुर और कृषि विश्वविद्यालय ग्वालियर को 40 करोड़ रुपये दिये जाएंगे। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी की सरकार के अनुरूप मध्यप्रदेश सरकार भी नारी शक्ति के सशक्तीकरण के लिए प्रयासरत है। बजट में 1.27 करोड़ लाड़ली बहनों के लिए 18669 करोड़ का प्रावधान किया गया है। इस योजना की हितग्राही महिलाओं को पेंशन योजना से जोड़ा जाएगा। आंगनबाड़ी और उप स्वास्थ्य केंद्रों का एक ही भवन बनाने के लिए एकीकृत अधोसंरचना योजना लागू होगी। आंगनवाड़ी केंद्रों के भवन निर्माण के लिए 350 करोड़ का बजट प्रावधान किया गया है। आंगनवाड़ी सेवाओं के लिए 3729 करोड़ का प्रावधान किया गया है। ▪

महिलाओं की भूमिका अहम होगी - विष्णुदत्त शर्मा

जी-20 समिट की मेजबानी के दौरान प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने दुनिया को यह कहकर संदेश दिया था कि आने वाला समय वूमेन लीड डेवलपमेंट यानी महिला नेतृत्व आधारित विकास पर केंद्रीत होगा। प्रधानमंत्री श्री मोदी जी की उस भावना को प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव आगे बढ़ाकर कार्य कर रहे हैं और चाहे स्व सहायता समूह, लाड़ली लक्ष्मी, कन्यादान योजना सहित अन्य योजनाओं के माध्यम से महिला शक्ति को सशक्त करने का काम किया जा रहा है।

प्रधानमंत्री जी ने महिलाओं को सशक्त करने की दिशा में 33 प्रतिशत आरक्षण की व्यवस्था लोकसभा और विधानसभा में की है। आगामी समय में वूमेन लीड डेवलपमेंट

ही नहीं, बल्कि संसद और विधानसभा पहुंचकर योजनाओं की रणनीति बनाने में भी महिलाओं की अहम भूमिका होगी। देश में आदिवासी महिला राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू जी को राष्ट्रपति बनाने का काम अगर किसी ने किया है तो भारतीय जनता पार्टी की सरकार में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने किया है। देश में प्रधानमंत्री जी और प्रदेश में मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में एक नहीं अनेक कार्य महिला सशक्तिकरण को लेकर किए जा रहे हैं, जिसका बड़ी संख्या में महिलाओं को लाभ मिलने के साथ-साथ उन्हें अपना जीवन स्तर सुधारने में भी मदद मिल रही है। ▪

प्रधानमंत्री जी विक्रमादित्य की तरह जनता की सेवा का कार्य कर रहे - डॉ. मोहन यादव

- **लोकतंत्र की रक्षा के लिए जनसेवक बनकर कार्य करें युवा, उद्यमी व प्रोफेशनल्स।**
- **भारतीय जनता पार्टी सच्चे अर्थों में जनता की सेवा करने वाला राजनीतिक दल है।**

पहले के समय में राजा हुआ करते थे। शासन एक व्यक्ति के हाथ में होता था, राजा को हरा दिया तो पूरे देश पर कब्जा हो जाया करता था। गुलाम होने से पहले भारत के अंतिम सम्राट पृथ्वीराज चौहान थे। लेकिन इसके पहले का शासन तंत्र बहुत अच्छा था। भगवान श्रीकृष्ण और सम्राट विक्रमादित्य की कार्य प्रणाली से शासन व्यवस्था को समझा जा सकता है। भगवान श्रीकृष्ण ने किसी राज्य पर कब्जा नहीं किया, दुष्टों का संहार करने के बाद सत्ता दूसरे लोगों को सौंपते चले गए। इसी तरह सम्राट विक्रमादित्य ने अपने शासन में नवरत्न बनाए थे। इन्हीं नवरत्नों को जनता की सेवा के लिए नियुक्त कर दिया था। विक्रमादित्य सम्राट होते हुए कभी राजा या सम्राट कहलाना पसंद नहीं करते थे, वे जनता का सेवक ही कहलाना पसंद करते थे। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी विक्रमादित्य की तरह जनता की सेवा कर रहे हैं और खुद को जनता का सेवक मानते हैं। यह मैं आप लोगों को इसलिए बता रहा था, क्योंकि जब तक आप गुलामी क्यों मिली और कैसे मिली यह नहीं समझेंगे, तब तक सच्चे अर्थों में आजादी का महत्व समझ में कम आएगा। आक्रांतों ने जनता पर शासन किया और भारत को लूटकर चले गए। लोकतंत्र की सच्ची ताकत जनता के पास होनी चाहिए। इसलिए प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने लोकतंत्र की रक्षा के लिए राजनीति से परिवारवाद को समाप्त करने और एक लाख ऐसे युवाओं को राजनीति में लाने का आह्वान किया है, जिसके परिवार अभी राजनीति में नहीं हैं। जवाहरलाल नेहरू ने सोमनाथ मंदिर जाने से इंकार कर दिया था, लेकिन तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने सोमनाथ मंदिर जाकर उसका उद्घाटन किया। कांग्रेस और उसकी पार्टी के नेता राम मंदिर का विरोध कर रहे थे, जब भव्य राम मंदिर का निर्माण हो गया तो उनके दर्शन करने आज तक नहीं पहुंचे।

भाजपा सरकार ने मध्यप्रदेश की औद्योगिक विकास दर को 0.02 प्रतिशत से 12 प्रतिशत तक पहुंचाया।

सत्ता की ताकत सुनीतियों के बल पर होती है, मध्यप्रदेश में 2003 से पहले कांग्रेस की सरकार थी, लेकिन प्रदेश के विकास के लिए कोई कार्य नहीं किया गया। 2003 में जब भारतीय जनता पार्टी की सरकार बनी, तब प्रदेश की औद्योगिक विकास दर 0.02 प्रतिशत के करीब थी। भारतीय जनता पार्टी ने सुशासन और कल्याणकारी नीतियों के कारण मध्यप्रदेश को देश के अग्रणी राज्यों में लाकर खड़ा कर दिया है। वर्तमान में मध्यप्रदेश की औद्योगिक विकास दर 12 प्रतिशत पहुंच गई है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी देश की राजनीति से परिवारवाद को समाप्त करने के लिए एक लाख प्रोफेशनल्स, उद्यमियों और अलग-अलग क्षेत्र के प्रतिभावान लोगों, एंटरप्रेन्योर को राजनीति में लाने का आह्वान इसीलिए किया है कि अलग-अलग क्षेत्र के आप लोग अपने-अपने क्षेत्र के जानकार व महारथी हैं। देश और प्रदेश के विकास में नीतियों का महत्वपूर्ण योगदान होता है।

आप सभी अपने-अपने क्षेत्र के विकास के लिए बनाई जाने वाली नीतियों में महत्वपूर्ण सुझाव देंगे और नीतियों को बनाने में अपनी भूमिका निभाएंगे, जिससे देश और प्रदेश आगे बढ़ेगा और 2047 तक भारत को विश्व गुरू बनाने का सपना साकार होगा। ▪

विक्रमादित्य सम्राट होते हुए कभी राजा या सम्राट कहलाना पसंद नहीं करते थे, वे जनता का सेवक ही कहलाना पसंद करते थे। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी विक्रमादित्य की तरह जनता की सेवा कर रहे हैं और खुद को जनता का सेवक मानते हैं।

यह मैं आप लोगों को इसलिए बता रहा था, क्योंकि जब तक आप गुलामी क्यों मिली और कैसे मिली यह नहीं समझेंगे, तब तक सच्चे अर्थों में आजादी का महत्व समझ में कम आएगा।

हम बस एक राष्ट्र धर्म जानते हैं- हितानंद

- **भाजपा दुनिया की सबसे बड़ी पार्टी, इसमें आपका स्वागत है।**
- **भाजपा की नीति राष्ट्र नीति है।**

भारतीय जनता पार्टी एक ऐसा संगठन है, जो हमारा परिचय भारत से कराना चाहता है, क्योंकि भाजपा का मानना है कि हमें भारत को ही जानना है, भारत को ही पहचाना है और भारत की ही मानना है। 'राष्ट्र को ही देव मानकर चले हैं, हम बस एक राष्ट्र धर्म जानते हैं।'

भारतीय जनता पार्टी एक ऐसा संगठन है, जो हमारा परिचय भारत से कराना चाहता है, क्योंकि भाजपा का मानना है कि हमें भारत को ही जानना है, भारत को ही पहचाना है और भारत की ही मानना है। 'राष्ट्र को ही देव मानकर चले हैं, हम बस एक राष्ट्र धर्म जानते हैं।' भारतीय जनता पार्टी की शुरुआत जनसंघ के रूप में हुई। देश जब आजाद होकर एक गणतंत्र बना, तो उसके संविधान में यह लिखा था कि देश के अविभाज्य अंग जम्मू-कश्मीर का संविधान अलग होगा, ध्वज अलग होगा और वहां का प्रधान भी अलग होगा। तत्कालीन नेहरू सरकार में कैबिनेट मंत्री डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी ने इसका विरोध किया और जनसंघ की स्थापना की। डॉ. मुखर्जी ने इसके विरोध में संघर्ष किया और इसी दौरान 23 जून, 1953 को अपना बलिदान भी दे दिया। 5 अगस्त, 2019 को प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी की सरकार ने कश्मीर से धारा 370 को हटाकर दो विधान, दो निशान और दो प्रधान की व्यवस्था को समाप्त कर दिया। भाजपा की विचारधारा में दूसरा तत्व सनातन है। हमारा मानना है कि इस देश के मूल में अगर कोई है, तो वो हिंदू है और उसी के नाम पर देश का नाम हिंदुस्तान पड़ा है। गांधी जी का सपना ग्रामोदय और पं. दीनदयाल उपाध्याय जी का सपना अंत्योदय हमारे लक्ष्यों में शामिल हैं। कोर्ट के माध्यम से सहमति के आधार पर राम मंदिर का विवाद हल हुआ। अगस्त, 2020 में राम मंदिर का भूमिपूजन हुआ और 22 जनवरी, 2024 को मंदिर का लोकार्पण भी हो गया। भाजपा की सरकारें सनातन को किस तरह आगे बढ़ा रही हैं, बनारस का काशी विश्वनाथ कॉरिडोर और उज्जैन का महाकाल महालोक इसके उदाहरण हैं। हम भारतीय संस्कृति के पुनरुत्थान का काम कर रहे हैं। गांवों में भारत की आत्मा बसती है, उनके उत्थान का काम कर रहे हैं और विभिन्न योजनाओं के माध्यम से समाज के अंतिम व्यक्ति के उत्थान का काम कर रहे हैं।

1951 में जनसंघ की स्थापना हुई और 1952 में पहला चुनाव हुआ। उस चुनाव में हमें सिर्फ 3 प्रतिशत वोट मिले, लेकिन चुनाव के माध्यम से हम अपनी विचारधारा को घर-घर तक पहुंचाने में सफल रहे। 1957 के चुनाव में 9 प्रतिशत वोट प्राप्त किए, 1962 में 16 प्रतिशत और 1967 के चुनाव में हम मध्यप्रदेश में संविद सरकार के रूप में प्रतिनिधित्व देने की स्थिति में आ गए थे। करपात्री जी महाराज के गौरक्षा आंदोलन से लेकर अन्ना हजारे और बाबा रामदेव के आंदोलन तक को हमने मूक समर्थन दिया। जो देश का भला कर रहा है, हम उसके साथ खड़े रहेंगे। इसी बीच 1977 में कांग्रेस की सरकार ने आपातकाल लगाकर देश के लोकतंत्र को कुचल दिया। उस समय भारतीय जनसंघ ने लोकनायक जयप्रकाश नारायण जी के नेतृत्व में चल रहे आंदोलन का समर्थन किया और अपनी पार्टी का जनता पार्टी में विलय कर दिया। 1977 में कांग्रेस चुनाव हार गई।

जनता पार्टी की सरकार बनी, जिसमें हमारे नेता भी शामिल हुए। लेकिन वो सरकार तीन साल ही चल सकी। हमारे नेताओं स्व. अटल बिहारी वाजपेयी, श्री लालकृष्ण आडवाणी जी आदि ने जनता पार्टी से त्यागपत्र दिया और 6 अप्रैल 1980 को भारतीय जनता पार्टी की स्थापना हुई। भाजपा को सिर्फ दो सीटें मिली। कोई नया काम जब प्रारंभ होता है तो पहले उसका उपहास उड़ाया जाता है।

1950 और 1960 के दशक में लोग हमारा उपहास उड़ाते थे। 1967 में जब हम सरकार में आए, तो हमारा विरोध और दमन शुरू हो गया, जो 1980 के बाद तक चला। लेकिन अब हम स्वीकार्यता की ओर बढ़ रहे हैं। लोग हम से जुड़ना चाहते हैं।

नेहरू जी ने संसद में कहा था कि हम देश की एक इंच भूमि पर भी भगवा नहीं फहराने देंगे, तो आज पूरे देश में भगवा फहरा रहा है। सबसे ज्यादा सरपंच, जनपद और जिला पंचायत सदस्य, नगर पालिका, नगर निगम के पार्षद, विधायक और सांसद भारतीय जनता पार्टी के हैं। हमने शून्य से शिखर तक की यात्रा की है। गंगा सागर से गंगोत्री की यात्रा करते हुए भाजपा हर मापदंड पर आज दुनिया की सबसे बड़ी पार्टी है। ▪

बहनों के लिए हर संभव प्रयास डॉ. मोहन यादव

- **प्रधानमंत्री श्री मोदी जी के नेतृत्व में नारी सशक्तिकरण का करेंगे हर संभव प्रयास।**
- **प्रदेश से शुरू हुई मुख्यमंत्री लाड़ली बहना योजना का देश में हो रहा है अभिनंदन।**
- **सशक्त नारी से ही प्रदेश और देश बन रहा सशक्त और समृद्ध।**

सशक्त नारी से ही प्रदेश और देश आज न केवल सशक्त बन रहा है, बल्कि समृद्ध भी हो रहा है। महिलाओं को अधिकार देने से समाज में सकारात्मक बदलाव आते हैं।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में महिलाओं को समर्थ और सशक्त बनाने के लिए हर संभव प्रयास जारी हैं। सशक्त नारी से ही प्रदेश और देश आज न केवल सशक्त बन रहा है, बल्कि समृद्ध भी हो रहा है। महिलाओं को अधिकार देने से समाज में सकारात्मक बदलाव आते हैं। भारत विश्व का एक मात्र ऐसा देश है जो अनादिकाल से मातृ शक्ति का सम्मान करता रहा है। सनातन संस्कृति में शक्ति, धन आदि को देवियों के माध्यम से अभिव्यक्त किया गया है। अगले लोकसभा चुनाव के बाद संसद में महिलाओं को मिले 33 प्रतिशत आरक्षण की शक्ति परिलक्षित होगी और देश का संचालन महिलाओं के हाथों में होगा। नारी सशक्तिकरण के लिये सरकारी नौकरियों में आरक्षण 33 प्रतिशत से बढ़ाकर अब प्रदेश में 35 प्रतिशत आरक्षण दिया जा रहा है। राज्य सरकार महिला उद्यमिता को भी प्रोत्साहित कर रही है। प्रदेश में स्व-सहायता समूहों की संख्या 5 लाख से अधिक है। बहनों को उद्योग स्थापना के लिए बैंक लोन में अनुदान भी दिया जा रहा है।

एक करोड़ 27 लाख बहनों के खाते में 1552.73 करोड़ रूपये की राशि अंतरित की गई है। पिछले एक वर्ष जनवरी 2024 से फरवरी 2025 तक लाड़ली बहनों के खाते में 22 हजार 227.89 करोड़ रूपये की राशि अंतरित की गई है। हम हर महीने लाड़ली बहनों के खातों में राशि भेजकर रक्षाबंधन मना रहे हैं। लाड़ली बहना योजना कभी नहीं रुकेगी, राज्य सरकार के पास संसाधनों की कोई कमी नहीं होगी। नारी सशक्तिकरण के लिए प्रदेश से आरंभ की गई इस योजना का देशभर में अभिनंदन हो रहा है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के मार्गदर्शन में 29 लाख बहनों को प्रधानमंत्री उज्जवला गैस योजना की 55 करोड़ 95 लाख की अनुदान राशि सिलेंडर रिफिलिंग के लिए अंतरित की गई है। अब तक 825 करोड़ की राशि बहनों को जारी की जा चुकी है। उज्जवला गैस कनेक्शन के अंतर्गत जारी राशि से महिलाओं को प्रतिदिन ईंधन जुटाने की मजबूरी से मुक्ति मिली है। नारी सशक्तिकरण के लिए चल रहे अभियान में यह गतिविधियां महत्वपूर्ण योगदान दे रही हैं। इस दिशा में राज्य सरकार अपने प्रत्येक संकल्प को पूरा करने के लिए प्रतिबद्ध है।

मुख्यमंत्री कन्या विवाह योजना अंतर्गत 19 हजार से अधिक बहनों का कन्यादान सरकार की ओर से किया गया है। योजना में हो रहे सामूहिक विवाह सामाजिक समरसता, सौहार्द और एकता का संदेश दे रहे हैं। यह अभियान पवित्रता का संकल्प है, जिसमें अब तक 115 करोड़ से अधिक की राशि खर्च की जा चुकी है। आहार अनुदान योजना और प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना आदि के माध्यम से बहनों को सहायता प्रदान करते हुए समर्थ बनाया जा रहा है। प्रधानमंत्री आवास योजना में शहरी क्षेत्र में देश में चार करोड़ से अधिक मकान बनने जा रहे हैं। प्रधानमंत्री श्री मोदी के नेतृत्व में लागू इस योजना के अंतर्गत ग्रामीण और शहरी क्षेत्र में प्रत्येक पात्र व्यक्ति को पक्का मकान उपलब्ध कराया जाएगा।

बच्चियों, बालिकाओं, बेटियों के साथ दुराचार करने वालों के विरूद्ध सरकार कठोरतम कदम उठायेगी। दोषियों को फांसी की सजा भी दिलवायेंगे। किसी भी दोषी को किसी भी परिस्थिति में नहीं बख्शा जाएगा। मध्यप्रदेश में जोर जबरदस्ती या बहला फुसलाकर विवाह और धर्म परिवर्तन कराने वालों के खिलाफ सख्त कार्रवाई के लिये धार्मिक स्वतंत्रता अधिनियम लागू है। धर्मान्तरण, दुराचरण जैसी किसी भी घटना को हमारी सरकार बर्दाश्त नहीं करेगी। राज्य सरकार ने शासकीय महिला कर्मचारियों को सात दिन का अतिरिक्त आकस्मिक अवकाश और संविदा कर्मचारी बहनों को 180 दिवस का प्रसूति अवकाश देने की व्यवस्था की गई है।

राज्य सरकार हर कदम पर बहनों के साथ है, वे आगे बढ़ें, सरकार उन्हें हर संभव सहायता और मार्गदशन उपलब्ध कराएगी। ▪

हर क्षेत्र में आगे बढ़ रही महिलाएं

विष्णुदत्त शर्मा

- **महिला सशक्तिकरण नारा नहीं, इसे धरातल पर उतार रही है भाजपा सरकारें।**
- **प्रधानमंत्री जी की नीतियों से महिलाएं हो रहीं आर्थिक रूप से सशक्त।**
- **भाजपा महिलाओं की राजनीति में भागीदारी बढ़ाने का कार्य कर रही है।**

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी तथा केंद्रीय नेतृत्व की भावना के अनुरुप भाजपा संगठन महिला नेतृत्व को उभारने की दिशा में लगातार आगे बढ़ाने का काम कर रहा है।

आने वाला समय भारत का है और हमारे प्रधानमंत्री वूमन लेड डेवलपमेंट यानी महिला आधारित विकास की बात करते हैं। उनका कहना है कि आने वाले समय में दुनिया महिला नेतृत्व के आधार पर विकास करेगी।

भारतीय जनता पार्टी के गरीबी हटाओ और महिला सशक्तिकरण सिर्फ नारे नहीं हैं, बल्कि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी और मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व वाली भाजपा की केंद्र और राज्य सरकारें इसे धरातल पर साकार कर रही हैं। महिलाओं को समाज की मुख्यधारा में किस प्रकार लाया जाए और किस तरह से उन्हें विभिन्न क्षेत्रों में नेतृत्व करने के लिए सक्षम बनाया जाए, इसके व्यवहारिक प्रयास अगर किसी ने किए हैं, तो वह प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ही हैं। भाजपा महिलाओं की राजनीति में भागीदारी बढ़ाने का कार्य कर रही है।

महिला सशक्तिकरण के लिए भाजपा की केंद्र और राज्य सरकारें तो अपनी योजनाओं के माध्यम से प्रयास कर ही रही हैं, भाजपा के संगठन ने भी महिला नेतृत्व को आगे बढ़ाने के प्रयास किए हैं। इसी का परिणाम है कि आज पार्टी में जिला अध्यक्ष से लेकर मंडल अध्यक्ष और बूथ समिति के अध्यक्ष पद पर भी बड़ी संख्या में महिलाऐं चुनी गई हैं। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी तथा केंद्रीय नेतृत्व की भावना के अनुरूप भाजपा संगठन महिला नेतृत्व को उभारने की दिशा में लगातार आगे बढ़ाने का काम कर रहा है। आने वाला समय भारत का है और हमारे प्रधानमंत्री वूमन लेड डेवलपमेंट यानी महिला आधारित विकास की बात करते हैं। उनका कहना है कि आने वाले समय में दुनिया महिला नेतृत्व के आधार पर विकास करेगी। इसी भावना से प्रेरित होकर उन्होंने महिलाओं के सशक्तिकरण और विकास के लिए अनेक योजनाएं लागू की हैं। विकास के लिए जरूरी है कि पुरुष और महिलाऐं कंधे से कंधा मिलाकर चलें, मिलकर प्रयास करें। हम सभी को इस दिशा में विचार करने की जरूरत है। विशेषकर हमारी माताओं-बहनों को अपनी परंपरागत सोच के दायरे से बाहर निकलकर देश और दुनिया के विकास में योगदान देना होगा।

महिलाऐं अब कमजोर नहीं हैं, बल्कि वे जीवन के हर क्षेत्र में काम कर रही हैं। आज देश के प्रधानमंत्री जी की सुरक्षा व्यवस्था भी महिलाऐं संभालती हैं। वो मुख्यमंत्री जी का सारा काम संभाल रही हैं। पहले की सरकारें महिला सशक्तिकरण की बातें तो करती रहीं, लेकिन उन्होंने कभी इसके बारे में गंभीरता से नहीं सोचा। 75 सालों तक ये लोग सिर्फ बातें करते रहे। संसद में इसके लिए कई बार बिल लाया गया, लेकिन उसे पारित कराने में किसी ने रुचि नहीं ली। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी की सरकार ने नारी शक्ति वंदन अधिनियम के माध्यम से लोकसभा और विधानसभाओं में 33 प्रतिशत आरक्षण प्रदान किया।

महिलाओं के लिए आरक्षण का प्रावधान करके भाजपा की सरकार ने कोई उपकार नहीं किया, बल्कि पार्टी यह चाहती है कि देश और प्रदेश के संचालन के लिए जो निर्णय हों, जो

कानून बनें, उनमें महिलाओं की भी भागीदारी हो। इसके लिए जरूरी है कि हमारी माताऐं-बहनें सांसद और विधायक के रूप में चुनकर आएं।

एक गरीब मां के बेटे श्री नरेंद्र मोदी जी जब प्रधानमंत्री बने, तो उन्हें हर गरीब के जीवन की कठिनाइयों का अनुभव था। उन्होंने कहा कि अब देश में कोई गरीब झोपड़ी में नहीं रहेगा। इसके लिए उन्होंने प्रधानमंत्री आवास योजना लागू की।

इस योजना में भी उन्होंने बहनों को सशक्त बनाने के लिए यह प्रावधान किया कि घर की मालकिन हमारी बहनें भी होंगी। प्रधानमंत्री जी ने देखा था कि चूल्हे पर खाना बनाने में उनकी मां को कितना कष्ट होता था। धुएं के कारण खांसते-खांसते उनकी हालत खराब हो जाती थी। आजादी के बाद किसी भी सरकार ने माताओं-बहनों को होने वाली इस पीड़ा के बारे में नहीं सोचा।

माताओं-बहनों को इस परेशानी से बचाने के लिए प्रधानमंत्री जी ने उज्ज्वला योजना लागू की और देश की करोड़ों माताओं-बहनों को गैस कनेक्शन प्रदान किए। वो गैस कनेक्शन जो कभी सांसदों, विधायकों की सिफारिश से मिलते थे, प्रधानमंत्री जी ने देश के 13 -14 करोड़ परिवारों को मुफ्त गैस कनेक्शन दे दिए।

प्रधानमंत्री जी जिन चार जातियों की बात करते हैं, वो गरीब, युवा, अन्नदाता और महिलाऐं हैं। विभिन्न योजनाओं के माध्यम से इनमें से प्रत्येक जाति को सशक्त बनाने के प्रयास किए जा रहे हैं। बहनों के आर्थिक सशक्तिकरण के लिए मध्यप्रदेश सरकार ने लाड़ली बहना योजना लागू की है और हमारे मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने इस योजना की किश्त के रूप में 1500 करोड़ से अधिक की राशि बहनों के खातों में ट्रांसफर की है।

प्रधानमंत्री जी हमारी बहनों, बेटियों को प्रशिक्षण देकर उन्हें ड्रोन दीदी बना रहे हैं। ये सारे प्रयास बहनों को आत्मनिर्भर बनाने के लिए हैं। देश तब आत्मनिर्भर हो सकता है, जब हर घर आत्मनिर्भर होगा। लेकिन दुर्भाग्य से हर घर को आत्मनिर्भर बनाने की बात किसी ने नहीं सोची। ये काम हमारी माताओं-बहनों को ही करना है। परिवार को आत्मनिर्भर बनाना, उसे संस्कार देना ये हमारी माता-बहनों की ही जिम्मेदारी है, वही हमारी संस्कृति की सबसे बड़ी रक्षक भी हैं। महिला दिवस के अवसर पर सभी बहनें ये संकल्प लें कि हम आत्मनिर्भर बनेंगे, परिवार को आत्मनिर्भर बनाएंगे और प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के 2047 तक भारत को विकसित राष्ट्र बनाने के संकल्प की पूर्ति के लिए देश को आत्मनिर्भर बनाने में योगदान देंगे। ▪

मोदी जी गरीबों के मसीहा विष्णुदत्त शर्मा

- **प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने गरीबों के जीवन को बदलने का काम किया।**
- **अंबेडकर जयंती पर प्रदेश के ट्राइबल इलाकों में खुलेंगे जन औषधि केंद्र।**
- **पार्टी का चिकित्सा प्रकोष्ठ डॉक्टरों से मिलकर जेनेरिक दवाईयां लिखने का करेगा आग्रह।**
- **जन औषधि केंद्र में 30 से 80 प्रतिशत दवाइयां सस्ती मिल रहीं हैं।**

2014 में जबसे प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने देश की कमान संभाली है, तब से उन्होंने गरीबों के जीवन को बदलने का काम किया है। सही मायनों में प्रधानमंत्री श्री मोदी जी गरीबों के मसीहा बनकर उभरे हैं। प्रधानमंत्री जी के पहले सरकारों को गरीब कल्याण की दिशा में कोई विचार नहीं आया। श्री मोदी जी ने गरीबी को पास से देखा था और उसे महसूस किया था, इसलिए देश के गरीबों के जीवन में किस तरह से बदलाव लाया जाए उसका संकल्प लेकर काम किया। यही कारण है कि आज आयुष्मान योजना में 5 लाख तक का इलाज मुफ्त में होता है और 70 साल के बुजुर्गों को भी योजना का लाभ मिलता है।

प्रधानमंत्री श्री मोदी जी स्वस्थ भारत और विकसित भारत की दिशा में तेजी से काम कर रहे हैं, ताकि देश के लोग स्वस्थ रहेंगे तो भारत विकसित भारत की कतार में 2047 तक खड़ा होगा। देश भर में कई योजनाएं प्रधानमंत्री श्री मोदी जी ने गरीबों के कल्याण के साथ-साथ महिलाओं के उत्थान और युवाओं के विकास के लिए शुरू की, जिसका लाभ आज बड़े स्तर पर लोगों को मिल रहा है।

आज देश भर में 15 हजार जन औषधि केंद्रों पर 30 से 80 प्रतिशत तक सस्ती दवाईयां मिल रही हैं। आज 5 हजार की दवाईयां जन औषधि केंद्र पर मात्र 500 रुपए में उपलब्ध हो जाती है। जन औषधि केंद्रों में सभी 2027 जेनेरिक दवाईयां डब्ल्यूएचओ और जीएमपी सर्टिफाइड हैं और जिसका लाभ लोग उठा रहे हैं और सालाना यहां के रिकॉर्ड की बात की जाए तो यह आंकड़ा 2 करोड़ से साढ़े 7 करोड़ तक पहुंच चुका है।

प्रदेश में 450 जन औषधि केंद्र हैं और 14 अप्रैल को बाबा साहब डॉ. भीमराव अंबेडकर जी की जयंती पर ट्राइबल ब्लॉक में और 89 जन औषधि केंद्र खोलने का काम सरकार करेगी। लोग ज्यादा से ज्यादा जेनेरिक दवाईयों का उपयोग करें और लोगों में जागरूकता आए। इसके लिए प्रदेश के सांसद, विधायक और पार्टी के चिकित्सा प्रकोष्ठ के कार्यकर्ता डॉक्टरों से मिलकर जेनेरिक दवाइयां लिखने का आग्रह करेंगे। पूरे देश भर में जन औषधि केंद्रों पर जनप्रतिनिधि पहुंचकर जेनेरिक दवाइयों के प्रति लोगों को जागरूक करने का काम कर रहे हैं। ▪

प्रदेश सरकार सदैव किसानों के साथ है - डॉ. मोहन यादव

- **किसानों को अब पांच रुपये में मिलेगा बिजली का स्थाई कनेक्शन, 3 साल में देंगे 30 लाख सोलर पंप।**
- **किसानों द्वारा सौर ऊर्जा से उत्पादित बिजली नगद खरीदी जाएगी, जिला स्तर पर लगेंगे कृषि मेले।**
- **किसानों की आय बढ़ाने और उनका जीवन बेहतर बनाने के लिए हर संभव प्रयास जारी।**
- **प्रधानमंत्री श्री मोदी के किसानों के प्रति प्रेमभाव का प्रकटीकरण है उनकी कल्याणकारी योजनाएं।**

मध्य प्रदेश सरकार सदैव किसानों के साथ है और उनके हित में निरंतर कार्य कर रही है। मध्य प्रदेश सरकार 2 हजार 600 रुपये प्रति क्विंटल की दर से समर्थन मूल्य पर गेहूँ खरीद रहे हैं, इसमें 175 रुपये बोनस राशि है। वर्ष 2003-04 में प्रदेश में गेहूँ खरीदी का सरकारी दाम मात्र 447 रुपए था जो राज्य सरकार ने बढ़ा कर 2 हजार 600 प्रति क्विंटल किया है। सरकार वर्ष 2024 के लिये धान उपार्जन पर 4 हजार रुपये प्रति हेक्टेयर की प्रोत्साहन राशि प्रदान करने जा रही है। सोलर पंप के माध्यम से किसानों को स्थाई कनेक्शन भी दिए जाएंगे। हाल ही में अस्थाई कनेक्शन वाले डेढ़ लाख किसानों को स्थाई कनेक्शन दिलवाए गए हैं और इसकी राशि भी कम की गई है। तीन हॉर्स पॉवर वालों को सोलर पंप की 5 प्रतिशत राशि, 5 से 7.50 हॉर्स पॉवर के लिए 10 प्रतिशत राशि देना होगी।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में चल रही सरकार का किसानों के प्रति प्रेम है। प्रधानमंत्री श्री मोदी जी ने हर गरीब, जरूरतमंद के लिए मुफ्त अनाज की व्यवस्था की है। दो लाख करोड़ रुपए के व्यय से 100 करोड़ से अधिक लोगों को वर्ष 2028 तक अन्न देने की व्यवस्था की गई है। यह प्रधानमंत्री श्री मोदी के प्रत्येक गरीब का जीवन बेहतर बनाने के भाव का प्रकटीकरण और राम राज्य की अवधारणा को साकार करने का प्रयास है। प्रधानमंत्री श्री मोदी जी किसानों को उनका हक दिला रहे हैं। यह हमारी सरकार की उद्दात भावना है। सरकार धान के बदले में मूंगफली और प्राकृतिक फसलों को प्रोत्साहन दे रही है। सरकार का प्रयास है कि जैविक खेती से मध्यप्रदेश अपनी अलग पहचान स्थापित करे। जीआईएस भोपाल में किसानों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। प्रदेश में उत्पादित कपास से क्रांति आने वाली है। किसान परिवार के व्यक्ति

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में चल रही सरकार का किसानों के प्रति प्रेम है। प्रधानमंत्री श्री मोदी जी ने हर गरीब, जरूरतमंद के लिए मुफ्त अनाज की व्यवस्था की है।

दो लाख करोड़ रुपए के व्यय से 100 करोड़ से अधिक लोगों को वर्ष 2028 तक अन्न देने की व्यवस्था की गई है। यह प्रधानमंत्री श्री मोदी के प्रत्येक गरीब का जीवन बेहतर बनाने के भाव का प्रकटीकरण और राम राज्य की अवधारणा को साकार करने का प्रयास है।

को रोजगार देने वाली टेक्सटाइल मिलों को 5 हजार रुपये का बोनस दिया जाएगा। कृषि आधारित उद्योग लगाने के लिए राज्य सरकार प्रतिबद्ध है।

भोपाल सहित सभी बड़ी नगर निगमों में 10 हजार क्षमता की गौ-शालाएं बनाई जाएंगी।

प्रदेश की प्रति व्यक्ति आय बढ़ाने के लिए सभी प्रयास जारी हैं।

गेहूँ और धान पर दिए जा रहे प्रोत्साहन के समान ही दुग्ध उत्पादन पर भी प्रोत्साहन स्वरूप बोनस प्रदान किया जाएगा। दस से अधिक गाय पालने वालों को अनुदान दिया जाएगा।

गांव-गांव में गोपालन और दुग्ध उत्पादन को प्रोत्साहन देने के लिए अनुदान उपलब्ध कराया जाएगा। गौ-शाला चलाने वालों को प्रति गाय 20 रुपये के स्थान पर 40 रुपये का अनुदान देकर गौ-शालाओं को सक्षम बनाया जाएगा। गौ-माता परमात्मा की हम पर असीम कृपा है। गौ-माता प्रकृति और परमात्मा के बीच संबंध का सूत्र है। बेसहारा, अशक्त और वृद्ध गौ-माताओं के आश्रय के लिए भोपाल सहित सभी बड़ी नगर निगमों में 10 हजार क्षमता की गौ-शालाएं बनाई जाएगी।

आने वाले समय में उन्नत कृषि यंत्र, उन्नत बीज और कृषि व्यवस्था को बेहतर बनाने के लिए जिला स्तर पर कृषि मेले लगाए जाएंगे। वर्तमान समय की आवश्यकता के अनुसार वैश्विक स्तर पर उपलब्ध श्रेष्ठतम बीज किसानों को उपलब्ध कराए जाएंगे। प्रदेश में सिंचाई सुविधा के विस्तार के लिए प्रधानमंत्री श्री मोदी की पहल पर नदी जोड़ो अभियान के अंतर्गत एक लाख करोड़ की केन-बेतवा लिंक परियोजना और 70 हजार करोड़ से चंबल-काली सिंध-पार्वती लिंक परियोजना का क्रियान्वयन जारी है। इसी के साथ ही महाराष्ट्र के सहयोग से ताप्ती नदी पर तीसरी नदी जोड़ो परियोजना आरंभ होगी।

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने सर्वाधिक महत्व कृषकों को दिया है। कृषक अन्नदाता ही नहीं, अपितु जीवन दाता है। प्रधानमंत्री श्री मोदी जी और भारत रत्न श्रद्धेय अटल बिहारी वाजपेयी ने ग्रामीण भारत के विकास को गति प्रदान की। महात्मा गांधी कहते थे कि भारत को समझना है तो गांव को समझना होगा। भारत में विकास को गति देने के लिए किसानों के जीवन को समृद्ध और सशक्त बनाना होगा। प्रधानमंत्री श्री मोदी जी ने परिस्थितियों का ध्यान रखते हुए ही किसान, गरीब, महिला और युवा पर ध्यान केंद्रित किया है। यह किसानों की सरकार है। ▪

हर वादा पूरा करेंगे डॉ. मोहन यादव

▪ **कांग्रेस ने श्रीराम मंदिर के निर्माण में व्यवधान उत्पन्न कर सनातन विरोधी मानसिकता को दर्शाया।**

कांग्रेस ने भगवान श्री राम के मंदिर निर्माण में कई व्यवधान उत्पन्न किए। फिर वह मंदिर के प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम में भी शामिल नहीं हुई। कांग्रेस नेता महाकुंभ में डुबकी लगाने तो गए नहीं लेकिन इनके राष्ट्रीय अध्यक्ष महाकुंभ के लिए बेशर्मी पूर्ण बयानबाजी से भी पीछे नहीं हटे। यही कांग्रेस का असली एवं सनातन विरोधी चेहरा है।

साधु संतों सहित इतनी बड़ी संख्या में श्रद्धालु महाकुंभ में पहुंचे हैं। इनको किसी ने कोई प्रलोभन नहीं दिया बल्कि सभी आस्था के कारण महाकुंभ में पहुंचे थे। यह महाकुंभ की महत्ता को दर्शाता है। जिस प्रकार पॉट में रखे फूल जितने सुन्दर मनभावन लगते हैं वह उतने वास्तविकता में नहीं दिखते हैं, क्योंकि वह नकली है। यही स्थिति कांग्रेस की है। आईने में हम जैसे हैं, वैसे ही दिखते हैं, परंतु कांग्रेस को जब जनता आईना दिखाती है तो वह आईने को ही तोड़ने लग जाती है, इसलिए आज कांग्रेस की यह दुर्गति हुई है। कांग्रेस के 55 वर्ष के शासनकाल में बजट मात्र 20 हजार करोड़ का हुआ करता था, परंतु 2003 से जब से भारतीय जनता पार्टी की सरकार बनी है तब से 3.15 लाख करोड़ का बजट हो गया है। कांग्रेस के शासनकाल में मात्र पांच मेडिकल कॉलेज हुआ करते थे, जबकि भारतीय जनता पार्टी की सरकार में 30 मेडिकल कॉलेज प्रारंभ हैं।

हमने जनता से जो वादे किए थे, उन्हें एक-एक करके पूरा करना शुरू कर दिया है। इस वर्ष गेहूं खरीदी का भाव 2600 रु. प्रति क्विंटल इसका प्रमाण है। हम जो कहते हैं उसे पूरा करते हैं लेकिन यह कांग्रेस के नेता केवल चुनाव जीतने के उद्देश्य से बेशर्मी पूर्ण बयानबाजी कर झूठी बातें करते हैं। कांग्रेस ने किसानों से कहा था कि हमारी सरकार बनी तो किसानों का कर्ज माफ किया जाएगा। परंतु कमलनाथ सरकार में किसानों से लाल, पीले, नीले फार्म भरवा कर उनका अपमान किया। प्रदेश सरकार लगातार प्रतिमाह बहनों के खातों में 1250 रूपए दे रही है। जिससे बहनें आत्मनिर्भर हो रही है। कांग्रेस ने सत्ता में रहते कभी उद्योग धंधों की चर्चा नहीं की। न कभी इन्वेस्टर्स समिट का आयोजन किया। लेकिन हाल ही में संपन्न ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट में निवेश विभिन्न क्षेत्रों में प्राप्त हुआ और इसके अंतर्गत कई कार्यों का भूमिपूजन भी किया गया है।

किसानों की बेहतरी के लिए भाजपा सरकारें- विष्णुदत्त शर्मा

भाजपा की केंद्र और राज्य सरकारें किसानों की बेहतरी के लिए मिलकर प्रयास कर रही हैं। प्रधानमंत्री श्री मोदी की सरकार हर साल किसानों को 6000 रुपये किसान सम्मान निधि दे रही है,

तो मध्यप्रदेश की भाजपा सरकार भी इससे कदम मिलाते हुए किसानों को हर साल 6 हजार रुपये दे रही है। फसल बीमा के लिए भी बजट में प्रावधान किया गया है।

- **केंद्र सरकार का कृषि बजट अन्नदाता की समृद्धि का रोडमैप।**
- **मोदी सरकार के बजट में निहित हैं बापू, बाबा साहब अंबेडकर और पं. दीनदयाल जी की भावना।**

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में केन्द्रीय बजट में कृषि क्षेत्र के लिए जो बजट आवंटन किया गया है, वह अन्नदाता की समृद्धि का रोडमैप है। इसमें एक तरफ जहां महात्मा गांधी की ग्राम विकास की भावना दिखाई देती है, तो दूसरी तरफ बाबा साहेब अंबेडकर की दलितों-शोषितों को आगे बढ़ाने तथा पं. दीनदयाल उपाध्याय की अंत्योदय की भावना भी निहित है। विपक्षी दल की सरकारों ने 55 वर्षों तक देश पर शासन किया और ये गरीबी हटाने की बातें तो करते रहे, लेकिन गरीबी हटाने के लिए कोई कदम नहीं उठाए। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी की सरकार के प्रयासों से देश में 25 करोड़ लोग गरीबी रेखा से बाहर आए हैं

हम सभी जानते हैं कि देश की अर्थव्यवस्था कृषि पर आधारित है। देश में खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने, रोजगार प्रदान करने तथा देश के समग्र आर्थिक विकास में कृषि क्षेत्र की महत्वपूर्ण भूमिका है। कृषि भारत के सामाजिक-आर्थिक ताने-बाने के लिए महत्वपूर्ण है। इन तथ्यों को पहचानते हुए प्रधानमंत्री जी ने कृषि क्षेत्र के लिए बजट प्रावधान में उल्लेखनीय वृद्धि की है। जिन्होंने खेत नहीं देखे, गांव नहीं देखे और गरीबी नहीं देखी, वे कैसे गरीबों का दुख दर्द समझेंगे। लेकिन प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी एक गरीब मां के बेटे हैं और उन्होंने गरीबों की पीड़ा को महसूस भी किया है। इसलिए उन्होंने देश से गरीबी मिटाने का संकल्प लिया है और कृषि क्षेत्र के लिए बजट में किए गए प्रावधान उसी दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम हैं।

विपक्षी दल की सरकारों ने 55 वर्षों तक देश पर शासन किया। ये गरीबी हटाने की बातें तो करते रहे, लेकिन गरीबी हटाने के लिए कोई कदम नहीं उठाए। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी की सरकार के प्रयासों से देश में 25 करोड़ लोग गरीबी रेखा से बाहर आए है। किसानों और कृषि क्षेत्र के विकास के लिए भी मोदी सरकार लगातार प्रयास कर रही है। 2008 में इस क्षेत्र के लिए जो बजट 11,915. 22 करोड़ का था, वह वर्तमान बजट में 1,22,528.77 करोड़ हो गया है। एनडीए की सरकार ने फसलों की एमएसपी में 65 प्रतिशत की वृद्धि की है। सरकारी खरीदी में 30 प्रतिशत वृद्धि हमारी सरकार ने की है। वहीं, किसानों के लिए सब्सिडी में तीन गुना की वृद्धि प्रधानमंत्री श्री मोदी जी के नेतृत्व में इस बजट के माध्यम से हुई है। प्रधानमंत्री श्री मोदी जी के मन के भाव कुछ इस तरह हैं-

माना कि अंधेरा घना है,
पर दीया जलाना कहां मना है।

भाजपा की केंद्र और राज्य सरकारें किसानों की बेहतरी के लिए मिलकर प्रयास कर रही हैं। प्रधानमंत्री श्री मोदी की सरकार हर साल किसानों को 6000 रुपये किसान सम्मान निधि दे रही है, तो मध्यप्रदेश की भाजपा सरकार भी इससे कदम मिलाते हुए किसानों को हर साल 6 हजार रुपये दे रही है। फसल बीमा के लिए भी बजट में प्रावधान किया गया है। कृषि इन्फ्रास्ट्रक्चर के क्षेत्र में 87500 परियोजनाओं के लिए 52738 करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया है। प्रधानमंत्री जी ने दलहन मिशन की शुरुआत की है, जिससे बड़ी संख्या में मध्यप्रदेश के किसान लाभान्वित होंगे क्योंकि मध्यप्रदेश दलहन का प्रमुख उत्पादक राज्य है। उर्वरक सब्सिडी योजना में किसानों को सस्ते मूल्य पर यूरिया और डीएपी उपलब्ध कराया जा रहा है।

इस बजट में उन्नत बीज मिशन, नमो ड्रोन दीदी और राष्ट्रीय कृषि विकास परियोजना के माध्यम से महिलाओं, नौजवानों को भी अवसर देने का काम किया गया है। केंद्र और मध्यप्रदेश सरकारों के प्रयासों से मिलेट का उत्पादन बढ़ा है, खाद्यान्न उत्पादन में सुधार हुआ है, किसानों की आय बढ़ी है,ऋण सुविधाएं आसान हुई हैं और फसल बीमा पहले से बेहतर हुआ है। देश आज कृषि उत्पादन और वैश्विक निर्यात के क्षेत्र में तेजी से आगे बढ़ रहा है। ▪

जहाँ पूर्वांचल चल पड़ता है वहां देश आगे बढ़ता है

- ईमानदारी से अपने काम को करने की ताकत बिहार के लोगों में है
- बढ़ते हुए बिहार को लालू राज ने डूबता हुआ बिहार बना दिया था लेकिन एनडीए की सरकार में बिहार में न केवल कानून-व्यवस्था की स्थिति सुधरी बल्कि विकास को नया पंख भी मिला।
- बिहार में आगामी विधानसभा चुनाव में यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में जनता के आशीर्वाद से एनडीए भारी बहुमत से विजयी होगी तथा बिहार में विकास की गति और तेज होगी।
- लालू जी से लोग सड़क बनाने की बात करते थे तो कहते थे कि सड़क बन जाएगी तो पुलिस आजाएगी, ये बेवकूफी ठीक नहीं।
- जब 2005 में बिहार में एनडीए सरकार आई थी, तब बिहार में ग्रामीण सड़क का नेटवर्क केवल 384 किमी का था जबकि आज बिहार में 1 लाख 12 हजार किमी सड़क बन चुकी है।
- आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में बिहार में शिक्षा, स्वास्थ्य, इंफ्रास्ट्रक्चर सहित कई क्षेत्रों में विकास की एक नई कहानी लिखी जा रही है।
- बिहार की कला और संस्कृति भारतीय विरासत का अभिन्न अंग है और इसे वैश्विक स्तर पर पहचान दिलाने के लिए भाजपा सरकार हर संभव सहयोग कर रही है।
- इतिहास इस बात का गवाह है कि चाणक्य की भूमि बिहार रही है तो महात्मा गांधी और लोकनायक जयप्रकाश नारायण का आंदोलन भी बिहार की भूमि से ही शुरू हुआ है। विश्व को प्रजातंत्र की सीख भी बिहार की भूमि से मिली है।

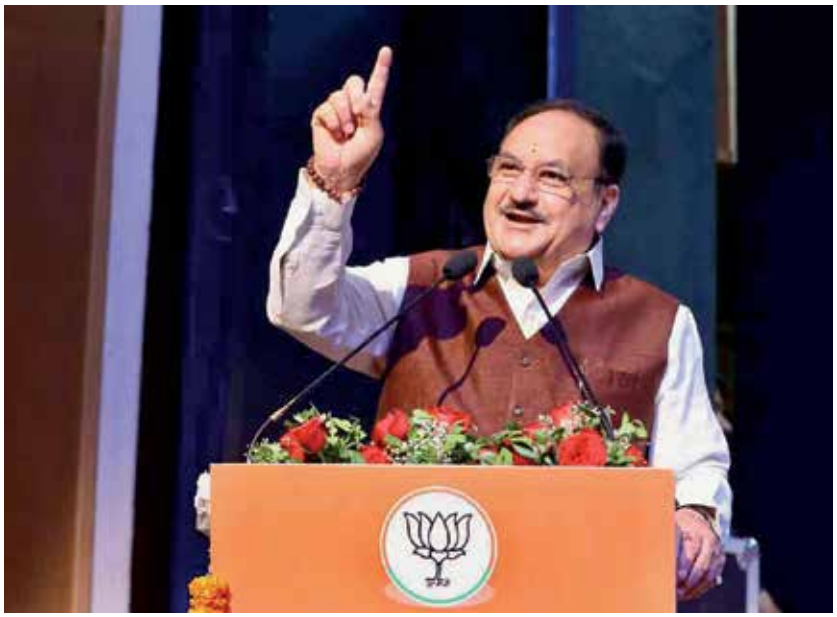

बिहार तेजस्विता और कर्मशीलता के साथ खड़ा होने की ताकत रखता है।

नालंदा और विक्रमशिला जैसे प्रसिद्ध विश्वविद्यालय बिहार की धरती पर विद्यमान थे और देश ही नहीं, बल्कि पूरी दुनिया से विद्यार्थी वहां विद्या ग्रहण करने आते थे।

- बिहार की कला और संस्कृति भारतीय विरासत का अभिन्न अंग है और इसे वैश्विक स्तर पर पहचान दिलाने के लिए भाजपा सरकार हर संभव सहयोग कर रही है।

जहाँ पूर्वांचल चल पड़ता है वहां देश आगे बढ़ता है। इतिहास इस बात का गवाह है कि विश्व को प्रजातंत्र की सीख भी बिहार की भूमि से मिली है। महात्मा गांधी ने देश की आजादी के लिए अपना पहला आंदोलन भी बिहार के चंपारण से ही शुरू किया था और जब लोकतंत्र पर कांग्रेस की सरकार में कुठाराघात हो रहा था, तब भी लोकनायक जयप्रकाश नारायण जी ने बिहार की धरती से ही शुरू किया था। इसलिए बिहार का एक विशेष महत्व है। विश्वभर के प्रजातंत्र का तंत्र बिहार की ही धरती से ही विकसित हुआ है। बिहार तेजस्विता और कर्मशीलता के साथ खड़ा होने की ताकत रखता है। नालंदा और विक्रमशिला जैसे प्रसिद्ध विश्वविद्यालय बिहार की धरती पर विद्यमान थे और देश ही नहीं, बल्कि पूरी दुनिया से विद्यार्थी वहां विद्या ग्रहण करने आते थे।

दुनिया के किसी भी कोने में जायें, हमें मैथिली, मगही या भोजपुरी बोलने वाले मिल जाएंगे। ईमानदारी से अपने काम को करने की

ताकत इसी बिहार की धरती के लोगों में हैं। आगे बढ़ते हुए बिहार को लालू राज ने डूबता हुआ बिहार बना दिया था। एक समय ऐसा आया था कि शाम 5 बजे के बाद लोगों का बाहर निकलना तक मुश्किल हो गया था लेकिन एनडीए की सरकार में बिहार ने विकास के नए आयाम छुए हैं। मेरा बचपन और किशोरावस्था बिहार में ही बीता है। अपने बचपन के दौरान मैंने गंगा किनारे गांधी सेतु को बनते हुए देखा है, निर्माण कार्य कई दशकों तक चलता रहा। आज बिहार में गंगा किनारे मरीन ड्राइव बन चुका है, इसके ऊपर से नया पुल बन चुका है। बिहार में सड़कों और रेल नेटवर्क का जाल बुना गया है।

जब 2005 में बिहार में एनडीए सरकार आई थी, तब बिहार में ग्रामीण सड़क का नेटवर्क केवल 384 किमी का था जबकि आज बिहार में 1 लाख 12 हजार किमी सड़क बन चुकी है। बिहार में कई एक्सप्रेस-वे बन चुके हैं। आदरणीय प्रधानमंत्री जी ने बिहार को आईआईटी पटना की सौगात दी है। जब बिहार में लालू यादव जी की सरकार थी और लालू जी से लोग सड़क बनाने की बात करते थे तो वे कहते थे कि सड़क बन जाएगी तो पुलिस आ जाएगी, ये बेवकूफी ठीक नहीं। कभी आपने सोचा था कि पूर्णिया, सारण, सीतामढ़ी, झंझारपुर, सीवान, बक्सर, जमुई जैसे शहरों में मेडिकल कॉलेज खुलेंगे? लेकिन आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में डबल इंजन की सरकार में बिहार में कई नए जिला अस्पताल बने और अब पटना में एशिया का सबसे बड़ा अस्पताल बनने वाला है।

हाल ही में दिल्ली विधानसभा के चुनाव हुए और दिल्ली की जनता ने प्रदेश में विकास को रोक कर रखने वाली सरकार को परास्त कर विकास के लिए समर्पित भारतीय जनता पार्टी की सरकार को चुना।

दिल्ली में हमारी सरकार आने से पहले 10 साल तक एक ऐसी सरकार चली जिस दौरान दिल्ली में अमावस्या का समय था। अंधेरे का माहौल था जिससे दिल्ली विकास के रास्ते पर नहीं, बल्कि विनाश की ओर जा रही थी। ऐसे में आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भाजपा ने दिल्ली को एक नई दिशा और उज्जवल भविष्य की ओर अग्रसर किया। आज हमारी सरकार दिल्ली में विकास कार्यों को एक नया आयाम दे रही है। बिहार में भी विधानसभा चुनाव होने वाले हैं। यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में एनडीए गठबंधन बिहार में भी जनता के आशीर्वाद से भारी बहुमत से विजयी होगी तथा वहां विकास की गति और तेज होगी। ▪

मोदी जी ने बिहार को आगे बढ़ाया - डॉ. मोहन यादव

- **नई करवट ले रहा है बिहार, वहां एनडीए की सरकार होना जरूरी।**
- **जो राम का नहीं वो किसी काम का नहीं, चुनाव में इन्हें सबक सिखाएं।**
- **पूर्व राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद के नाम पर भोपाल में बनेगा पार्क, लगेगी प्रतिमा।**

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में जब बिहार में एनडीए की सरकार बनी, तो उस सरकार ने वहां के ऐतिहासिक स्थलों, नालंदा जैसे विश्वविख्यात विश्वविद्यालय और धार्मिक-सांस्कृतिक महत्व के स्थलों का जीर्णोद्धार कराया। सड़कें और हाइवे बनाए, आईआईटी और आईआईएम जैसे शैक्षणिक संस्थान खोले और बिहार को विकास के रास्ते पर आगे बढ़ाया। आज बिहार नई करवट ले रहा है। ऐसे में देश में और बिहार में एनडीए की सरकार होना जरूरी है। बिहार के सपूत पूर्व राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद ने पं. जवाहरलाल नेहरू के मना करने के बावजूद सरदार वल्लभ भाई पटेल के आमंत्रण पर सोमनाथ मंदिर का उद्घाटन किया था। सनातन संस्कृति के संरक्षण में उनके इस योगदान को भुलाया नहीं जा सकता। डॉ. राजेंद्र प्रसाद की स्मृति में भोपाल में पार्क भी बनेगा और उनकी प्रतिमा भी स्थापित की जाएगी।

बिहार एक स्वतंत्र राज्य के रूप में भले ही 1912 में अस्तित्व में आया हो, लेकिन मध्यप्रदेश से उसके ऐतिहासिक संबंध रहे हैं। मौर्य काल में जब सम्राट पाटलिपुत्र में बैठते थे, तो भावी सम्राट अवंतिका में बैठकर शासन व्यवस्था संभालते थे। उस काल में सम्राट अशोक ने भी अपने जीवन के 10 वर्ष अवंतिका में बिताए थे। विधर्मियों ने जब राजा भोज के साम्राज्य पर आक्रमण किया, तो यहां के लोगों ने अपने धर्म और संस्कृति की रक्षा के लिए बिहार में ही शरण ली थी। हमें यह बताते हुए गर्व की अनुभूति होती है कि भोजपुरी बोली भी राजा भोज से संबंधित है। बिहार के क्षत्रियों में उज्जैनिया ठाकुर के नाम वाली भी एक शाखा है, जो उज्जैन से बिहार के घनिष्ठ संबंधों को प्रदर्शित करती है। बिहार देश का इकलौता राज्य है जिसका नाम वृंदावन बिहारी यानी भगवान कृष्ण के नाम पर है।

नरकासुर के वध के लिए भगवान कृष्ण द्वारका से बिहार होते हुए ही असम गए थे। भगवान राम और कृष्ण के नाम से ही हमारी संस्कृति चलती है, लेकिन कांग्रेस और उसके सहयोगी हमेशा भगवान राम और कृष्ण का रास्ता रोकते रहे हैं।

इन्हीं लोगों ने राम जन्मभूमि आंदोलन के दौरान आडवाणी जी की रथयात्रा को रोका था। आप सभी को यह याद रखना है कि जो राम का नहीं, वो किसी काम का नहीं। ▪

भोजपुरी समाज के लोगों के रग-रग में विश्वास और प्रतिबद्धता है- विष्णुदत्त शर्मा

- **बिहार ने धर्म व आध्यात्म से लेकर संस्कृति को अक्षुण्य बनाने का कार्य किया।**
- **दुनिया को सबसे पहले लोकतंत्र की शिक्षा देने वाला बिहार है।**
- **बिहार ने ही लोकतंत्र पर प्रहार करने वालों को सबक सिखाने का कार्य किया।**

लोकतंत्र की दुनिया को शिक्षा देने वाले बिहार ने लोकतंत्र को बचाने में प्रमुख भूमिका निभाई थी। कांग्रेस पार्टी ने जब देश में आपातकाल लगाकर लोकतंत्र पर प्रहार किया तो जयप्रकाश नारायण जी ने ही लोकतंत्र बचाने की अलख जगाई और उनके आह्वान पर ही देशभर में आंदोलन शुरू हुआ। जयप्रकाश नारायण जी के आंदोलन से निकली सोच को ही आगे बढ़ाते हुए प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी और केंद्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह जी देश की सेवा करने में जुटे हैं। बिहार के लोग देश के हर कोने में मिलेंगे और अपनी योग्यता व कर्मठता से देश व समाज की सेवा के लिए तत्पर रहते हैं। भोजपुरी समाज के लोग भोपाल सहित संपूर्ण मध्यप्रदेश के लिए भी बड़ी ताकत हैं। मध्यप्रदेश के गठन के बाद से आज तक देखा जाए तो भोपाल के अधिकांश कलेक्टर और एसपी बिहार और भोजपुरी समाज से ही रहे हैं।

बिहार का व्यक्ति जहां भी रहे, वह अपनी विश्वसनीयता, प्रतिबद्धता के लिए जाना जाता है। बिहार का व्यक्ति भोजपुरी समाज का व्यक्ति अपनी जान गवां सकता है, लेकिन किसी को धोखा नहीं दे सकता। लेकिन कुछ राजनीतिक दल ऐसे हैं, जो बिहार के लोगों को धोखा देने का कार्य किया है और अभी भी कर रहे हैं। मैं प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी और पार्टी अध्यक्ष श्री जगत प्रकाश नड्डा जी को धन्यवाद देता हूं कि उनके निर्देशन में 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' अभियान चलाया जा रहा है। भाजपा इस अभियान के तहत मध्यप्रदेश सहित देश के 25 राज्यों के 75 स्थानों पर बिहार दिवस मना रही है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी बिहार को एक विकसित, समृद्धशाली, खुशहाल और आदर्श राज्य बनाने के लिए कार्य कर रहे हैं। अभी भी बिहार में एनडीए की सरकार है। आने वाले कुछ महीनों बाद बिहार में विधानसभा के चुनाव होने वाले हैं। प्रधानमंत्री जी जिस प्रकार देश को आगे ले जाने का कार्य कर रहे हैं, उसी प्रकार बिहार भी कदम से कदम मिलाकर चलता रहे। सभी भोजपुरी समाज के लोग भाजपा का साथ दें। सभी के साथ मिलने पर ही भाजपा बिहार को स्वर्णिम राज्य बनाने का सपना साकार कर पाएगी। ▪

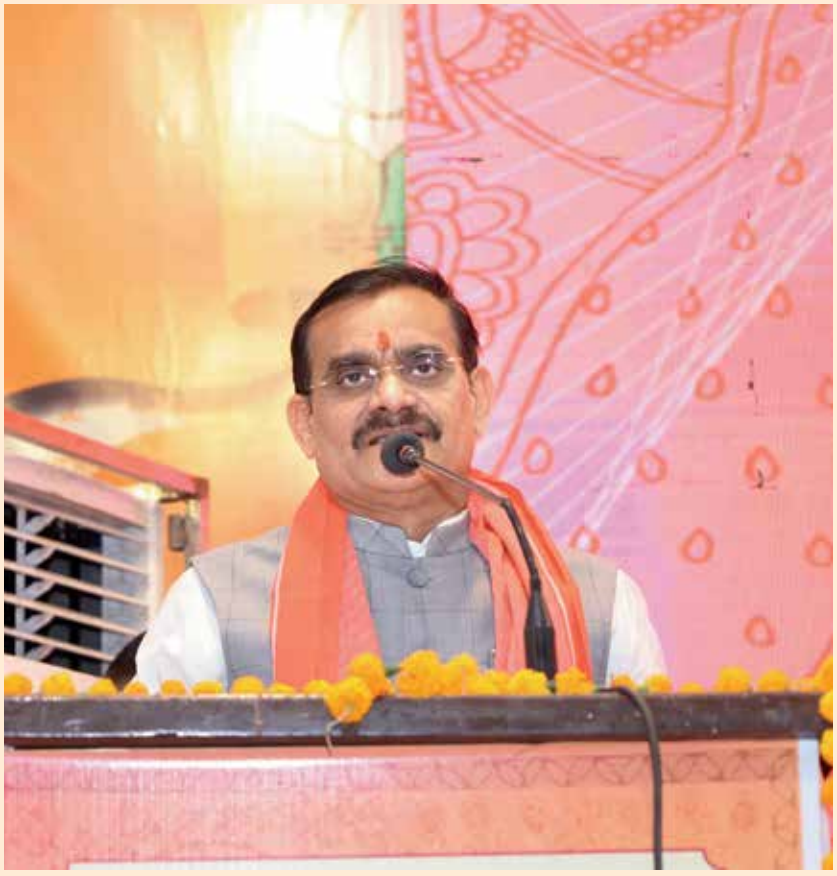

कांग्रेस पार्टी ने जब देश में आपातकाल लगाकर लोकतंत्र पर प्रहार किया तो जयप्रकाश नारायण जी ने ही लोकतंत्र बचाने की अलख जगाई और उनके आह्वान पर ही देशभर में आंदोलन शुरू हुआ।

जयप्रकाश नारायण जी के आंदोलन से निकली सोच को ही आगे बढ़ाते हुए प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी और केंद्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह जी देश की सेवा करने में जुटे हैं।

नव वर्ष - नव संकल्प

शिवप्रकाश

भारतीय स्वाभिमान के प्रतीक जीवन की समस्त विधाओं में भारत की अग्रगणीयता, आर्थिक समृद्धि, प्रकृति में वसंत अर्थात सम्यक परिवर्तन की दिशा का संदेश संपूर्ण मानवता को चैत्र शुक्ल प्रतिपदा देती आई है।

भारतीय समाज में व्यैक्तिक एवं सामूहिक जीवन में उत्थान के लिए नव वर्ष पर नव संकल्प लेने की परंपरा है।

भारतीय कालगणना के अनुसार चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को विक्रमी संवत 2082 प्रारंभ हो रहा है। आंग्ल तिथि के अनुसार 30 मार्च रविवार का यह दिन है। भारतीय स्वाभिमान के प्रतीक अनेक ऐतिहासिक प्रसंग चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के साथ जुड़ें है। पृथ्वी की उत्पत्ति के कारण पृथ्वी संवत, सृष्टि प्रारंभ दिवस के कारण सृष्टि संवत, श्रीराम जी का राज्याभिषेक, कलयुग संवत, युधिष्टिर संवत, विक्रम संवत (2082), शालिवाहनशकसंवत (1947), युगाब्द(5127), मालव संवत, गुडी पाडवा, आर्य समाज स्थापना, उगादि, गुरु अंगद देव का जन्म दिवस एवं झूलेलाल जी का अवतरण दिवस आदि सभी प्रेरणा दिवस इस शुभ दिन के साथ जुड़े है। शक्ति की उपासना के प्रतीक नवदुर्गा का प्रारंभ एवं राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संस्थापक डॉ. केशवराव बलिराम हेडगेवार का जन्म भी वर्ष प्रतिपदा ही है।

भारतीय स्वाभिमान के प्रतीक जीवन की समस्त विधाओं में भारत की अग्रगणीयता, आर्थिक समृद्धि, प्रकृति में वसंत अर्थात सम्यक परिवर्तन की दिशा का संदेश संपूर्ण मानवता को चैत्र शुक्ल प्रतिपदा देती आई है। भारतीय समाज में व्यैक्तिक एवं सामूहिक जीवन में उत्थान के लिए नव वर्ष पर नव संकल्प लेने की परंपरा है। इस विक्रम संवत के आगमन पर हम हर्ष एवं उल्लास के साथ नव वर्ष का स्वागत करें एवं भावी समाज को संरक्षित करने की दिशा में नवसंकल्प लें।

शारीरिक

''शरीरमाध्यम्खलु धर्म साधनम् (अर्थात धर्म के साधन का मार्ग स्वस्थ शरीर ही है) भारत में असावधानी के कारण हमारा खानपान स्थूल (मोटापा) शरीर का निर्माण कर रहा है। जिसके कारण अनेक रोग हमारे शरीर को अपना घर बना रहे हैं। दुनिया के देशों की तुलना में हमारे देश में गंभीर रोगों का औसत अधिक है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने देश को संबोधित करते हुए ''फिट इंडिया'' का संदेश दिया था। नव वर्ष पर यदि हम अपनी प्रतिदिन की दिनचर्या में संतुलित आहार, व्यायाम एवं योग को स्थान देंगे तब हमारा स्वास्थ्य अच्छा होगा। हमारा स्वास्थ्य ही राष्ट्र के स्वास्थ्य से जुड़ा है। इसको हम प्रतिदिन का संकल्प बनाएं।

पारिवारिक

भारतीय समाज के चिरंजीवी होने के अनेक कारणों में से महत्वपूर्ण है हमारी पारिवारिक व्यवस्था। संपूर्ण विश्व इस पारिवारिक व्यवस्था का अध्ययन एवं अनुपालन करने का प्रयास कर रहा है। परिवार के सभी सदस्यों में सामूहिकता, सुरक्षा, परस्पर प्रेम और आत्मीयता का अंकुरण होता है। परिवार टूटने के कारण ही दुनिया के देश अपने बजट का बड़ा भाग सामाजिक सुरक्षा पर खर्च कर रहे हैं। भारत में दुनिया की तुलना में यह न्यून है। हम अपने परिवार के वृद्धों को सम्मान एवं आत्मीयता दें। इसका परिणाम होगा कि नवीन पीढ़ी में भी यह संस्कार आएगा। परिवार के सदस्य सामूहिक भोजन, सामूहिक भजन एवं वर्ष में एक-दो बार विशेष प्रसंगो पर वृहद् परिवार मिलन कर पारिवारिक व्यवस्था को सुदृढ़ करने का संकल्प लें।

भाषा सीखे

विशाल भूभाग वाले अपने देश में अनेक भाषाओं एवं बोलियों का उपयोग होता है। सभी भाषाओं में एक अन्तर्निहित एकात्मता है। हम अपनी मातृभाषा के साथ-साथ एक और दूसरे प्रदेश की भाषा सीखने का प्रयास करें। जिसके कारण हम उस भाषा के साहित्य में छिपे तत्वज्ञान,महापुरुषों एवं परंपराओं को समझ सकेंगे, एवं राष्ट्र की एकात्मता वृद्धि में सहयोगी बन सकेंगे ।

नागरिक अनुशासन

देश के संविधान के प्रति आदर एवं श्रद्धा भाव, देश को सुचारू संचालित करने के लिए बनी व्यवस्थाओं का अनुपालन, देश की सम्पत्तियों का संरक्षण, नियमों का पालन, शुचिता पूर्ण कर्तव्य निष्ठ व्यवहार करने से देश में अनुशासन का भाव निर्माण होगा। यह

अनुशासन ही किसी भी देश की महानता की गारंटी है। अभावग्रस्त समाज के लोगों को शिक्षा, भोजन, कार्य कुशलता निर्माण कर सेवा के माध्यम से समृद्ध करें। अपने चारो तरफ होने वाली घटनाओं के प्रति सजग रहते हुए समाज में सुरक्षितता का वातावरण बनाएं। नए-नए प्रयोगों के द्वारा रोजगार प्रदान करते हुए भारत को आर्थिक समृद्ध कर, विकसित भारत के संकल्प की पूर्ति में सहायक होना हमारा संकल्प बने ।

संयमित एवं सादगी पूर्ण जीवन शैली

पंडित दीन दयाल उपाध्याय द्वारा स्थापित सिद्धांत ''खर्च में संयम एवं उत्पादन में वृद्धि हम सभी के लिए मार्गदर्शक है। आय से अधिक खर्च किसी भी समाज में भ्रष्टाचार को बढ़ावा देता है। समाज में एक दूसरे को देखकर अधिक खर्च की प्रवृत्ति भी बढ़ रही है। शादी-विवाह एवं शुभ प्रसंगों के समय बर्बाद होता भोजन यह राष्ट्र की संपत्ति का ही नुकसान है। यह दृष्टि लेकर व्यक्तिगत जीवन में सादगी एवं संयम पूर्ण व्यवहार से समाज को सम्यक दिशा दें। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने भी अन्न की बर्बादी के संबंध में सम्पूर्ण देश को सचेत किया था।''

महिला सशक्तिकरण

अपने प्राचीन धर्म ग्रंथो में माँ (स्त्री) का बड़ा श्रेष्ठ स्थान (यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः) था । कालांतर में समाज में अनेक कुप्रथाए आई। आज भी समाज में हृदय को विदीर्ण करने वाली अनेक घटनाएं होती रहती है। महिला हिंसा एवं दुर्व्यवहार को समाप्त करें। समाज में महिलाओं को समान स्थान, समान अवसर, निर्णयों में समान सहभागिता का वातावरण बनाने में हम सभी सहभागी बने।

पर्यावरण संरक्षण

महात्मा गाँधी जी का प्रसिद्ध वाक्य ''The Earth has enough resources for our need but not for our greed.'' भोगवादी जीवन शैली एवं प्रकृति के संसाधनों पर कब्जे की मनोवृति के कारण हमने पर्यावरण के साथ छेड़छाड़ की है। जिसका परिणाम है प्रदूषण एवं तापमान में वृद्धि। अनेक विद्वानों एवं पर्यावरण केंद्रित संस्थाओं के आकड़े हमें चिंतित करने वाले है। मनुष्य का जीवन भविष्य में सुरक्षित रहेगा अथवा नहीं यह सभी की चिंता का विषय है। हम इस नव वर्ष पर अपना जीवन पर्यावरण को संरक्षित करने वाला बनाएं, एवं जल, भोजन, वायु, वनस्पति सभी शुद्ध रहे इसका संकल्प लें। ▪

संस्कृति स्वाभिमान

हमारी संस्कृति त्यागमयी एवं सभी के कल्याण का विचार करने वाली है। इस कारण विश्व शांति की गारंटी भारतीय संस्कृति ही है। चैत्र शुक्ल प्रतिपदा हमको इस सांस्कृतिक गौरव का ही स्मरण कराती है। हम स्वयं एवं आने वाली पीढ़ी में अपने महापुरुषों, अपनी परंपराओं के प्रति यह गौरव के भाव को जागृत करने का संकल्प लें। चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के उत्सव को व्यक्तिगत के साथ-साथ समाज का उत्सव बनाते हुए, हम अपने व्यक्तिगत जीवन एवं समाज जीवन में यह संकल्प ले तब नव वर्ष की सार्थकता सिद्ध होगी। ▪

(लेखक भाजपा के राष्ट्रीय सह संगठन महामंत्री हैं।)

किसान हितैषी कामों को गांव-गांव पहुंचाए किसान मोर्चा - विष्णुदत्त शर्मा

- **गरीब, युवा, अन्नदाता और महिलाओं के उत्थान के लिए संकल्पित है भाजपा सरकार।**
- **प्रधानमंत्री श्री मोदी जी के सपनों को जमीन पर उतारने का काम कर रहे मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव।**

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने कहा है कि मेरी नजर में देश में सिर्फ चार जातियां हैं-गरीब, युवा, अन्नदाता और महिलाएं। हमें इनके उत्थान के लिए काम करना है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी की सरकार ने इन चारों जातियों के उत्थान के लिए कई कदम उठाए हैं। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी एवं मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने हाल ही में 44,605 करोड़ रुपये की लागत वाली केन-बेतवा लिंक परियोजना का शुभारंभ किया है, जिससे बुंदेलखंड के किसान भाईयों को सिंचाई के लिए भरपूर पानी मिलेगा और उनका जीवन बदल जाएगा। इसी तरह चंबल-काली सिंध और पार्वती नदियों को जोड़ने का काम भी राजस्थान सरकार के सहयोग से किया जा रहा है, जिससे बड़े क्षेत्र के किसानों को फसलों के लिए पानी उपलब्ध होगा। प्रधानमंत्री जी के सपनों को जमीन पर उतारने का काम मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव कर रहे हैं। मध्यप्रदेश में मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के प्रयासों से किसानों का गेहूं 2600 रुपये प्रति क्विंटल खरीदा जा रहा है। किसान हितैषी कदमों के लिए ही किसान मोर्चा मुख्यमंत्री जी का अभिनंदन कर रहा है।

सभी ने 2003 के पहले का दुरावस्था वाला मध्यप्रदेश देखा है। न सड़कें थीं और न बिजली और पानी मिलता था। आज किसानों को भरपूर बिजली और पानी मिल रहा है, क्योंकि भाजपा की केंद्र और राज्य सरकारें लगातार किसान के हित में निर्णय ले रही हैं, उन्हें सुविधाएं उपलब्ध करा रही हैं। किसान मोर्चा को झूठ, छल और कपट की राजनीति करने वाले कांग्रेसियों को जवाब देना है। गांव-गांव तक, हर किसान तक भाजपा की केंद्र और राज्य सरकारों के किसान हितैषी कामों को पहुंचाना है। बीते चुनावों में हमने किसान मोर्चा की ताकत को देखा है। 2023 के विधानसभा चुनाव में 163 सीटें और और 2024 के लोकसभा चुनाव में सभी 29 की 29 सीटें जीतने का कारनामा किसान मोर्चा की बदौलत संभव हुआ है। मोर्चा के कार्यकर्ताओं ने गांव-गांव और बूथ-बूथ पर जाकर जो मेहनत की, यह इसी का परिणाम है। प्रदेश के किसानों के बल पर ही मध्यप्रदेश लगातार कृषि कर्मण अवार्ड जीत रहा है। ▪

अपनी जड़ों से जुड़े रहें

गर्मी का मौसम शुरू होते ही शहर-शहर, गांव-गांव, पानी बचाने की तैयारियां भी शुरू हो जाती हैं।

अनेक राज्यों में water harvesting से जुड़े कामों ने, जल संरक्षण से जुड़े कामों ने नई तेजी पकड़ी है। जलशक्ति मंत्रालय और अलग-अलग स्वयंसेवी संस्थाएं इस दिशा में काम कर रही हैं।

- **आज से नववर्ष शुरू हो रहा है और अगले कुछ दिनों में यह हमारे देश के अलग-अलग राज्यों में मनाया जाएगा।**
- **अगर कोई संगठन, स्कूल या सामाजिक संस्था या विज्ञान केंद्र समर एक्टिविटीज का आयोजन कर रहा है, तो उसे #MyHolidays के साथ साझा करें।**
- **बच्चों और उनके अभिभावकों से भी आग्रह करें कि वे अपनी छुट्टियों के अनुभव#HolidayMemories के साथ साझा करें।**
- **पिछले 7-8 वर्षों के दौरान, नवनिर्मित टैंकों, तालाबों और अन्य वॉटर रिचार्ज स्ट्रक्चर्स के माध्यम से 11 बिलियन क्यूबिक मीटर से अधिक पानी संरक्षित किया गया है।**
- **टेक्सटाइल वेस्ट पूरी दुनिया के लिए चिंता का एक बड़ा कारण बन गया है।**
- **मुझे ख़ुशी है कि हमारे देश में टेक्सटाइल वेस्ट की चुनौती से निपटने के लिए कई सराहनीय प्रयास किए जा रहे हैं।**
- **अब योग दिवस के लिए 100 दिन से भी कम समय बचा है। अगर आपने अभी तक योग को अपने जीवन में शामिल नहीं किया है, तो अभी करें।**
- **मध्य प्रदेश के छिंदवाड़ा जिले के राजाखोह गांव की चार बहनों द्वारा महुआ के फूलों से बनाई जा रही कुकीज काफी लोकप्रिय हो रही हैं।**
- **एकता नगर के आरोग्य वन, एकता नर्सरी, विश्व वन और मियावाकी वन में कृष्ण कमल के फूल आकर्षण का केंद्र बन गए हैं।**

बहुत पावन दिन पर मुझे आपसे 'मन की बात' करने का अवसर मिला है। आज चैत्र माह के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा तिथि है। आज से चैत्र नवरात्र की शुरुआत हो रही है। आज से भारतीय नववर्ष का भी आरंभ हो रहा है। इस बार विक्रम संवत 2082 (दो हजार बयासी) शुरू हो रहा है। इस समय मेरे सामने आपकी ढेर सारी चिट्ठियां रखी हुई हैं। कोई बिहार से हैं, कोई बंगाल से, कोई तमिलनाडु से हैं, कोई गुजरात से हैं। इनमें बड़े रोचक तरीके से लोगों ने अपने मन की बातें लिखकर भेजी हैं। कई सारी चिट्ठियां में शुभकामनाएं भी हैं, बधाई संदेश भी हैं। लेकिन आज मेरा मन करता है, कुछ संदेशों को आपको सुनाऊं -

प्रधानमंत्री (कन्नड़ भाषा में)- सभी को उगादि उत्सव की शुभकामनाएं

अगला संदेश है -

प्रधानमंत्री (तेलुगु भाषा में)- सभी को उगादि उत्सव की शुभकामनाएं

अब एक और चिट्ठी में लिखा है-

प्रधानमंत्री (कोंकणी भाषा में)- संसार पाड़वा की शुभकामनाएं

अगले संदेश में लिखा गया है-

प्रधानमंत्री (मराठी भाषा में)- गुड़ी पाड़वा के अवसर पर हार्दिक शुभेच्छाएं

हमारे एक साथी ने लिखा है-

प्रधानमंत्री (मलयालम भाषा में)- सभी को विषु पर्व की शुभकामनाएं

एक और संदेश है-

प्रधानमंत्री (तमिल भाषा में- सभी को नववर्ष (पुथांडु) की शुभकामनाएं

आप ये तो समझ गए होंगे कि अगल-अलग भाषाओं में भेजे गए संदेश हैं। लेकिन क्या आप इसकी वजह जानते हैं? यही तो वो खास बात है, जो आज मुझे आपसे साझा करनी है। हमारे देश के अलग-अलग राज्यों में आज और अगले कुछ दिनों में नववर्ष शुरू हो रहे हैं। और ये सभी संदेश नववर्ष और विभिन्न पर्वों की बधाइयों के हैं। इसीलिए मुझे अलग-अलग भाषाओं में लोगों ने शुभकामनाएं भेजी हैं।

आज कर्नाटका में, आंध्र प्रदेश, तेलंगना में

उगादि का पर्व बहुत धूमधाम से मनाया जा रहा है। आज ही महाराष्ट्र में गुड़ी पड़वा मनाया जा रहा है। विविधता भरे हमारे देश में, अलग-अलग राज्यों में अगले कुछ दिन में असम में 'रोंगाली बिहू', बंगाल में 'पोइला बोइशाख', कश्मीर में 'नवरेह' का उत्सव मनाया जाएगा। इसी तरह, 13 से 15 अप्रैल के बीच देश के अलग-अलग हिस्सों में त्योहारों की जबरदस्त धूम दिखेगी। इसे लेकर भी उत्साह का माहौल है और ईद का त्योहार तो आ ही रहा है। यानी ये पूरा महीना त्योहारों का है, पर्वों का है। मैं देश के लोगों को इन त्योहारों की बहुत-बहुत बधाई देता हूं। हमारे ये त्योहार भले ही अलग-अलग क्षेत्रों में हो लेकिन ये दिखाते हैं कि भारत की विविधता में भी कैसे एकता पिरोई हुई है। इस एकता की भावना को हमें निरंतर मजबूत करते चलना है।

जब परीक्षाएं आती हैं, तो युवा साथियों के साथ मैं 'परीक्षा पे चर्चा' करता हूं । अब परीक्षाएं हो चुकी हैं। बहुत सारे स्कूलों में तो दोबारा class शुरू होने की तैयारी हो रही है। इसके बाद गर्मी की छुट्टियों का समय भी आने वाला है। साल के इस समय का बच्चों को बहुत इंतजार रहता है। मुझे तो अपने बचपन के दिन याद आ गए जब मैं और मेरे दोस्त दिनभर कुछ-ना-कुछ उत्पात मचाते रहते थे। लेकिन साथ ही हम कुछ constructive भी करते थे, सीखते भी थे। गर्मियों के दिन बड़े होते हैं, इसमें बच्चों के पास करने को बहुत कुछ होता है। यह समय किसी नई hobby को अपनाने के साथ ही अपने हुनर को और तराशने का भी है। आज बच्चों के लिए ऐसे platform की कमी नहीं, जहां वे काफी कुछ सीख सकते हैं। जैसे कोई संस्था technology camp चला रही हो, तो बच्चे वहाँ App बनाने के साथ ही open-source software के बारे में जान सकते हैं। अगर कहीं पर्यावरण की बात हो, theatre की बात हो, या leadership की बात हो, ऐसे भिन्न-भिन्न विषय के course होते रहते हैं, तो, उससे भी जुड़ सकते हैं। ऐसे कई स्कूल हैं जो speech या तो drama सिखाते हैं ये बच्चों को बहुत काम आते हैं। इन सबके अलावा आपके पास इन छुट्टियों में कई जगह चल रहे volunteer activities, सेवा कार्यों से भी जुड़ने का अवसर है। ऐसे कार्यक्रमों को लेकर मेरा एक विशेष आग्रह है। अगर कोई संगठन, कोई स्कूल या सामाजिक संस्थाएं, या तो फिर science centre ऐसी summer activities करवा रहे हों, तो इसे #MyHolidays के साथ जरूर **share** करें। इससे देश-भर के बच्चे और उनके माता-पिता को इनके बारे में आसानी से जानकारी मिल सकेगी।

मैं आपसे MY-Bharat के उस खास calendar की भी चर्चा करना चाहूंगा, जिसे इस summer vacation के लिए तैयार किया गया है। इस calendar की एक copy अभी मेरे सामने रखी हुई है। मैं इस calendar से कुछ अनूठे प्रयासों को साझा करना चाहता हूं। जैसे MY-Bharat के study tour में आप ये जान सकते हैं कि हमारे 'जन औषधि केंद्र' कैसे काम करते हैं। आप vibrant village अभियान का हिस्सा बनकर सीमावर्ती गाँवों में एक अनोखा अनुभव ले सकते हैं। इसके साथ ही वहाँ culture और sports activities का हिस्सा जरूर बन सकते हैं। वहीं अंबेडकर जयंती पर पदयात्रा में भागीदारी कर आप संविधान के मूल्यों को लेकर जागरूकता भी फैला सकते हैं। बच्चों और उनके माता-पिता से भी मेरा विशेष आग्रह है कि वे छुट्टियों के अनुभवों को #HolidayMemories के साथ जरूर साझा करे। मैं आपके अनुभवों को आगे आने वाली 'मन की बात' में शामिल करने का प्रयास करूंगा।

गर्मी का मौसम शुरू होते ही शहर-शहर, गांव-गांव, पानी बचाने की तैयारियां भी शुरू हो जाती हैं। अनेक राज्यों में water harvesting से जुड़े कामों ने, जल संरक्षण से जुड़े कामों ने नई तेजी पकड़ी है। जलशक्ति मंत्रालय और अलग-अलग स्वयंसेवी संस्थाएं इस दिशा में काम कर रही हैं। देश में हजारों कृत्रिम तालाब, check dam, borewell recharge, community soak pit का निर्माण हो रहा है। हर साल की तरह इस बार भी 'catch the rain' अभियान के लिए कमर कस ली गई है। ये अभियान भी सरकार का नहीं बल्कि समाज का है, जनता-जनार्दन का है। जल संरक्षण से ज्यादा-से-ज्यादा लोगों को जोड़ने के लिए जल संचय जन-भागीदारी अभियान भी चलाया जा रहा है। प्रयास यही है कि जो प्राकृतिक संसाधन हमें मिले हैं, उसे हमें अगली पीढ़ी तक सही सलामत पहुंचाना है।

बारिश की बूंदों को संरक्षित करके हम बहुत सारा पानी बर्बाद होने से बचा सकते हैं। पिछले कुछ सालों में इस अभियान के तहत देश के कई हिस्सों में जल संरक्षण के अभूतपूर्व कार्य हुए हैं। मैं आपको एक दिलचस्प आंकड़ा देता हूँ। पिछले 7-8 साल में नए बने tank, pond और अन्य water recharge structure से 11billion cubic meter उससे भी ज्यादा पानी का संरक्षण हुआ है। अब आप सोचेंगे कि 11 billion cubic meter पानी कितना पानी होता है?

भाखड़ा नांगल बांध में जो पानी जमा होता है, उसकी तस्वीरें तो आपने जरूर देखी होगी। ये पानी गोविंद सागर झील का निर्माण करता है। इस झील की लंबाई ही 90 किलोमीटर से ज्यादा है। इस झील में भी 9-10 billion cubic meter से ज्यादा पानी संरक्षित नहीं हो सकता है। सिर्फ 9-10 billion cubic meter! और देशवासियों ने अपने छोटे-छोटे प्रयास से, देश के अलग-अलग हिस्सों में 11 billion cubic meter 11 billion cubic meter पानी के संरक्षण का इंतजाम कर दिया है - है ना ये शानदार प्रयास!

इस दिशा में कर्नाटका के गडग जिले के लोगों ने भी मिसाल कायम की है। कुछ साल पहले यहाँ के दो गाँव की झीलें पूरी तरह सूख गईं। एक समय ऐसा भी आया जब वहाँ पशुओं के पीने के लिए भी पानी नहीं बचा। धीरे-धीरे झील घास-फूस और झाड़ियों से भर गई। लेकिन गाँव के कुछ लोगों ने झील को पुनर्जीवित करने का फैसला किया और काम में जुट गए। और कहते हैं ना, 'जहां चाह-वहाँ राह'। गाँव के लोगों के प्रयास देखकर आसपास की सामाजिक संस्थाएं भी उनसे जुड़ गईं। सब लोगों ने मिलकर कचरा और कीचड़ साफ किया और कुछ समय बाद झील वाली जगह बिल्कुल साफ हो गई। अब लोगों को इंतजार है बारिश के मौसम का। वाकई, ये 'catch the rain' अभियान का शानदार उदाहरण है।

आप भी सामुदायिक स्तर पर ऐसे प्रयासों से जुड़ सकते हैं। इस जन-आंदोलन को आगे बढ़ाने के लिए आप अभी से योजना जरूर बनाइये, और आपको एक और बात याद रखनी है - हो सके तो गर्मियों में अपने घर के आगे मटके में ठंडा जल जरूर रखिए। घर की छत पर या बरामदे में भी पक्षियों के लिए पानी रखिए। देखिएगा ये पुण्य कार्य करके आपको कितना अच्छा लगेगा।

'मन की बात' में अब बात हौसलों के उड़ान की! चुनौतियों के बावजूद जज्बा दिखाने की। कुछ ही दिन पहले सम्पन्न हुए Khelo India Para Games में एक बार फिर खिलाड़ियों ने अपनी लगन और प्रतिभा से सबको हैरान कर दिया। इस बार पहले से ज्यादा खिलाड़ियों ने इन खेलों में हिस्सा लिया। इससे पता चलता है कि Para Sports कितना Popular हो रहा है। मैं Khelo India Para Games में हिस्सा लेने वाले सभी खिलाड़ियों को उनके शानदार प्रयासों के लिए बधाई देता हूँ। हरियाणा, तमिलनाडु और यूपी के खिलाड़ियों को पहला, दूसरा और तीसरा स्थान हासिल करने के लिए शुभकामनाएं देता हूँ। इन खेलों के दौरान हमारे दिव्यांग खिलाड़ियों ने 18 राष्ट्रीय **Record** भी बनाए। जिनमें से 12 तो हमारी महिला खिलाड़ियों के नाम रहे। इस बार के Khelo India Para Games में Gold Medal जीतने वाले Arm Wrestler

जॉबी मैथ्यू ने मुझे चिट्ठी लिखी है। मैं उनके पत्र के कुछ हिस्से को पढ़कर सुनाना चाहता हूँ। उन्होंने लिखा है- ''Medal जीतना बहुत खास होता है, लेकिन हमारा संघर्ष सिर्फ Podium पर खड़े होने तक सीमित नहीं है। हम हर रोज एक लड़ाई लड़ते हैं। जीवन कई तरीके से हमारी परीक्षा लेता है, बहुत कम लोग हमारे संघर्ष को समझ पाते हैं। इसके बावजूद हम साहस के साथ आगे बढ़ते हैं। हम अपने सपनों को पूरा करने में जुटते हैं। हमें ये विश्वास रहता है कि हम किसी से कम नहीं हैं''।

वाह! जॉबी मैथ्यू आपने कमाल लिखा है, अदभुत लिखा है। इस पत्र के लिए मैं आपका आभार व्यक्त करता हूँ। मैं जॉबी मैथ्यू और हमारे सभी दिव्यांग साथियों से कहना चाहता हूँ कि आपके प्रयास हमारे लिए बहुत बड़ी प्रेरणा है।

दिल्ली में एक और भव्य आयोजन ने लोगों को बहुत प्रेरणा दी है, जोश से भर दिया है। एक Innovative Idea के रूप में पहली बार Fit India Carnival का आयोजन किया गया। इसमें अलग-अलग क्षेत्रों के करीब 25 हजार लोगों ने हिस्सा लिया। इन सभी का एक ही लक्ष्य था-Fit रहना और Fitness को लेकर जागरूकता फैलाना। इस आयोजन में शामिल लोगों को उनके स्वास्थ्य के साथ-साथ पोषण से जुड़ी जानकारियाँ भी मिलीं। मेरा आग्रह है कि आप अपने क्षेत्रों में भी इस तरह के Carnival का आयोजन करें। इस पहल में MY-Bharat आपके लिए बहुत मददगार बन सकता है।

हमारे स्वदेशी खेल अब Popular Culture के रूप में घुल-मिल रहे हैं। मशहूर Rapper Hanumankind (हनुमान काइन्ड) को तो आप सभी जानते ही होंगे। आजकल उनका नया Song ''Run It Up'' काफी Famous हो रहा है। इसमें कलारिपयट्टू, गतका और थांग-ता जैसी हमारी पारंपरिक Martial Arts को शामिल किया गया है। मैं Hanumankind (हनुमान काइन्ड) को बधाई देता हूँ कि उनके प्रयास से हमारी पारंपरिक Martial Arts के बारे में दुनिया के लोग जान पा रहे हैं।

हर महीने मुझे MyGov और NaMo App पर आपके ढेरों संदेश मिलते हैं। कई संदेश मेरे मन को छू लेते हैं, तो कुछ गर्व से भर देते हैं। कई बार तो इन संदेशों में हमारी संस्कृति और परंपराओं के बारे में अनोखी जानकारी मिलती है। इस बार जिस संदेश ने मेरा ध्यान खींचा, उसे मैं आपसे साझा करना चाहता हूँ। वाराणसी के अथर्व कपूर, मुंबई के आर्यश लीखा और अत्रेय मान ने मेरी हाल की Mauritius यात्रा पर अपनी भावनाएँ लिखकर भेजी हैं। उन्होंने लिखा है इस यात्रा के दौरान गीत गवई की Performance से उन्हें

बहुत आनंद आया। पूर्वी उत्तर प्रदेश और बिहार से आए बहुत सारे पत्रों में मुझे ऐसी ही भावुकता देखने को मिली है। Mauritius में गीत गवई की शानदार Performance के दौरान मैंने वहां जो महसूस किया वो वाकई अदभुत है।

जब हम जड़ से जुड़े रहते हैं तो कितना ही बड़ा तूफान आए - तूफान हमें उखाड़ नहीं पाता। आप कल्पना करिए, करीब 200 साल पहले भारत से कई लोग गिरमिटिया मजदूर के रूप में Mauritius गए थे। किसी को नहीं पता था कि आगे क्या होगा। लेकिन समय के साथ वे वहाँ रच-बस गए। Mauritius में उन्होंने अपनी एक बड़ी पहचान बनाई। उन्होंने अपनी विरासत को सहेज कर रखा और जड़ों से जुड़े रहे। Mauritius ऐसा अकेला उदाहरण नहीं है। पिछले साल जब मैं Guyana गया था तो वहाँ की चौताल Performance ने मुझे बहुत प्रभावित किया था।

अब मैं आपको एक audio सुनाता हूँ।

आप जरूर सोच रहे होंगे कि ये तो हमारे देश के किसी हिस्से की बात है। लेकिन आपको यह जानकर हैरानी होगी कि इसका संबंध फिजी से है। यह फिजी का बहुत ही लोकप्रिय 'फगवा चौताल' है। ये गीत और संगीत हर किसी में जोश भर देता है। मैं आपको एक और audio सुनाता हूँ।

यह audio सूरीनाम का 'चौताल' है। इस कार्यक्रम को टीवी पर देख रहे देशवासी, सूरीनाम के राष्ट्रपति और मेरे मित्र चान संतोखी जी को इसका आनंद लेते हुए देख सकते हैं। बैठक और गानों की यह परंपरा Trinidad and Tobago में भी खूब लोकप्रिय है। इन सभी देशों में लोग रामायण खूब पढ़ते हैं। यहाँ फगवा बहुत लोकप्रिय है और सभी भारतीय पर्व-त्योहार पूरे उत्साह के साथ मनाए जाते हैं। उनके कई गाने भोजपुरी, अवधि या मिश्रित भाषा में होते हैं, कभी-कभार ब्रज और मैथिली का भी उपयोग होता है। इन देशों में हमारी परंपराओं को सहेजने वाले सभी लोग सराहना के पात्र हैं।

दुनिया में ऐसे कई संगठन भी हैं, जो वर्षों से भारतीय संस्कृति को संरक्षित करने का कार्य कर रहे हैं। ऐसा ही एक संगठन है - 'Singapore Indian Fine Arts Society'। भारतीय नृत्य, संगीत और संस्कृति को संरक्षित करने में जुटे इस संगठन ने अपने गौरवशाली 75 साल पूरे किए हैं। इस अवसर से जुड़े कार्यक्रम में सिंगापुर के राष्ट्रपति श्रीमान थर्मन शनमुगरत्नम जी Guest of Honour थे। उन्होंने इस organization के प्रयासों की खूब सराहना की। मैं इस टीम को अपनी ढेर सारी शुभकामनाएँ देता हूँ।

'मन की बात' में हम देशवासियों की उपलब्धियों के साथ ही अक्सर सामाजिक विषयों को भी उठाते हैं। कई बार चुनौतियों पर भी चर्चा होती है। इस बार 'मन की बात' में, मैं, एक ऐसी चुनौती के बारे में बात करना चाहता हूँ, जो सीधे हम सब से जुड़ी हुई है। ये चुनौती है 'textile waste' की। आप सोच रहे होंगे, ये textile wast क्या नई बला आ खड़ी हुई है? दरअसल, textile wast पूरी दुनिया के लिए नई चिंता की एक बड़ी वजह बन गया है। आजकल दुनिया-भर में पुराने कपड़ों को जल्द-से-जल्द हटाकर नए कपड़े लेने का चलन बढ़ रहा है। क्या आपने सोचा है कि जो पुराने कपड़े आप पहनना छोड़ देते हैं, उनका क्या होता है? यही textile wast बन जाता है। इस विषय में बहुत सारी Global Research हो रही है। एक research में यह सामने आया है, सिर्फ एक प्रतिशत से भी कम textile waste को नए कपड़ों में recycle किया जाता है - एक प्रतिशत से भी कम! भारत दुनिया का तीसरा ऐसा देश है, जहां सबसे ज्यादा

textile waste निकलता है। यानि चुनौती हमारे सामने भी बहुत बड़ी है। लेकिन मुझे खुशी है कि हमारे देश में इस चुनौती से निपटने के लिए कई सराहनीय प्रयास किये जा रहे हैं। कई भारतीय start-ups ने textile recovery facilities पर काम शुरू किया है। कई ऐसी टीमें हैं, जो कचरा बीनने वाले हमारे भाई-बहनों के सशक्तिकरण के लिए भी काम कर रही हैं। कई युवा-साथी Sustainable Fashion के प्रयासों में जुड़े हैं। वे पुराने कपड़ों और जूते-चप्पलों को recycle कर जरूरतमंदों तक पहुंचाते हैं। Textile waste से सजावट की चीजें, handbag, stationery और खिलौने जैसी कई वस्तुएं बनाई जा रही हैं। कई संस्थाएं आजकल 'circular fashion brand' को popular बनाने में जुटी हैं। नए-नए rental platform भी खुल रहे हैं, जहां designer कपड़े किराए पर मिल जाते हैं। कुछ संस्थाएं पुराने कपड़े लेकर उसे दोबारा उपयोग करने लायक बनाती हैं और गरीबों तक पहुंचाती हैं।

Textile waste से निपटने में कुछ शहर भी अपनी नई पहचान बना रहे हैं। हरियाणा का पानीपत textile recycling के global hub के रूप में उभर रहा है। बेंगलुरू भी Innovative Tech Solutions से अपनी एक अलग पहचान बना रहा है। यहाँ आधे से ज्यादा Textile waste को जमा किया जाता है, जो हमारे दूसरे शहरों के लिए भी एक मिसाल है। इसी प्रकार तमिलनाडु का Tirupur Waste Water Treatment और renewable energy के माध्यम से textile waste management में जुटा हुआ है।

आज fitness के साथ-साथ count का बड़ा role हो गया है। एक दिन में कितने steps चले इसका count, एक दिन में कितनी calories खायी इसका count, कितनी calories burn की इसका count, इतने सारे counts के बीच, एक और countdown शुरू होने वाला है। International Yoga Day का countdown. योग दिवस में अब 100 दिन से भी कम समय रह गया है। अगर आपने अपने जीवन में अब तक योग को शामिल नहीं किया है तो अब जरूर कर लीजिए अभी देर नहीं हुई है। 10 साल पहले 21 जून 2015 को पहला अन्तरराष्ट्रीय योग दिवस मनाया गया था। अब तो इस दिन ने योग के एक विराट महोत्सव का रूप ले लिया है। मानवता को भारत की ओर से यह एक ऐसा अनमोल उपहार है, जो भविष्य की पीढ़ी के बहुत काम आने वाला है। साल 2025 के योग दिवस की theme रखी गई है, 'Yoga for One Earth One Health'. यानि हम योग के जरिए पूरे विश्व को स्वस्थ बनाने की कामना करते हैं।

यह हम सबके लिए गर्व करने वाली बात है कि आज हमारे योग और traditional medicine को लेकर पूरी दुनिया में जिज्ञासा बढ़ रही है। बड़ी संख्या में युवा योग और आयुर्वेद को wellness का एक बेहतरीन माध्यम मानकर इसे अपना रहे हैं। अब जैसे South America का देश Chile है। वहां आयुर्वेद तेजी से लोकप्रिय हो रहा है। पिछले साल मैं Brazil की यात्रा के दौरान Chile के राष्ट्रपति से मिला था। आयुर्वेद की इस popularity को लेकर हमारे बीच काफी चर्चा हुई थी। मुझे Somos India नाम की team के बारे में पता चला है। Spanish में इसका अर्थ है - We are India. यह टीम करीब एक दशक से योग और आयुर्वेद को बढ़ावा देने में जुटी है। उनका Focus treatment के साथ-साथ educational programmes पर भी है। वे आयुर्वेद और योग से संबंधित जानकारियों को Spanish language में translate भी करवा रहे हैं। सिर्फ पिछले वर्ष की बात करें, तो उनके अलग-अलग events और courses में करीब 9 हजार लोगों ने हिस्सा लिया था।

'मन की बात' में अब एक चटपटा सा, और अटपटा सा सवाल! आपने कभी फूलों की यात्रा के बारे में सोचा है! पेड़ पौधों से निकले कुछ फूलों की यात्रा मंदिरों तक होती है। कुछ फूल घर को सुंदर बनाते हैं, कुछ इत्र में घुलकर हर तरफ खुशबू फैलाते हैं। लेकिन आज मैं आपको फूलों की एक और यात्रा के बारे में बताऊंगा। आपने महुआ के फूलों के बारे में जरूर सुना होगा। हमारे गांवों और खासकर के आदिवासी समुदाय के लोग इसके महत्व के बारे में अच्छी तरह जानते हैं। देश के कई हिस्सों में महुआ के फूलों की यात्रा अब एक नए रास्ते पर निकल पड़ी है। मध्य प्रदेश के छिंदवाड़ा जिले में महुआ के फूल से cookies बनाए जा रहे हैं। राजाखोह गांव की चार बहनों के प्रयास से ये cookies बहुत लोकप्रिय हो रहे हैं। इन महिलाओं का जज्बा देखकर एक बड़ी company ने इन्हें factory में काम करने की training दी। इनसे प्रेरित होकर गांव की कई महिलायें इनके साथ जुड़ गई हैं। इनके बनाए महुआ cookies की मांग तेजी से बढ़ रही है। तेलंगाना के आदिलाबाद जिले में भी दो बहनों ने महुआ के फूलों से नया experiment किया है। वो इनसे तरह-तरह के पकवान बनाती हैं, जिन्हें लोग बहुत पसंद करते हैं। उनके पकवानों में आदिवासी संस्कृति की मिठास भी है।

मैं आपको एक और शानदार फूल के बारे में बताना चाहता हूं और इसका नाम है 'कृष्ण कमल'। क्या आप गुजरात के एकता नगर में Statue of Unity को देखने गए हैं? Statue of Unity के आसपास आपको ये कृष्ण कमल बड़ी संख्या में दिखेंगें। ये फूल पर्यटकों का मन मोह लेते हैं। ये कृष्ण कमल एकता नगर के आरोग्य वन, एकता नर्सरी, विश्व वन और Miyawaki forest में आकर्षण का केंद्र बन चुके हैं। यहां योजनाबद्ध तरीके से लाखों की संख्या में कृष्ण कमल के पौधे लगाए गए हैं। आप भी अपने आसपास देखेंगे तो आपको फूलों की दिलचस्प यात्राएं दिखेंगी। आप अपने क्षेत्र में फूलों की ऐसी अनोखी यात्रा के बारे में मुझे भी लिखिएगा।

आप मुझे हमेशा की तरह अपने विचार, अनुभव और जानकारियां साझा करते रहें, हो सकता है, आपके आसपास कुछ ऐसा हो रहा हो जो सामान्य लगे, लेकिन दूसरों के लिए वो विषय बहुत रोचक और नया होगा। अगले महीने हम फिर मिलेंगे और देशवासियों की उन बातों की चर्चा करेंगे जो हमें प्रेरणा से भर देती हैं। ▪

ब्रिटिश शासन के खात्मे की शुरुआत हुई जलियाँवाला बाग से

जलियाँवाला बाग अमृतसर के स्वर्ण मंदिर के पास का एक छोटा सा बगीचा है जहाँ 13 अप्रैल 1919 को ब्रिगेडियर जनरल रेजिनाल्ड एडवर्ड डायर के नेतृत्व में अंग्रेजी फौज ने गोलियां चला के निहत्थे, शांत बूढ़ों, महिलाओं और बच्चों सहित सैकड़ों लोगों को मार डाला था और हजारों लोगों को घायल कर दिया था। यदि किसी एक घटना ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम पर सबसे अधिक प्रभाव डाला था तो वह घटना यह जघन्य हत्याकाण्ड ही था। जलियाँवाला बाग अमृतसर के स्वर्ण मंदिर के पास ही स्थित है। बैसाखी के दिन 13 अप्रैल 1919 को अमृतसर के जलियाँवाला बाग में रोलेट एक्ट, अंग्रेजों की दमनकारी नीतियों व दो नेताओं सत्यपाल और सैफुद्दीन किचलू की गिरफ्तारी के विरोध में एक सभा रखी गई, जिसमें कुछ नेता भाषण देने वाले थे। शहर में कर्फ्यू लगा हुआ था, फिर भी इसमें सैंकड़ों लोग ऐसे भी थे, जो बैसाखी के मौके पर परिवार के साथ मेला देखने और शहर घूमने आए थे और सभा की खबर सुन कर वहां जा पहुंचे थे। करीब 5,000 लोग जलियाँवाला बाग में इकट्ठे थे। ब्रिटिश सरकार के कई अधिकारियों को यह 1857 के गदर की पुनरावृत्ति जैसी परिस्थिति लग रही थी जिसे न होने देने के लिए और कुचलने के लिए वो कुछ भी करने के लिए तैयार थे।

जब नेता बाग में पड़ी रोड़ियों के ढेर पर खड़े हो कर भाषण दे रहे थे, तभी ब्रिगेडियर जनरल रेजीनॉल्ड डायर 90 ब्रिटिश सैनिकों को लेकर वहां पहुँच गया। उन सब के हाथों में भरी हुई राइफलें थीं। सैनिकों ने बाग को घेर कर बिना कोई चेतावनी दिए निहत्थे लोगों पर गोलियाँ चलानी शुरु कर दीं। 10 मिनट में कुल 1650 राउंड गोलियां चलाई गईं। जलियाँवाला बाग उस समय मकानों के पीछे पड़ा एक खाली मैदान था। वहां तक जाने या बाहर निकलने के लिए केवल एक संकरा रास्ता था और चारों ओर मकान थे। भागने का कोई रास्ता नहीं था। कुछ लोग जान बचाने के लिए मैदान में मौजूद एकमात्र कुएं में कूद गए, पर देखते ही देखते वह कुआं भी लाशों से पट गया।

अमृतसर के डिप्टी कमिश्नर कार्यालय में 484 शहीदों की सूची है, जबकि जलियाँवाला बाग में कुल 388 शहीदों की सूची है। ब्रिटिश राज के अभिलेख इस घटना में 200 लोगों के घायल होने और 379 लोगों के शहीद होने की बात स्वीकार करते है जबकि अनाधिकारिक आँकड़ों के अनुसार 1000 से अधिक लोग मारे गए और 2000 से अधिक घायल हुए। इस घटना के प्रतिघात स्वरूप सरदार उधमसिंह ने 13 मार्च 1940 को उन्होंने लंदन के कैक्सटन हॉल में इस घटना के समय ब्रिटिश लेफ्टिनेण्ट गवर्नर मायकल ओ ड्वायर को गोली चला के मार डाला। उन्हें 31 जुलाई 1940 को फाँसी पर चढ़ा दिया गया। यदि किसी एक घटना ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम पर सबसे अधिक प्रभाव डाला था तो वह घटना यह जघन्य हत्याकाण्ड ही था। माना जाता है कि यह घटना ही भारत में ब्रिटिश शासन के अंत की शुरुआत बनी।

1997 में महारानी एलिजाबेथ ने इस स्मारक पर मृतकों को श्रद्धांजलि दी थी। 2013 में ब्रिटिश प्रधानमंत्री डेविड कैमरॉन भी इस स्मारक पर आए थे। विजिटर्स बुक में उन्होंनें लिखा कि 'ब्रिटिश इतिहास की यह एक शर्मनाक घटना थी।'

13 अप्रैल 1919 को बैसाखी का दिन था। बैसाखी वैसे तो पूरे भारत का एक प्रमुख त्यौहार है परंतु विशेषकर पंजाब और हरियाणा के किसान सर्दियों की रबी की फसल काट लेने के बाद नए साल की खुशियाँ मनाते हैं। इसी दिन, 13 अप्रैल 1699 को दसवें और अंतिम गुरु गोविंद सिंह ने खालसा पंथ की स्थापना की थी। इसीलिए बैसाखी पंजाब और आस-पास के प्रदेशों का सबसे बड़ा त्यौहार है और सिख इसे सामूहिक जन्मदिवस के रूप में मनाते हैं। अमृतसर में उस दिन एक मेला सैकड़ों साल से लगता चला आ रहा था जिसमें उस दिन भी हजारों लोग दूर-दूर से आए थे। आज भी जलियाँवाला बाग में शहीदों की आवाज गूंजित होती है कि - '**जलियाँवाला बाग है देखों, जहां चली थी गोलियां, मरने वाले बोल रहे थे इंकलाब की बोलियाँ।**'

अंग्रेजों की मंशा

प्रथम विश्व युद्ध (1914-1918) में भारतीय नेताओं और जनता ने खुल कर ब्रिटिशों का साथ दिया था। 13 लाख भारतीय सैनिक और सेवक यूरोप, अफ्रीका और मिडिल ईस्ट में ब्रिटिशों की तरफ से तैनात किए गए थे जिनमें से 43,000 भारतीय सैनिक युद्ध में शहीद हुए थे। युद्ध समाप्त होने पर भारतीय नेता और जनता ब्रिटिश सरकार से सहयोग और नरमी के रवैये की आशा कर रहे थे परंतु ब्रिटिश सरकार ने मॉण्टेगू-चेम्सफोर्ड सुधार लागू कर दिए जो इस भावना के विपरीत थे। लेकिन प्रथम विश्व युद्ध के दौरान पंजाब के क्षेत्र में ब्रिटिशों का विरोध कुछ अधिक बढ़ गया था जिसे भारत प्रतिरक्षा विधान (1915) लागू कर के कुचल दिया गया था। उसके बाद 1918 में एक ब्रिटिश जज सिडनी रॉलेट की अध्यक्षता में एक सेडीशन समिति नियुक्त की गई थी जिसकी जिम्मेदारी ये अध्ययन करना था कि भारत में, विशेषकर पंजाब और बंगाल में ब्रिटिशों का विरोध किन विदेशी शक्तियों की सहायता से हो रहा था।

इस समिति के सुझावों के अनुसार भारत प्रतिरक्षा विधान (1915) का विस्तार कर के भारत में रॉलट एक्ट लागू किया गया था, जो आजादी के लिए चल रहे आंदोलन पर रोक लगाने के लिए था, जिसके अंतर्गत ब्रिटिश सरकार को और अधिक अधिकार दिए गए थे जिससे वह प्रेस पर सेंसरशिप लगा सकती थी, नेताओं को बिना मुकदमें के जेल में रख सकती थी, लोगों को बिना वॉरण्ट के गिरफ्तार कर सकती थी, उन पर विशेष ट्रिब्यूनलों और बंद कमरों में बिना जवाबदेही दिए हुए मुकदमा चला सकती थी, आदि। इसके विरोध में पूरा भारत उठ खड़ा हुआ और देश भर में लोग गिरफ्तारियां दे रहे थे।

सामाजिक नवोत्थान के पुरोधा महात्मा ज्योतिबा फुले

महात्मा ज्योतिबा फुले (ज्योतिराव गोविंदराव फुले) को 19वीं सदी का प्रमुख समाज सेवक माना जाता है। उन्होंने भारतीय समाज में फैली अनेक कुरूतियों को दूर करने के लिए सतत् संघर्ष किया। अछूतोद्धार, नारी-शिक्षा, विधवा-विवाह और किसानों के हित के लिए ज्योतिबा ने उल्लेखनीय कार्य किया है। उनका जन्म 11 अप्रैल 1827 को सतारा महाराष्ट्र, में हुआ था। परिवार बेहद गरीब था और जीवनयापन के लिए बाग-बगीचों में माली का काम करता था। ज्योतिबा जब मात्र एक वर्ष के थे तभी उनकी माता का निधन हो गया था। ज्योतिबा का लालन-पालन सगुनाबाई नामक एक दाई ने किया। सगुनाबाई ने ही उन्हें माँ की ममता और दुलार दिया।

7 वर्ष की आयु में ज्योतिबा को गांव के स्कूल में पढ़ने भेजा गया। जातिगत भेद-भाव के कारण उन्हें विद्यालय छोड़ना पड़ा। स्कूल छोड़ने के बाद भी उनमे पढ़ने की ललक बनी रही। सगुनाबाई ने बालक ज्योतिबा को घर में ही पढ़ने में मदद की। घरेलू कार्यो के बाद जो समय बचता उसमे वह किताबें पढ़ते थे। ज्योतिबा पास-पड़ोस के बुजुर्गो से विभिन्न विषयों में चर्चा करते थे। लोग उनकी सूक्ष्म और तर्क संगत बातों से बहुत प्रभावित होते थे। अरबी-फारसी के विद्वान गफार बेग मुंशी एवं फादर लिजीट साहब ज्योतिबा के पड़ोसी थे। उन्होंने बालक ज्योतिबा की प्रतिभा एवं शिक्षा के प्रति रुचि देखकर उन्हें पुनः विद्यालय भेजने का प्रयास किया। ज्योतिबा फिर से स्कूल जाने लगे। वह स्कूल में सदा प्रथम आते रहे। धर्म पर टीका-टिप्पणी सुनने पर उनके अन्दर जिज्ञासा हुई कि हिन्दू धर्म में इतनी विषमता क्यों है? जातिभेद और वर्ण व्यवस्था क्या है? वह अपने मित्र सदाशिव बल्लाल गोंडवे के साथ समाज, धर्म और देश के बारे में चिंतन किया करते।

उन्हें इस प्रश्न का उत्तर नहीं सूझता कि इतना बड़ा देश गुलाम क्यों है? गुलामी से उन्हें नफरत होती थी। उन्होंने महसूस किया कि जातियों और पंथो पर बंटे इस देश का सुधार तभी संभव है जब लोगों की मानसिकता में सुधार होगा। उस समय समाज में वर्गभेद अपनी चरम सीमा पर था। स्त्री और दलित वर्ग की दशा अच्छी नहीं थी। उन्हें शिक्षा से वंचित रखा जाता था। ज्योतिबा को इस स्थिति पर बड़ा दुःख होता था। उन्होंने स्त्री एवं दलितों की शिक्षा के लिए सामाजिक संघर्ष का बीड़ा उठाया। उनका मानना था कि माताऐं जो संस्कार बच्चों पर डालती हैं, उसी में उन बच्चों के भविष्य के बीज होते है। इसलिए लड़कियों को शिक्षित करना आवश्यक है। उन्होंने निश्चय किया कि वह वंचित वर्ग की शिक्षा के लिए स्कूलों का प्रबंध करेंगे।

7 वर्ष की आयु में ज्योतिबा को गांव के स्कूल में पढ़ने भेजा गया। जातिगत भेद-भाव के कारण उन्हें विद्यालय छोड़ना पड़ा। स्कूल छोड़ने के बाद भी उनमे पढ़ने की ललक बनी रही।

उस समय जात-पात, ऊँच-नीच की दीवारें बहुत ऊँची थी। दलितों एवं स्त्रियों की शिक्षा के रास्ते बंद थे। ज्योतिबा इस व्यवस्था को तोड़ने हेतु दलितों और लड़कियों को अपने घर में पढ़ाते थे। वह बच्चों को छिपाकर लाते और वापस पहुंचाते थे। जैसे-जैसे उनके समर्थक बढ़े उन्होंने खुले आम स्कूल चलाना प्रारंभ कर दिया।

स्कूल प्रारंभ करने के बाद ज्योतिबा को अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। उनके विद्यालय में पढ़ाने को कोई तैयार न होता। कोई पढ़ाता भी तो सामाजिक दवाब में उसे जल्दी ही यह कार्य बंद करना पड़ता। इन स्कूलों में पढ़ायें कौन? यह एक गंभीर समस्या थी। ज्योतिबा ने इस समस्या के हल हेतु अपनी पत्नी सावित्री को पढ़ना सिखाया और फिर मिशनरीज के नार्मल स्कूल में प्रशिक्षण दिलाया। प्रशिक्षण के बाद वह भारत की प्रथम प्रशिक्षित महिला शिक्षिका बनीं। उनके इस कार्य से समाज के लोग कुपित हो उठे। जब सावित्री बाई स्कूल जाती तो लोग उनको तरह-तरह से अपमानित करते। परन्तु वह महिला अपमान का घूँट पीकर भी अपना कार्य करती रही। इस पर लोगों ने ज्योतिबा को समाज से बहिष्कृत करने की धमकी दी और उन्हें उनके पिता के घर से बाहर निकलवा दिया।

गृह त्याग के बाद पति-पत्नी को अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। परन्तु वह अपने लक्ष्य से डिगे नहीं। अँधेरी काली रात थी। बिजली चमक रही थी। महात्मा ज्योतिबा को घर लौटने में देर हो गई थी। वह सरपट घर की ओर बढ़े जा रहे थे। बिजली चमकी उन्होंने देखा आगे रास्ते में दो व्यक्ति हाथ में चमचमाती तलवारें लिए जा रहे है। वह अपनी चाल तेज कर उनके समीप पहुंचे। महात्मा ज्योतिबा ने उनसे उनका परिचय व इतनी रात में चलने का कारण जानना चाहा। उन्होने बताया हम ज्योतिबा को मारने जा रहे है। महात्मा ज्योतिबा ने कहा उन्हें मार कर तुम्हे क्या मिलेगा? उन्होंने कहा पैसा मिलेगा, हमें पैसे की आवश्यकता है। महात्मा ज्योतिबा ने क्षण भर सोचा फिर कहा मुझे मारो, मैं ही ज्योतिबा हूँ, मुझे मारने से अगर तुम्हारा हित होता है, तो मुझे खुशी होगी। इतना सुनते ही उनकी तलवारें हाथ से छूट गई। वह ज्योतिबा के चरणों में गिर पड़े, और उनके शिष्य बन गए।

महात्मा ज्योतिबा फुले ने 'सत्य शोधक समाज' नामक संगठन की स्थापना की। सत्य शोधक समाज उस समय के अन्य संगठनो से अपने सिद्धांतो व कार्यक्रमों के कारण भिन्न था। सत्य शोधक समाज पूरे महाराष्ट्र में शीघ्र ही फैल गया। सत्य शोधक समाज के लोगों ने जगह-जगह दलितों और लड़कियों की शिक्षा के लिए स्कूल खोले। छूआ-छूत का विरोध किया। किसानों के हितों की रक्षा के लिए आन्दोलन चलाया। महात्मा ज्योतिबा व उनके संगठन के संघर्ष के कारण सरकार ने 'एग्रीकल्चर एक्ट' पास किया। धर्म, समाज और परंपराओं के सत्य को सामने लाने हेतु उन्होंने अनेक पुस्तकें भी लिखी। 28 नंवबर सन् 1890 को उनका देहावसान हो गया। ▪

शिवाजी ने कहा मेरा नहीं धर्म का राज्याभिषेक है

19 फरवरी सन् 1630, नवीन मत 16 अप्रैल 1627 प्राचीन मत की कोख से ज्योति-श्लाका का प्रस्फुटन वह भाग्यशाली दिन, जिसने इतिहास के एक अद्वितीय व्यक्तित्व शिवाजी को इस धर्मभूमि पर अवतीर्ण किया- शून्य से सृष्टि का निर्माण करने वाले कर्तृत्व के सूत्रपात का पावन दिवस।

संसार के गुण-सम्पन्न अनेकानेक महापुरूषों की शिवाजी से तुलना की जा सकती हैः सेना संचालन की दृष्टि से सिकन्दर, सीजर, हानिबाल और नेपोलियन दारूण निराशा की घड़ियों में जनता का मनोधैर्य टिकाए रखने की क्षमता की दृष्टि से लिंकन और चर्चिल, प्रखर राष्ट्रभाव को जागृत और संगठित करने में मैजिनी, वाशिंगटन तथा बिस्मार्क, राष्ट्र-निर्माण-कार्य में आत्मविसर्जन की दृष्टि से कमालपाशा और लेनिन, आसक्ति रहित शासन करने मे मार्क्स आरेलियस तथा चार्ल्स पंचम। किन्तु सम्पूर्ण गुण समुच्चय की दृष्टि से शिवाजी की तुलना किससे करें? कल्याण के सूबेदार की लावण्यमयी पुत्रवधू को मातृवत् सम्मानित करने वाले छत्रपति के चरित्र की तुलना हम अन्य किस सत्ताधीश से करें?

माओ और चे-ग्वेबेरा से लगभग तीन सौ वर्ष पूर्व शिवाजी ने गुरिल्ला युद्धतंत्र का निर्माण किया। नेपोलियन और हिटलर के मास्को अभियान के अनुभवों के सैकड़ों वर्ष पहले, युद्ध के दौरान संभाव्य आपातकाल में आश्रय स्थान के नाते, सुदूर दक्षिण में उपयुक्त प्रदेश सम्पादित करने की दूरदर्शिता उन्होंने दिखायी। शास्त्र के नाते 'जिओपोलिटिक्स' का विकास होने के 250 वर्ष पूर्व उन्होंने सागरीय सत्ता का सूत्रपात प्रयास पूर्वक किया। इतिहास के जिस कालखण्ड में 'सेक्युलर' राज्य की कल्पना पश्चिम में लोकप्रिय नहीं थी, उस समय शिवाजी ने हिन्दू परम्परा के अनुकूल सम्प्रदाय निरपेक्ष धर्मराज्य की स्थापना की।

अपने कर्तृत्व से सम्पादित राज्य के प्रति पूर्ण अनासक्ति, आध्यात्म-प्रवण होने के कारण अर्जित राज्य छोड़कर संत तुकाराम के समक्ष हरि-संकीर्तन में ही शेष जीवन व्यतीत करने की इच्छा प्रकट करना। एक अन्य अवसर पर

माओ और चे-ग्वेबेरा से लगभग तीन सौ वर्ष पूर्व शिवाजी ने गुरिल्ला युद्धतंत्र का निर्माण किया। नेपोलियन और हिटलर के मास्को अभियान के अनुभवों के सैकड़ों वर्ष पहले, युद्ध के दौरान संभाव्य आपातकाल में आश्रय स्थान के नाते, सुदूर दक्षिण में उपयुक्त प्रदेश सम्पादित करने की दूरदर्शिता उन्होंने दिखायी।

शास्त्र के नाते 'जिओपोलिटिक्स' का विकास होने के 250 वर्ष पूर्व उन्होंने सागरीय सत्ता का सूत्रपात प्रयास पूर्वक किया।

तो उन्होंने अपना सम्पूर्ण राज्य ही समर्थ गुरू रामदास स्वामी के चरणों में समर्पित कर दिया था। 6 जून, 1674 के दिन सम्पन्न हुआ शिवाजी का राज्यारोहण किसी व्यक्ति का नहीं, धर्म का राज्यारोहण माना गया। हिन्दवी स्वराज्य की स्थापना, हिन्दू राष्ट्र के सफल प्रत्याक्रमण और हिन्दू संस्कृति के पुनरूत्थान, और विश्व-धर्म की पुनः प्रतिष्ठापना की घोषणा थी।

सनातन काल से हिन्दू राष्ट्र ने जिस आदर्श का संगोपन किया, वही आदर्श मानव रूप धारण कर सिंहासनारूढ़ हो रहा है, यही भावना जनमानस में उस समय थी। स्वयं शिवाजी ने भी समय-समय पर इसी धारणा का उद्घोष किया-

'हिन्दवी स्वराज्य स्थापन होना चाहिए, यह श्री भगवती की इच्छा है। राज्य धर्म का है, शिवबा का नहीं।'

यह तीन सौ साल पूर्व की घटना है। हिन्दुस्थान में चारों ओर पराये आक्रामकों का राज्य, साम्राज्य और धर्म पर आक्रमण, हिन्दुओं में आत्मविश्वास का अभाव, पराये आक्रामकों को हम परास्त कर नहीं सकते, इस तरह का मन का भाव और इन परिस्थितियों में एक बालक मन में निश्चय कि 'मैं पराये आक्रमण का मुकाबला करूंगा उनको पीछे हटाऊंगा, अपने स्वराज्य की स्थापना करूंगा,

धर्मराज्य की स्थापना करूंगा।' जबकि विरोध में बड़े राज्य और साम्राज्य, बड़ी-बड़ी सेनाएं और सेनापति, राज्य कार्य-धुरंधर लोग और अपार कोष था। उस बालक के पास कुछ नहीं, केवल पांच-पचास अपने समवयस्क लड़कों की लगन। इतनी ही साधन सम्पत्ति थी उसके पास, किन्तु निश्चय के आधार पर इस अवस्था में भी उसने 'रावण रथी बिरथ रघुबीरा' की नाई साधन सम्पन्न राज्यों, साम्राज्यों का मुकाबला करते हुए उनको परास्त करके धर्मराज्य की स्थापना की, जिसकी घोषणा ज्येष्ठ शुक्ल त्रयोदशी पर हुई। उसको कहा गया 'हिन्दू साम्राज्य दिनोत्सव'। आज की स्थिति में भी इस घटना को, वे ही सिद्धान्त, वे ही आदर्श, वे ही स्वप्न, वे ही लक्ष्य सामने रखकर काम करने वाले राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को समझना भी आवश्यक है।

किन्तु ऐसा दिखता है कि दोनों बातों में लोगों को काफी कठिनाई हो रही है। हमारी हालत यह है कि आदमी जितना अधिक अध्ययन करता है पराये लोगों और पराये सिद्धान्तों के बारे में उसकी उतनी ही अधिक जानकारी बढ़ती जाती है, किन्तु अपने बारे में उसकी जानकारी धीरे-धीरे कम होने लगती है। अपने आदर्श, अपने सिद्धान्त, अपनी व्यवस्था आदि के विषय में जानकारी रखने की इच्छा नहीं रखता और इसके कारण अपनी बात, अपनी कल्पना, अपनी रचना को समझ पाना हमारे भाइयों के लिए बहुत कठिन हो जाता है।

यह वर्तमान शिक्षा पद्धति और प्रचार का परिणाम है। उदाहरण के लिए यदि हमने हिन्दू साम्राज्य का नाम लिया तो लोगों के दिमाग में वह कल्पना नहीं आयेगी जो कल्पना हिन्दू साम्राज्य स्थापित करने वाले छत्रपति शिवाजी के मन में थी। हिन्दू होते हुए भी नये पढ़े-लिखे लोगों का पाश्चिमात्य कल्पनाओं से तो परिचय है किन्तु हिन्दू शब्द में निहित कल्पना से परिचय नहीं है। उनका अध्ययन हिन्दू नहीं, पाश्चिमात्य है। वे 'हिन्दू साम्राज्य' शब्द का अर्थ लगाएंगे, उसका अनुवाद करेंगे और कहेंगे साम्राज्य माने राज्य, वह साम्राज्यवाद है। गलत अर्थ, गलत भाषान्तर, गलत समकक्ष शब्द। केवल उधर की एक कल्पना, इधर की एक कल्पना, थोड़ा सा ऊपर से सादृश्य दिखाई दिया तो कहा कि वही बात है, कोई अन्तर नहीं है। वे यह सत्य जानने का प्रयास नहीं करते कि हिन्दुओं की प्राचीन संस्कृति, प्राचीन परम्परा और प्राचीन इतिहास है। आज के अति प्रगत राष्ट्र जिस समय वन्य अवस्था में थे, उस समय सुसभ्य और दुनिया का नेतृत्व करने वाला राष्ट्र हमारा ही रहा है। इसलिए इस तरह की अनेक कल्पनाएं, कई रचनाएं हमारे यहां हैं जो पश्चिम में देखने के लिए नहीं मिल सकती। उनका स्वतंत्र अध्ययन न करके कुछ इधर का, कुछ उधर का सादृश्य दिखाते हुए भाषान्तर कर दिया जाता है, और कहा जाता है कि साम्राज्यवाद खराब है और साम्राज्यवाद शब्द का प्रयोग गलत है। जैसे अब लोग मानने लगे है कि 'भई! धर्म माने रिलिजन नहीं, रिलिजन माने धर्म नहीं।' लेकिन अब तक वे कहते थे धर्म यानी रिलिजन है, 'रिलिजन यानी धर्म है। यह कहने वाले न रिलिजन को जानते है, न धर्म को।' इस प्राचीन और सनातन राष्ट्र की अपनी कुछ विशेषताएं हैं। यहां के हमारे विशेष शब्दों के लिए अंग्रेजी में कोई समकक्ष शब्द नहीं है। उनका अंग्रेजी पर्याय नहीं हो सकता, ठीक-ठीक भाषान्तर भी नहीं हो सकता। उन्हें अपने प्रकृत रूप में ही जाना जा सकता हैं। यह बात न समझते हुए पश्चिम में जो-जो चीजें है, वहीं चीज यहां भी होनी और दिखाई देनी चाहिए यह दुराग्रह रखते हुए यहां की बातों और विचारों पर वही दोषारोपण किया जाता है जो दोषारोपण पश्चिम की कल्पनाओं पर होता है।

सनातन काल से हिन्दू राष्ट्र ने जिस आदर्श का संगोपन किया, वही आदर्श मानव रूप धारण कर सिंहासनारूढ़ हो रहा है, यही भावना जनमानस में उस समय थी। स्वयं शिवाजी ने भी समय-समय पर इसी धारणा का उद्घोष किया-

'हिन्दवी स्वराज्य स्थापन होना चाहिए, यह श्री भगवती की इच्छा है। राज्य धर्म का है, शिवबा का नहीं।'

हिन्दू शब्द को यदि समझना है तो इसकी परम्परागत अर्थ-सम्पदा, अर्थच्छाया को समझना होगा। जिसके राज्यारोहण दिवस को हिन्दू साम्राज्य दिनोत्सव के रूप में मनाया जाता है, उस शिवाजी के बारे में क्या हम जानते नहीं कि प्रारम्भ में ही स्पष्ट रूप से उन्होंने कहा था कि 'यह व्यक्ति का नहीं, कुल का नहीं, जाति का नहीं, धर्म का राज्य है।' राज्य स्थापना का प्रयास उन्होंने सत्ता के मोह में नहीं किया। हिन्दू स्वराज्य का निर्माण उन्होंने धर्म के संस्थापक के एक साधन और माध्यम के रूप में किया था। यही कारण है कि हम देखते है कि शिवाजी ने अपने जीवन में तीन बार स्वकष्टार्जित, स्वपराक्रामार्जित सत्ता छोड़ दी थी। अपने गुरू रामदास को उन्होंने गुरूदक्षिणा के रूप में उनकी झोली में अपना स्वकष्टार्जित स्वराज्य समर्पित कर दिया था। जिसके मन में केवल राजनीतिक आकांक्षाएं होती हैं वह ऐसा नहीं कर सकता। जो यह मानता है कि यह मेरा नहीं धर्म का राज्य है, अर्थात् राजसत्ता अपने पास होते हुए भी सत्ता की पिपासा नहीं, सत्ता का मोह नहीं, और जो धर्म स्थापना के एक साधन के रूप में सत्ता सम्पादन की ओर देखता है वही आदमी यह कार्य कर सकता है। किन्तु इस हिन्दू पृष्ठभूमि, मनोवैज्ञानिक पृष्ठभूमि, वायुमण्डल की पृष्ठभूमि को न जानते हुए यदि पश्चिम के तौर-तरीकों के संदर्भ में अर्थ लगाए गए तो हिन्दू बातों को समझना बहुत मुश्किल होगा।

शिवाजी के ही संदर्भ में मैं केवल उदाहरण के लिए बताता हूं कि किस तरह हिन्दू अर्थच्छाया न समझने के कारण गलतफहमियां हो सकती है। कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ इण्डिया के नेता कामरेड डांगे का कहना है कि हिन्दुओं के हर एक शब्द का कुछ अर्थच्छाया (कनोटेशन) है। उस अर्थच्छाया को न समझने के कारण गड़बड़ होती है, उसे ठीक ढंग से समझा नहीं जा सकता। इसलिए जिन एक-दो कल्पनाओं के बारे में हमारे तथाकथित प्रगतिवादी, प्रोग्रेसिव लोग 'प्रोग्रेसिव' का मतलब, जिसको खुद के बारे में जानकारी नहीं, किन्तु दुनियां के बारे में जानकारी होती है, टीका करते थे। उसका उदाहरण डांगे ने दिया 'यह ठीक है कि अवतार भगवान का ही होता है।'

कई प्रगतिवादी लोगों ने इसका मखौल उड़ाना शुरू किया कि यह दकियानूसी विचार है कैसा अवतार? अवतार की बात गलत है। डांगे ने कहा, 'यह कहने वाले जानते ही नहीं कि अवतार शब्द की विशेष परम्परागत अर्थच्छाया क्या है? उन्होंने बताया कि जब समाज की सामाजिक-आर्थिक स्थिति में विकृतियां और दोष निर्माण होने के कारण समाज का पतन होने लगता है। उस समय जो महापुरूष सामने आकर उन विकृतियों और दोषों को दूर करके नई परिस्थिति के अनुकूल समाज की रचना करता है, उसे अवतार माना जाता है।' इसका मर्म न समझते हुए, स्वयं को एकमेव प्रगतिवादी और 'प्रगमनशील' बताने वाले लोग यदि कहते है कि अवतार वगैरह क्या है, यह सब पोंगापंथी है, तो ऐसे लोगों के अभिप्राय को हमें कोई महत्व नहीं देना चाहिए। उनको न तो परम्परागत शब्दों का अर्थ ज्ञात है, न उनको ज्ञान प्राप्त करने की इच्छा ही है। वे पूर्वाग्रह ग्रस्त लोग हैं। वे अपने अतिरिक्त शेष लोगों को बुद्धू समझते है। जिनके मन में इस तरह की एक सस्ती और एक लड़कपन की भावना है, हिन्दू कल्पनाओं के बारे में उनके विचारों को महत्व देना हम आवश्यक नहीं समझते। ▪

कट्टर देशभक्त डॉ. भीमराव अम्बेडकर

भारत शताब्दियों बाद स्वाधीन हुआ है। हम केवल 150 वर्ष गुलाम थे- पं. नेहरू की यह मान्यता उन्हें पूर्ण रूप से अस्वीकार थीं। अब इस स्वराज्य की रक्षा हमारा प्रथम कर्तव्य हैं।

अपने समाज में भी मानवीय स्वभावों की प्रक्रियानुसार कुछ लोगों ने स्वयं ही जन्मजात बड़प्पन धारण किया था। अतः वे पिछड़े, अविकसित, निर्धन लोगों को निम्न या छोटे समझना अपना अधिकार मानते थे। ऐसे पाखंडी तथाकथित समाज-धुरीणों की बाबासाहेब ने बहुत ही कड़े शब्दों में आलोचना की तथा उनके तर्कों का जोरदार खंडन किया। उनकी इस आलोचना का स्तर देखकर ही उनकी कट्टर देशभक्ति तथा विद्वता का परिचय मिलता है। इस दृष्टि से संविधान-सभा में 5 फरवरी 1950 को दिया गया उनका महत्वपूर्ण भाषण अध्ययन एवं मनन योग्य हैं। उसमें उन्होंने स्पष्ट रूप से व्यक्त किया था कि 'भारत शताब्दियों बाद स्वाधीन हुआ है। हम केवल 150 वर्ष गुलाम थे- पं. नेहरू की यह मान्यता उन्हें पूर्ण रूप से अस्वीकार थीं। अब इस स्वराज्य की रक्षा हमारा प्रथम कर्तव्य हैं।

अपने समाज में किसी प्रकार की फूट पुनः हमसे स्वराज्य को छीन लेगी। शताब्दियों की गुलामी के परिणामस्वरूप हममें कुछ विकृतियाँ, उच्च-नीच भेद, आर्थिक विषमता, पिछड़ापन, जातिवाद आदि उत्पन्न हुए हो सकते हैं, परन्तु इसे अपना हथियार बनाकर कोई विदेशी हमारे स्वत्वों का अपहरण करना चाहेंगे तो हम उसे सहन नहीं करेंगे। हम उनकी यह आकांक्षा मिट्टी में मिला देंगे। यह हमारा घरेलू मामला है, इसलिए हम इससे आपस में निबटेंगे। अपने लाभ मात्र या सामाजिक दृष्टि से अनवट स्थिति से निकलने की इच्छा से हम किसी विदेशी के हस्तक नहीं बनेंगे। हमें अपने में उत्पन्न होने वाले जयचंदों से सावधान रहना होगा। अपने जिस राष्ट्र एवं समाज के हम अंग-उपांग हैं, उसके हित को ठीक प्रकार से पहचानें।'

दो महापुरूष-दो दृष्टिकोण

पथभ्रष्ट अहंकारारूढ़ सवर्ण हिन्दू बंधुओं का हृदय-परिवर्तन करने का उन्होंने बहुत प्रयत्न किया। उन दिनों यही काम एक और भी महापुरूष अपने विशेष ढंग से कर रहे थे। वे थे पूज्य महात्मा गांधी। उनकी प्रामाणिकता, निष्ठा, असीम प्रयत्नशीलता तो उनके विरोधियों में भी शंका से परे थी। उन्होंने भी शब्द का नव मूल्यांकन करने के लिए स्वयं को भंगी बताना, उन्हीं के मुहल्ले-मकानों में ठहरना, खाना-पीना प्रारंभ किया।

समाज के नामसझ स्वयंभू नेताओं ने जिन्हें अस्पृश्य कहा था, महात्मा जी ने उन्हें हरिजन कहा। यद्यपि भड़काने वाले अनेक निहित स्वार्थी नेता विद्यमान थे, फिर भी इन दोनों महापुरूषों के प्रयत्नों के फलस्वरूप यह दलित-पीड़ित वर्ग विक्षुब्ध होते हुए भी अपनी सामाजिक, आर्थिक, उन्नति के लिए ही प्रयत्नशील रहा। साथ ही इन महापुरूषों के प्रयत्नों के परिणामस्वरूप ही अपना विवेक न खोते हुए उसने अत्याचार सहे, पर अपने हिन्दू समाज के प्रति आत्मीयता में कमी न आने दी। वैसे यह बात अलग है कि इन दोनों के विचार पूरी तरह आपस में न मिलते हों। डॉ. अम्बेडकर 'हरिजन' शब्द-प्रयोग के विरूद्ध थे। महात्मा जी की सदाशयता को स्वीकार करने के बाद भी वे अनुभव करते थे कि हरिजन नाम देने के लिए सवर्ण अपने को सदैव उपकारकर्ता ही मानते रहेंगे। अतः परस्पर भेद तथा उच्च-नीचता की बात तो बनी ही रही।

यह स्थिति अत्यंत अपमानजनक है, ऐसा वे मानते थे। अतः उन्हें इस हरिजन नामाभिधान से अत्यंत चिढ़ थी। महात्मा गांधी और डॉ. अम्बेडकर दोनों के प्रयत्नों का लक्ष्य समान होने पर भी भूमिका एवं प्रक्रिया (Approach) भिन्न थी। दोनों महान थे। परन्तु एक का प्रयास बाहर से था तो दूसरा स्वयं भुक्तभोगी होने के कारण स्वानुभव से उत्पन्न कसक से मर्माहत होकर प्रयत्नरत था। इतना होने पर भी श्रद्धेय बाबा साहेब प्रतिक्रिया की भावना से सर्वथा अलिप्त थे। महात्मा जी का प्रयास मानवीय भावना से प्रेरित था। जैसे अमेरिका में नीग्रो लोगों के उद्धार के लिए किये जाने वाले प्रयासों में लिंकन का स्थान था, उसी प्रकार भारत में अस्पृश्योद्धार के प्रयासों में महात्मा जी का था। परन्तु डॉ. अम्बेडकर का प्रयास बुकर टी वाशिंगटन, मार्टिन लूथरकिंग के समान था। महानता में समान होने पर भी दोनों की भूमिका में उनकी स्वयं की भिन्न स्थिति के कारण अंतर था-वैसे ही भारत में भी दोनों की भावनाओं को मिले शब्दों के रूप में भिन्नता होने पर भी उनकी अपने समाज के प्रति समान आत्मीयता थी। ▪

समाज और विचारधारा

जो तथाकथित समाजवादी विचारधाराएं हैं, उनमें सबसे बड़ी खराबी है कि व्यक्ति के स्वरूप का और समाज के स्वरूप का जो सही ज्ञान होना चाहिए, वह उनके पास नहीं।

इनमें भी लोग सब ताकत अपने हाथ में लेकर बाकी के समाज को सुख-सुविधाओं से वंचित रखते हैं।

पं. दीनदयाल उपाध्याय

यह तो स्पष्ट है कि समाजवाद के नाम से जो विषय चल रहा है तथा बहुत ही व्यापक और एक प्रकार से प्रभावी रूप से जिन कम्युनिस्ट देशों में इसका प्रसार होता दिख रहा है, उसमें व्यक्ति का और समाज का भी जैसा भला होना चाहिए, वैसा न होकर दूसरी ओर बुरा हाल है। यह बात अलग है कि देशों ने भौतिक दृष्टि से प्रगति कर ली होगी, लेकिन भौतिक प्रगति को समाजवादी पद्धति से जोड़ नहीं सकते। दुनिया के और भी देश हैं, जैसे अमरीका, उसने भी प्रगति की है। कुछ क्षेत्र ऐसे हैं, जिनमें अमरीका ने रूस से अधिक प्रगति की है। कुछ क्षेत्रों में रूस भी आगे निकल गया है। परंतु इन चीजों से विचारधारा के बारे में कोई निष्कर्ष निकालें तो वह गलत होगा। ये निष्कर्ष प्रचार की दृष्टि से निकाले जाते हैं।

पिछले दिनों एकाएक समाचार आया कि चीनी लोग एवरेस्ट पर चढ़ गए। कैसे चढ़ गए, इसका पता नहीं। वह पहले चढ़ रहे थे, इसकी भी खबर नहीं। फिर समाचार आया कि रात के एक बजे चढ़े। यह भी बताया गया कि उनकी यह विजय कम्युनिस्ट विचारधारा की विजय है। पर जानकार लोगों ने बताया कि इन समाचारों से ही पता लगता है कि ये गलत हैं। संभव भी हो तो विचारधारा के साथ तो इसको नहीं जोड़ा जा सकता। लेकिन लोग जोड़ते हैं। अभी अंतरिक्ष में यात्री को भेजा गया, फिर एक महिला को भेजा गया। उसके बारे में भी इसी प्रकार का विचार करते हैं। हमें वास्तविकता का गंभीरता से विचार करना चाहिए। इसके पीछे तर्क या वैज्ञानिक ढंग के साधन नहीं। ये आधुनिक ढंग की रूढ़ियां हैं। जैसे छींक आ गई और लाभ नहीं हुआ तो धारणा हो जाती है कि छींक आ जाने से ही काम बिगड़ा है। यद्यपि इसमें कोई कारण-कार्य संबंध जोड़ा नहीं जा सकता। अनेक बार ऐसे भी हुआ होगा, जब छींक आने पर भी काम हुआ होगा, परंतु उसको कौन ध्यान में रखता है। एक जगह समुद्र में एक मंदिर था। उसके पुजारी ने मंदिर में उन सज्जनों की सूची बनाकर टांगी हुई थी, जिनका समुद्र यात्रा से मंदिर दर्शनार्थ आने पर कुछ न बिगड़ा हो अर्थात् जो डूबे नहीं तथा सकुशल लौट आए थे। इसका मन पर प्रभाव पड़ता है। एक बार एक दार्शनिक ने पुजारी से पूछा, ''जो समुद्र यात्रा पर गए और डूब गए, उनका नाम नहीं लिखा। क्यों?'' वे नाम तो उसके पास नहीं थे। इस प्रकार कुछ को छिपा लिया जाता है और कुछ को प्रकट किया जाता है और फिर गलत तरीके से उनमें कारण-कर्म भाव ढूंढ़ लिया जाता है। वैसे ही आज भी बहुत सी चीजें होती हैं।

हिटलर पिछली बार रूस के खिलाफ लड़ा और रूस जीत गया। इससे पहले वह जापान से हार गया था। तो एकमेव कारण कि रूस में साम्यवाद के कारण यह विजय हुई, ऐसा बताया जाने लगा। परंतु यदि यही तर्क लगाया जाए तो इंग्लैंड और अमरीका में तो साम्यवाद नहीं था। वे कैसे जीत गए और अमरीका वाले कह सकते हैं कि पिछली लड़ाई में अमरीका के आने के बाद जो हिटलर लड़ा तो वह हारा। तो यह सब हुआ अमरीका के पूंजीवाद के कारण। वह यह कह सकता है, पर इसमें भी कोई बल नहीं।

इन चीजों को हटाकर देखें तो पता लगेगा कि जो तथाकथित समाजवादी विचारधाराएं हैं, उनमें सबसे बड़ी खराबी है कि व्यक्ति के स्वरूप का और समाज के स्वरूप का जो सही ज्ञान होना चाहिए, वह उनके पास नहीं। इनमें भी लोग सब ताकत अपने हाथ में लेकर बाकी के समाज को सुख-सुविधाओं से वंचित रखते हैं।

यह विचारधारा वहीं आकर खड़ी हो गई, जहां से इसने प्रारंभ किया था। व्यक्ति जितना गुलाम पूंजीवादी यूरोप में था, संभवतः उससे अधिक गुलाम समाजवादी व्यवस्था में आज है। जितनी विषमताएं पूंजीवादी यूरोप में थीं, उससे अधिक विषमताएं समाजवादी यूरोप में हैं। विषमताओं का मापदंड बदल लिया गया है, लेकिन उससे अधिक विषमताएं लाई गई हैं। विषमताओं का रूप बदल गया है। जैसे किसी को रुपया मासिक मिले और किसी को दस हजार रुपए तो यह कितनी बड़ी विषमता है। यह विषमता कम होनी चाहिए। लेकिन यदि कोई दस हजार रुपए को यह रूप दे कि वेतन मिलेगा दो हजार शेष की बाकी चीजें मुफ्त, जैसे मकान, यातायात व्यय आदि। ये सब सरकार उसे मुफ्त देगी। नतीजा यही होगा

समाज की एक सत्ता मानने के बाद समाज की शक्ति का अंकन इस प्रकार नहीं होगा। वह भिन्न वस्तु है। हम उसके एक अंग हैं, परंतु वैसे ही हैं जैसे शरीर का हाथ से संबंध होता है।

हम उसके एक अवयव हैं, परंतु हमारी एक स्वतंत्र सत्ता भी है। एक प्रकार के लोग तो यह मानते हैं कि समाज एक सत्ता है और मनुष्य एक पुर्जा मात्र है।

कि विषमता शायद और बढ़ जाएगी। जब अंग्रेज यहां थे तो उनके वायसराय के एक्जीक्यूटिव के जो मेंबर थे, उनको साढ़े तीन या चार हजार तनख्वाह मिलती थी। इनकम टैक्स देने के बाद बाईस सौ-तेईस सौ रुपया बचता था। नई सरकार ने तनख्वाह को कम कर दिया। तनख्वाह दो हजार सात सौ पचास रुपए कर दी, लेकिन इनकम टैक्स माफ कर दिया। यदि आप देखेंगे कि खुश्चेव पर कितना खर्च होता है तो अनुमान लगेगा कि उसकी तनख्वाह तो बढ़ी नहीं है। रूस में आज भी आय का अनुपात कुछ के कहने के अनुसार एक और दौ सौ है। एक और अस्सी तो स्वीकार किया ही जाएगा।

वे शोषण समाप्त करने की बात कहते हैं। लेकिन आर्थिक क्षेत्र में शोषण समाप्त हुआ मान लिया जाए तो भी राजनीतिक दृष्टि से शोषण प्रारंभ कर दिया है कि मार्क्स ने जो अपने सारे निष्कर्ष निकाले थे तो उसमें 'सरप्लस वैल्यू' का सिद्धांत रखा था। उस अर्थव्यवस्था का आधार था जहां मंडी में मूल्य मांग और पूर्ति के संतुलन में तय होता है। फिर वास्तविक मूल्य क्या है, विनियम मूल्य क्या है। वह कितनी मात्रा में सही है। इन सबके पचड़े में मैं नहीं पड़ता। लेकिन कम्युनिस्ट देशों में 'मार्केट इकोनॉमी' नाम की चीज है ही नहीं। यह 'सरप्लस वैल्यू' मजदूर के पास जाती है, यह सच नहीं। यह आज राज्य के पास पहुंच जाती है और फिर कुछ व्यक्तियों के पास जाती है। आरंभ में शक्ति सुविधाएं कुछ हाथों में केंद्रित थीं। झगड़ा यहीं से प्रारंभ हुआ था कि शक्ति सुविधा कुछ हाथों में नहीं रहनी चाहिए, परंतु शक्ति कुछ ही हाथों में केंद्रित रही और बाकी के लोगों में अंतर नहीं आया, बल्कि जिन देशों में कम्युनिस्ट पद्धति नहीं, वहां अवश्य कुछ अंतर आया है।

गलती यह है कि व्यक्ति और समाज का वास्तविक संबंध क्या है, स्वरूप क्या है, इसको लोग समझ नहीं पाए। समाज लोगों को मिलाकर बना है, यह गलत है। व्यक्तियों का समूह समाज नहीं, समाज की अपनी एक सत्ता है, जीवमान सत्ता है उतनी ही, जितनी एक प्राणी की होती है। प्राणी उसका अंग जरूर है लेकिन यह एक निर्जीव अंग जैसा नहीं, जैसे कि मोटर के पुर्जे होते हैं। यह वैसा ही है जैसा एक पूरा पेड़ होता है और उस पेड़ का एक पत्ता।

पत्तों को मिलाकर पेड़ नहीं बनता। कोई यह कहेगा क्या कि हाथ, पैर, नाक, कान मिलाकर व्यक्ति बन जाता है? पुर्जों को मिलाकर मोटर बनेगी, पर मनुष्य शरीर के लिए ऐसा नहीं। 19वीं सदी में यही लोग बोलते थे कि जैसी मशीन है, शरीर भी वैसा ही है, जरा जटिल है। परंतु मशीन तो पुर्जे मिलाने से तैयार हो जाती है, शरीर नहीं हो पाता। क्योंकि उसमें प्राण फूंकना जरा टेढ़ा काम है। अभी तक किसी विज्ञानवेत्ता ने इसमें सफलता नहीं पाई।

पंचतंत्र में एक कहानी है कि कुछ पढ़ने वालों में एक को प्राण फूंकने की विद्या आती थी। उसने रास्ते में हड्डियों को देखा तो जोड़-जोड़कर उसका ढांचा खड़ा कर दिया। वह व्याघ्र था। जब प्राण फूंकने लगा तो उसका दूसरा साथी जो व्यावहारिक था, उसे मना करने लगा कि यह जीवित हो जाएगा तो तुझे खा जाएगा। उसके न मानने पर साथी तो पेड़ पर चढ़ गया और इधर जैसे ही व्याघ्र में जान आई। उसने सबसे पहले इसी का शिकार किया। यह कहानी केवल इसलिए है कि विद्या के साथ व्यावहारिकता भी चाहिए। व्यावहारिकता ने उसकी जान बचा दी। लेकिन यह तो एक कहानी है। वस्तुतः कोई प्राण फूंक नहीं सकता।

यह तो सत्य है कि शरीर में एक प्राण है। वास्तव में तभी इसके अंग-प्रत्यंग शरीर के सुख-दुःख को अनुभव करते हैं और इसी नाते सब काम करते हैं। समाज भी एक प्राणवान चीज है। समाज में भी वह गुण है, जो व्यक्ति के अंदर है। मनोवैज्ञानिक तो इसको स्वीकार भी करने लगे हैं कि समाज का मस्तिष्क होता है, जिसे group mind नाम दिया गया है। क्योंकि व्यक्तिगत रूप से जो खून देखकर भी घबराएगा, वह भी राष्ट्र के लिए लड़ता है और फौरन उत्साह से लड़ने के लिए तैयार हो जाता है। जैसे व्यक्ति में भाव होते हैं, कर्म होते हैं, वैसे ही समाज की भावनाएं होती हैं, कर्म होते हैं। यह समाज के सभी व्यक्तियों के भावों या कर्मों का कुल जोड़ नहीं होता। इसके लिए गणित के अनुसार कैलकुलेशन का विचार नहीं किया जा सकता। यदि सबकी ताकत को जोड़ दिया जाए, जैसे राष्ट्रीय आय के लिए करते हैं कि प्रत्येक की आय का योग औसत निकाल लिया, वैसे समाज की शक्ति के लिए नहीं होगा।

समाज की एक सत्ता मानने के बाद समाज की शक्ति का अंकन इस प्रकार नहीं होगा। वह भिन्न वस्तु है। हम उसके एक अंग हैं, परंतु वैसे ही हैं जैसे शरीर का हाथ से संबंध होता है। हम उसके एक अवयव हैं, परंतु हमारी एक स्वतंत्र सत्ता भी है। एक प्रकार के लोग तो यह मानते हैं कि समाज एक सत्ता है और मनुष्य एक पुर्जा मात्र है। दूसरे मानते हैं कि व्यक्ति सत्ता है, समाज समूह मात्र है। दोनों गलत हैं। व्यक्ति की अपनी सत्ता है, समाज की भी उतनी ही प्राणवान सत्ता है। दोनों एक-दूसरे से संबंधित हैं। हाथ शरीर से संबंधित है, परंतु हाथ की अपनी विशेषता है। प्रत्येक जीवाणु की अपनी सत्ता है। वह शरीर की सत्ता से मिलकर काम करते हैं। ▪

▪ मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव एवं प्रदेश अध्यक्ष श्री विष्णुदत्त शर्मा जी ने भोपाल में कुशाभाऊ ठाकरे अंतरराष्ट्रीय कन्वेंशन सेंटर विस्तारीकरण का भूमिपूजन किया।

▪ मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव एवं प्रदेश अध्यक्ष श्री विष्णुदत्त शर्मा जी का प्रदेश के किसानों ने किसान आभार सम्मेलन में अभिनंदन किया।

▪ मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने इंदौर में वीर सावरकर जी की प्रतिमा का अनावरण किया।

▪ मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव, क्षेत्रीय संगठन महामंत्री श्री अजय जामवाल, प्रदेश अध्यक्ष श्री विष्णुदत्त शर्मा, प्रदेश प्रभारी डॉ. महेन्द्र सिंह एवं संगठन महामंत्री श्री हितानंद जी ने भाजपा विधायक दल की बैठक को संबोधित किया।

▪ प्रदेश अध्यक्ष श्री विष्णुदत्त शर्मा जी ने लोकसभा में मोदी सरकार द्वारा गरीबों को दिए जा रहे पक्के आवास का मुद्दा उठाया।

▪ मुख्यमंत्री डॉ.मोहन यादव ने उज्जैन में नव संवत्सर 2082 चैत्र शुक्ल वर्ष प्रतिपदा पर बाबा महाकालेश्वर के दर्शन किए।

▪ संगठन महामंत्री श्री हितानंद जी ने मंडला में श्रद्धेय अटल बिहारी वाजपेयी जी की जन्म शताब्दी वर्ष में आयोजित काव्यांजलि का शुभारंभ किया।

▪ मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने पांढुर्ना के ग्राम जामसांवली में चमत्कारिक हनुमान मंदिर में दर्शन कर पूजा अर्चना की।

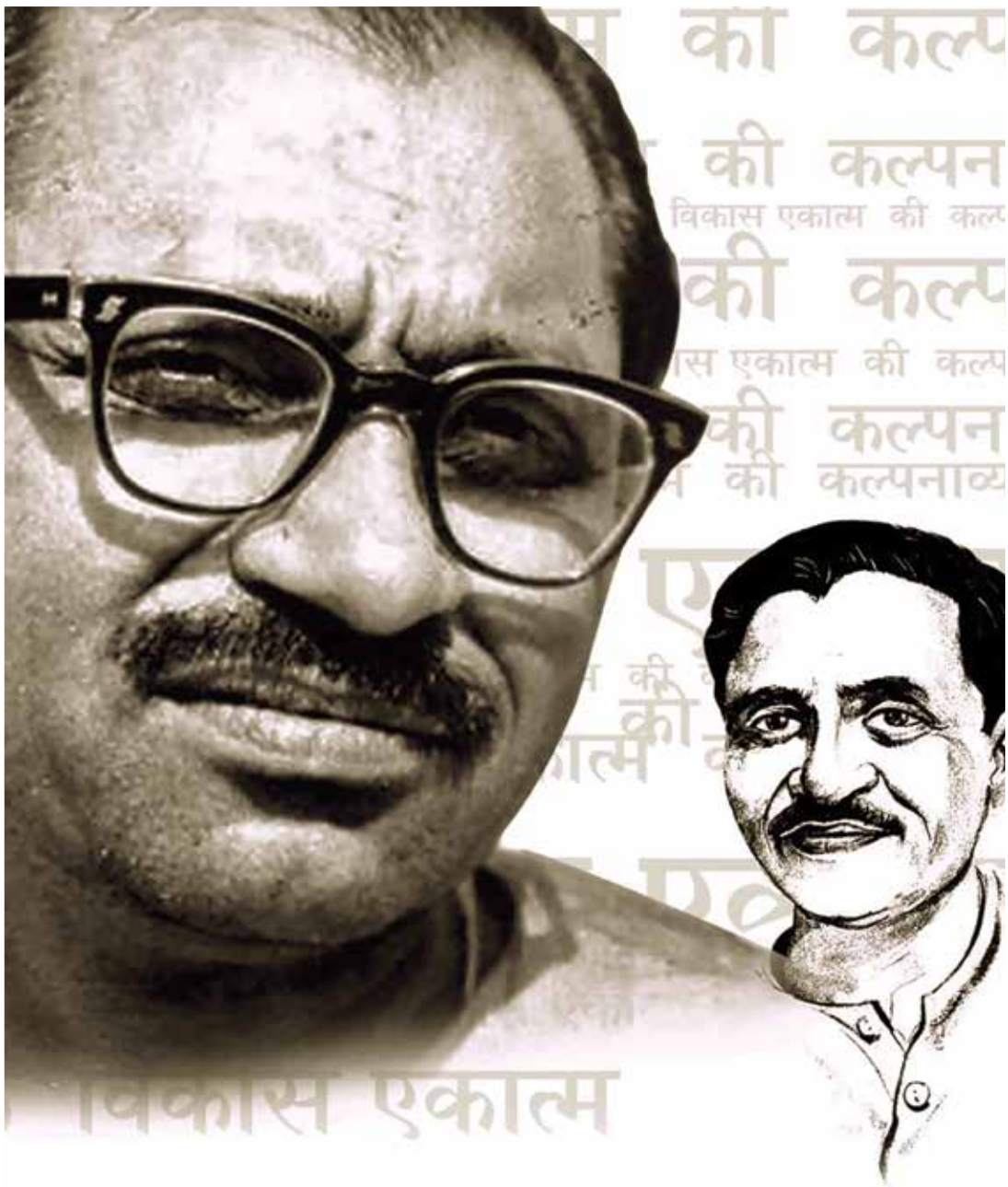

''मानव प्रकृति में दोनों प्रवृत्तियां रही हैं- एक तरफ क्रोध और लोभ तो दूसरी तरफ प्रेम और त्याग।''

पं. दीनदयाल उपाध्याय